।। ओ३म् ।। वर्ष-७ अंक-७

वैदिक संसार

मई - २०१८ मासिक-हिन्दी मूल्य - २५/-

५ जून विश्व पर्यावरण दिवस

वैदिक ज्ञान के अभाव में अज्ञानता से ग्रसित होने से जल+वायु, ध्वनि तथा सांस्कृतिक प्रदूषण की उत्पत्तिकर्ता मानव जाति जिससे सम्पूर्ण प्राणी जगत् त्राहिमान–त्राहिमान

स्वर्ग कामो यजेत
अर्थात्– स्वर्ग की कामना वाले लोग यज्ञ करें....

यज्ञो वै श्रेष्ठतं कर्मः– यज्ञ संसार का श्रेष्ठतम् कर्म है...

जीवेम शरदः शतम्- कु. वैदिका के जन्म दिवस पर अनन्त शुभकामनाएं...

वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गा शर्मा की सुपौत्री तथा नितिन शर्मा धर्मपत्नी श्रीमती प्रियंका शर्मा की सुपुत्री **कु. वैदिका की द्वितीय वर्षगांठ १३ मई २०१८** रविवार को **आर्य समाज दयानन्द गंज इन्दौर** के साप्ताहिक सत्संग में **आचार्या आकृति जी** के ब्रह्मत्व में सम्पन्न देवयज्ञ में माता-पिता (मुख्य यजमान) दादा-दादी, मामा-मामी तथा नानाजी ने शुभकामना तथा आशीर्वाद स्वरूप विशेष वेद मन्त्रों की आहूतियां प्रदान की। **आचार्य प्रभामित्र जी** का प्रवचन तथा आशीर्वचन हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज ब्यावर (राज.) के उप प्रधान **श्री किशनलाल जी शर्मा,** आर्य समाज राज चैनपुर(झारखण्ड) के संरक्षक **श्री जगदीश जी शर्मा,** वेद विद्या मन्दिर धरमपुरी के संयोजक **श्री मोहनलाल जी शर्मा,** समस्त परिवारजन, स्नेहीजन तथा आर्य समाज के पदाधिकारीगणी, सदस्यगण ने वृहद संख्या में उपस्थित होकर बालिका को अपना शुभाषीश प्रदान किया।

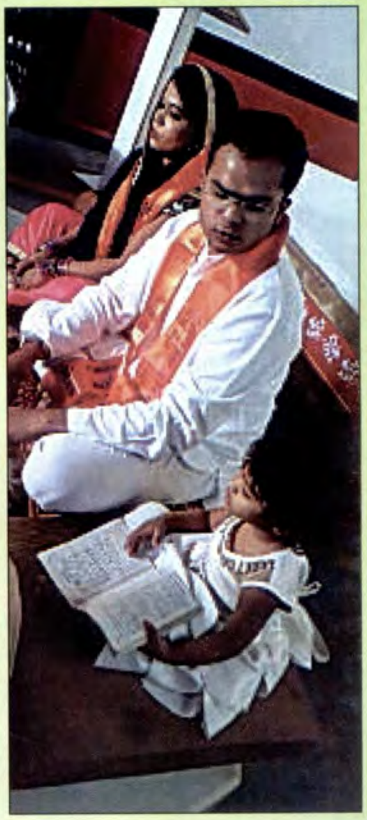

वैदिक संसार द्वारा सधन वेद प्रचार अभियान-बड़वानी में आयोजित कार्यक्रम के दृश्य

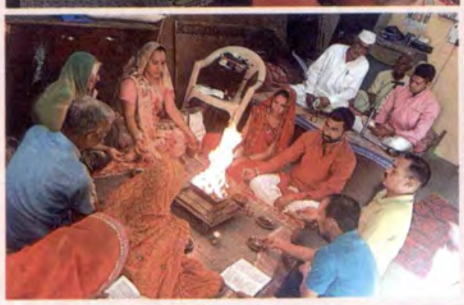

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आरएनआई-एमपीएचआईएन २०१२/४५०६९
डाक पंजीयन-एमपी/आईसीडी/१४०५/२०१५-१७
वर्ष-७, अंक-७
अंवधि-मासिक, भाषा-हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ मई, २०१८
आर्ष तिथि- ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी
सृष्टि संवत्-१,९७,२९,४९, ११९
शक संवत्- १९३९
विक्रम संवत्- २०७५, दयानन्दाब्द-१९४

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इन्दौर- ०९४२५०६९४९१
(सायं ६ बजे से प्रातः ८ बजे तक मौन काल)

सम्पादक
गजेश शास्त्री, इंदौर (म.प्र.)

आवरण एवं शब्द संयोजन
लक्ष्य ग्राफिक्स - ९३०१४३३२११

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

संरक्षक (१५ वर्ष)	२५०००/-
आजीवन सहयोग (१५ वर्ष)	२१००/-
त्रैवार्षिक सहयोग	६००/-
वार्षिक सहयोग	२५०/-
एक प्रति	२५/-

अन्य सहयोग-स्वैच्छानुसार
बैंक खाता धारक - वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इन्दौर
चालू खाता क्र. ३२८५९५९२४७९
आईएफएसएस कोड-एसबीआईएन-०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज-वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ.क्र.
वेद मन्त्र-भावार्थ	वैदिक संसार	०४
महत्वपूर्ण पर्व, दिवस एवं जयन्ति-पुण्यतिथि	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०४
वैदिक संसार के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
ना तो देर है, ना अन्धेर है, सब कर्मों का फेर है	सम्पादकीय	०५
आर्ष बोध-भाग १	सत्य सनातन प्रबोधक मण्डल	०५
परमात्मा कभी धरती पर अवतरित नहीं होते	आ.रामगोपाल सैनी	०५
भोग रहा नर्क अब, पापी आसाराम	पं. नन्दलाल निर्भय	०७
चाल धर्म की नैया की	आर्य पी.एस. यादव	०८
कज्जल दर्पण-उज्जवल दृश्य	देवनारायण भारद्वाज	०९
मनुष्य की नासमझी या भूल	आर्य मोहनाल दशोरा	११
जानें! ईश्वर को और बढ़ायें ईश्वर से निकटता	पं. उम्मेदसिंह विशारद	११
'वेदों की ओर लौटो'-ऋग्वेद ज्ञानागार के कुछ...	पं. सत्यपाल शर्मार्य	१३
आध्यात्मिक जिज्ञासा-समाधान	आ. सोमदेव आर्य	१५
श्रावणी पर्व की सार्थकता	महात्मा चैतन्यमुनि	१६
संन्यासी	स्वामी सौम्यानन्द सरस्वती	१९
मैं मानवता का पाठ पढ़ाऊंगा	डॉ. रवीन्द्रकुमार शास्त्री 'सोम'	१९
अथ मनु महिमा	रमेशचन्द्र चौहान	२०
प्रेरणास्पद व्यक्तित्व- श्री आर.सी. आर्य,...	सुखदेव शर्मा	२१
दक्षिणा-क्या,कब, क्यों, कैसे, कितनी और...	पं. भद्रपाल आर्य	२२
ओजोन मण्डल और पृथिवी पर्यावरण	शिवनारायण उपाध्याय	२३
जानें! अजवाइन, काली मिर्च, जीरा, धनिया...	दिलीप आर्य	२५
पोदीना	हरिशचन्द्र आर्य	२५
आर्य संस्कृति के प्रबल प्रचारक-लाला रामजस..	डॉ. विवेक आर्य	२६
सुख पाने का प्रयासः असफल क्यों, सफल कैसे	रामनिवास गुणग्राहक	२७
मानवता को नष्ट करता, जन्मना जातिवाद	प्रकाश आर्य	२९
हिन्दू धर्म में प्रचलित विभिन्न वादों की तुलना	इन्द्रदेव गुलाटी	३०
भारत पुनः विश्वगुरु कैसे बन सकता है?	राजेन्द्र व्यास	३१
ईश्वर, जीव और प्रकृति अनादि है	देशराज आर्य	३१
फारुख अब्दुल्ला के मुंह में लगाम लगाना जरूरी	डॉ. लक्ष्मीनिधि	३४
शराबी की दशा	केशवदेव भारद्वाज	३४
तीनों सार्वदेशिकों के प्रधान अपने वचनों का...	खुशहालचन्द्र आर्य	३५
वैदिक संसार द्वारा सघन वेद प्रचार अभियान	वैदिक संसार	३६
दूषित परम्पराएं	प्रकाशचन्द्र पिडवा	३८
आर्य जगत् की सम्पन्न गतिविधियां	संकलित	३८
...आप महानुभावों का आर्थिक सहयोग	वैदिक संसार	४१

वेद मन्त्र एवं भावार्थ

**ओ३म् ऐन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम् ।
वर्षिष्ठमूतये भर॥ ऋ. १.८.१**

भावार्थ– सब मनुष्यों को सर्वशक्तिमान अन्तयार्मी ईश्वर का आश्रय लेकर अपने पूर्ण पुरुषार्थ के साथ चक्रवर्ती राज्य के आनन्द को बढ़ाने वाली विद्या की उन्नति, सुवर्ण आदि धन और सेना आदि बल सब प्रकार से रखना चाहिए, जिससे अपने आपको और सब प्राणियों को सुख हो।

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार आर्यावर्त्त के माह जून २०१८ के महत्त्वपूर्ण पर्व एवं दिवस

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

११ गते	शुचि मास	१९४० शक स. ज्येष्ठ कृष्ण तृतीया २०७५	१ जून	उत्तराषाढ़- २२:१९
१४ गते	शुचि मास	१९४० शक स. ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी २०७५	४ जून	पंचक प्रारम्भ-१३:२४
१५ गते	शुचि मास	१९४० शक स. ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी २०७५	५ जून	विश्व पर्यावरण दिवस
१९ गते	शुचि मास	१९४० शक स. ज्येष्ठ कृष्ण दशमी २०७५	९ जून	सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन पुण्यतिथि
२० गते	शुचि मास	१९४० शक स. ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी २०७५	१० जून	पंचक समाप्त-१६:५८
२१ गते	शुचि मास	१९४० शक स. ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी २०७५	११ जून	रामप्रसाद बिस्मिल जयन्ति
२२ गते	शुचि मास	१९४० शक स. ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी २०७५	१२ जून	क्षयतिथि चतुर्दशी-२८:३४, कृतिका-२८:४८
२७ गते	शुचि मास	१९४० शक स. आषाढ़ शुक्ल चतुर्थी २०७५	१७ जून	फादर्स-डे
२८ गते	शुचि मास	१९४० शक स. आषाढ़ शुक्ल पंचमी २०७५	१८ जून	रानी लक्ष्मीबाई पुण्यतिथि
२९ गते	शुचि मास	१९४० शक स. आषाढ़ शुक्ल षष्ठी २०७५	१९ जून	क्षयतिथि सप्तमी-२९:०१,पूर्वा फाल्गुन २७:४२,गुरु हरगोविन्द ज.
३१ गते	शुचि मास	१९४० शक स. आषाढ़ शुक्ल नवमी २०७५	२१ जून	कर्क संक्रान्ति-१५:३७, घ्यू संक्रान्ति, वर्षा ऋतु-दक्षिणायन एवं श्रावण प्रारम्भ, सूर्यपरम उत्तर क्रान्ति पर्व, उत्तरी गोलार्द्ध में दीर्घतम दिनमान व लघुत्तम रात्रिमान (दक्षिणी गोलार्द्ध में विपर्यय), अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस
०१ गते	नभस मास	१९४० शक स. आषाढ़ शुक्ल दशमी २०७५	२२ जून	चित्रा-१४:२७
०२ गते	नभस मास	१९४० शक स. आषाढ़ शुक्ल एकादशी २०७५	२३ जून	श्यामाप्रसाद मुखर्जी पुण्यतिथि
०३ गते	नभस मास	१९४० शक स. आषाढ़ शुक्ल द्वादशी २०७५	२४ जून	रानी दुर्गावती पुण्यतिथि
०६ गते	नभस मास	१९४० शक स. आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी २०७५	२७ जून	बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय जयन्ति, विश्व मधुमेह दिवस
०७ गते	नभस मास	१९४० शक स. आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा २०७५	२८ जून	पूर्वाषाढ़-२२:५३, उत्तराषाढ़-२८:५०, गुरु पूर्णिमा
०९ गते	नभस मास	१९४० शक स. आषाढ़ कृष्ण द्वितीया २०७५	३० जून	नागार्जुन जयन्ति, दादाभाई नौरोजी पुण्यतिथि

नया पंचांग छप चुका है कृपया सम्पर्क करें

किसी भी शंका समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनेय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें।

अन्य दैनन्दिनियों से प्राप्त कुछ विशेष दिवस

०१ जून	बाल सुरक्षा दिवस
०३ जून	महेश जयन्ति
०५ जून	गुरु अचलदास एवं गुरु गोलवलकर पुण्यतिथि
०९ जून	विरसा मुण्डा बलिदान दिवस
१६ जून	महाराणा प्रताप जयन्ति
१७ जून	गुरु अर्जुनदेव पुण्यतिथि
२६ जून	अन्तर्राष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस
२८ जून	सन्त कबीरदास जयन्ति

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उन्नति के साथ सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि -मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगद्रष्टा, स्व राष्ट्रप्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित-पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन-मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी दयानन्द के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुंचाने का प्रयास करना। ●

ना तो देर है, ना अन्धेर है, सब कर्मों का फेर है...

सम्पादकीय

जीवात्मा स्वतन्त्र सत्ताधारी चेतन तत्व है किन्तु अल्पज्ञ तथा अल्पशक्तिमान होने से दुःखों से पूर्ण रूपेण निवृत्ति तथा स्थाई और नितान्त सुख की प्राप्ति हेतु परमपिता परमात्मा की व्यवस्था के अधीन हैं।

परमपिता परमात्मा जो एकमात्र स्वतन्त्र सत्ताधारी, चेतन तथा आनन्द से पूर्णतया परिपूर्ण तत्व है जो जन्म-मृत्यु के बन्धन से परे निर्विकार तथा सर्वज्ञ होने से आनन्द का भंडार है जो अपने गुण-कर्म-स्वभाव के कारण अनेक नामों से जाना जाता है उसके स्वरूप को ठीक-ठीक ना जानने और ना समझने के कारण वर्तमान के मनुष्यों ने उसे मनघड़ंत पृथक-पृथक मतानुसार अनेक बना लिया है। वह स्वभाव से अत्यन्त दयालु है कोई जीवात्मा उसको अथवा उसकी व्यवस्था को स्वीकार करे या ना करे अथवा उसकी व्यवस्था को चाहे जितनी क्षति पहुंचाने की चेष्टा करे वह उसे अपनी न्यायकारी व्यवस्था के अनुसार उसके कृत्यों का ठीक-ठीक फल देता है किन्तु अपनी दया में तनिक भी कमी नहीं करता।

तीसरा अनादि तत्व प्रकृति है जिसकी अपनी स्वतन्त्र सत्ता है किन्तु यह चेतनता तथा आनन्द से रहित होकर सत, रज, तम तीन गुणों से युक्त होने से सुख-दुःख प्रदात्री है। प्रकृति जगत् की उपादान कारण है। जड़ होने से ईश्वर निर्मित जगत् है, सम्पूर्ण जगत् में ईश्वर प्रकृति तथा जीव आत्मा से पृथक और कोई मुख्य तत्व नहीं है यह तीनों तत्व उत्पत्ति और अन्त के परे अनादि और अनन्त हैं। ईश्वर, प्रकृति, जीवात्मा की समानता तथा असमानता को विस्तृत रूप से अच्छे से जानने वह समझने के लिए स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती द्वारा रचित पुस्तक ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति को अवश्य पढ़ना चाहिए। ईश्वर द्वारा अनन्त रहित जीवात्मा के भोग और अपवर्ग के लिए प्रकृति तत्वों से इस संसार को बनाया गया तथा इस हेतु को पूर्ण करने हेतु अल्पज्ञ जीवात्मा को वेदज्ञान दिया यह ईश्वर की जीवात्मा पर दिया है।

ईश्वर जीवात्मा को उसके जन्म जन्मान्तरों के कृत शुभाशुभ कर्मों के फल स्वरुप आयु जाति तथा भोग प्रदान करता है। ईश्वर और जीवात्मा की पृथक-पृथक सत्ता होने से ईश्वर जीवात्मा के कल्याण की इच्छा से संसार को बनाता है इस संसार के भोग और अपनी आत्मिक उन्नति हेतु उसे प्रकृति तत्व से निर्मित शरीर और वेदज्ञान प्रदान करता है किन्तु जीवात्मा को अपनी अधीनता में ना रखते हुए उसे कर्म करने हेतु स्वतन्त्रता प्रदान कर कर्म फल प्राप्ति हेतु अपनी न्यायकारी व्यवस्था के अधीन रखता है। अगर परमात्मा जीवात्मा को अपनी इच्छा अनुसार चलाना

आर्ष बोध भाग-१

१. मानव इतिहास का निर्विवादित सत्य-हमारे राष्ट्र का सर्वप्राचीन नाम आर्यावर्त्त, हमारा नाम आर्य, धर्मग्रन्थ वेद और अभिवादन नमस्ते था। हमें अपनी यह वैदिक परम्परा अपनानी चाहिए।

२. आदिसृष्टि से महाभारत काल तक सम्पूर्ण भूमण्डल पर धर्म और ईश्वर के नाम पर मानव समुदाय में आज की भांति कहीं पर भी कोई मतभेद नहीं था। सबका धर्म और ईश्वर एक ही था।

३. वैदिक युग में ऋषि-मुनियों के द्वारा सर्वत्र ईश्वरीय ज्ञान वेद का प्रचार-प्रसार सर्वत्र होता था। उस समय के हमारे पूर्वज सर्वकल्याणकारी वेद पथ पर चलते और सदा आनन्दित रहते थे।

सत्य सनातन धर्म प्रबोधक मंडल, कर्णावती (गुजरात)
चलभाष- ९८२४०९६०४५, ९९७९४२८०८९

परमात्मा कभी धरती पर अवतरित नहीं होते हैं

कुछ धार्मिक एवं आध्यात्मिक कहलाने वाली संस्थाएं इस प्रकार का गलत प्रचार करती हैं-

१. परमात्मा धरती पर अवतरित हो गए हैं।
२. परमात्मा ने भारत भूमि पर अवतार ले लिया है।
३. परमात्मा एक संत के शरीर में आकर प्रविष्ट हो गए।

इस प्रकार के असत्य प्रचार के बहकावे में जनता को नहीं आना चाहिए। परमात्मा की ३ विशेषताएं हैं- अज, अजर और अमर।

अ-ज अर्थात् जन्म रहित। परमात्मा कभी शरीर धारण नहीं करता है। उसका कभी जन्म नहीं होता है, वह अजन्मा है। भारत में अवतार नामक अन्धविश्वास ने बड़ा अहित किया है। ईश्वर का न कभी अवतार हुआ और न कभी होगा। ईश्वर के, शास्त्रों में ओम् और ब्रह्म दो नाम हैं। वह ब्रह्म निराकार है। ईश्वर का कोई शरीर या आकार नहीं होता, इसीलिए आज तक कोई ईश्वर का चित्र या प्रतिमा नहीं बना सका।

भगवद्गीता में सैकड़ों स्थानों पर ईश्वर को **'अज'** (जन्म रहित) बताया गया है। आर्य (हिन्दू) धर्म का सर्वोच्च ग्रन्थ वेद कहता है- ईश्वर बिना शरीर वाला तथा बिना नस नाड़ियों वाला है-**अकायम् अव्रणम् अस्नाविरम्।** (यजुर्वेद अध्याय ४०, मंत्र सं. ८)

जय जगदीश हरे...नामक प्रसिद्ध आरती में लिखा है- "तुम हो एक अगोचर, हे ईश्वर तुम एक ही हो और अदृश्य हो, बिना शरीर के हो।"

- आचार्य रामगोपाल सैनी -
फतेहपुर शेखावाटी, जिला-सीकर (राज.)
चलभाष - ९८८७३९३७१३

चाहे तो जीवात्मा की पृथक सत्ता समाप्त हो जावेगी, इस कारण जीवात्मा कर्म हेतु स्वतन्त्र किन्तु भोग और अपवर्ग की प्राप्ति के लिए परमात्मा की व्यवस्था को उसके ऋत नियमों अनुसार मानने हेतु बाध्य है। उदाहरणार्थ हमारे पास किसी वस्तु का अभाव है और हम किसी और से उस वस्तु को प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें जिससे वह वस्तु प्राप्त करना है उस वस्तु के स्वामी की शर्तों अथवा नियमों को स्वीकारना होगा इस प्रकार के व्यवहार से हमारी स्वतन्त्रता पर कोई प्रहार नहीं होता।

उस परमपिता परमात्मा को न्यायकारी कहा गया है अर्थात् ठीक-ठीक निर्णय करने वाला ठीक-ठीक निर्णय से तात्पर्य जिसने जैसा कर्म किया है उसका उसी अनुरूप फल। वह परमात्मा तनिक भी अपनी इस न्यायकारी व्यवस्था में परिवर्तन नहीं करता उसकी न्यायकारी व्यवस्था में ना तो दान-दक्षिणा, भण्डारे, चारधाम की यात्रा, तीर्थ स्थानों पर स्नान आदि की कोई रिश्वत चलती है, ना किसी ढोंगी- पाखंडी, तथाकथित गुरुओं, बाबाओं की सिफारिश-पैरवी, ना ही उसके निर्णय के विरुद्ध कहीं कोई अपील होती है। वह परमात्मा जजमेंट देने वाला जज नहीं है अपितु दूध का दूध और पानी का पानी निर्णय करने वाला होता है। मानवीय अदालतों के दंडाधिकारियों को बहकाया-फुसलाया जा सकता है किन्तु परमात्मा को नहीं क्योंकि परमपिता परमात्मा स्वयं निर्णयकर्ता तथा फलदाता है। वह प्रत्येक जीवात्मा के अन्तःकरण में व्याप्त होकर साक्षी (गवाह) भाव से उसके प्रत्येक कर्मों को देख रहा है और कर्मों को ही नहीं यहां तक कि जीवात्मा के अन्तस्थ में उठने वाले शत-प्रतिशत विचारों से भी वह सुपरिचित होता है। एकबारगी जीवात्मा अपने अन्तस्थ में उठने वाले विचारों को पकड़ने अथवा समझने में चूक जाए किन्तु परमात्मा से यह चूक कदापि नहीं होती क्योंकि जीवात्मा अल्पज्ञ और अल्प शक्तिमान है जबकि परमात्मा सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है।

मानवीय अदालतों के जज किसी व्यक्ति द्वारा कारित किए गए ऐसे कृत्य जो मानवीय व्यवस्था अनुसार निर्मित संविधान अनुसार अकरणीय है और उसके विचारण हेतु उसके समक्ष लाया गया है का ही निर्णय कर निर्धारित अनुसार दण्ड दे सकता है। यहां उस मानवीय जज की सीमाएं हैं वह निर्धारित व्यवस्था के अधीन है, किन्तु परमपिता परमात्मा अपनी व्यवस्था के अधीन तो है वह अपने ऋत (सत्य) नियमों का स्वयं भी विखण्डन नहीं करता। वह मानवीय जज की भांति मात्र दण्ड ही नहीं देता बल्कि जीवात्मा के द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों के फलस्वरुप उसे उपकृत भी करता है।

यहां तक हमने ईश्वर जीवात्मा के विषय में कर्म और कर्म फल आदि को हमारी योग्यता अनुसार अत्यन्त लघु रूप में तथा कुछ-कुछ प्रकृति के विषयात्मक तथ्य पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किए।

अब मुख्य विषय की ओर आगे बढ़ते हैं हमारा मुख्य विषय है- **'ना तो देर है, ना अन्धेर है, सब कर्मों का फेर है...** इसमें हम कुछ शब्द और जोड़ देते हैं। **'ना तो देर है, ना अन्धेर है, सब कर्मों का फेर है, किन्तु उस परमपिता परमात्मा को और उसकी न्यायकारी व्यवस्था को ठीक से ना समझने का उलटफेर है।'** जी हां! उस परमपिता परमात्मा को और उसकी न्यायकारी व्यवस्था को ठीक से ना समझने का ही उलटफेर है **अगर उस परमपिता परमात्मा को और उसकी न्यायकारी व्यवस्था को ठीक से व्यक्ति समझ ले तो उसे वह दिन देखना ही ना पड़े जो आसुमल उर्फ आसाराम को देखना पड़े।** परमपिता परमात्मा ने एकमात्र मानव तनधारी को इस योग्य बनाया है कि वह उसे और उसकी न्यायकारी व्यवस्था को भली-भांति जान समझ सके और उस परमपिता परमात्मा तथा उसकी न्यायकारी व्यवस्था को जान समझ लिया, तदानुकूल जीवन व्यवहार बना लिया तो जीवन सफल है अन्यथा निष्फल है।

वर्तमान का वेद ज्ञान से विमुख मानव परमात्मा और परमात्मा की न्यायकारी व्यवस्था को तो ठीक से जानने समझने का प्रयास नहीं करता और ढिंढोरा पीटता रहता है कि जमाना बदल गया है परिस्थितियां बदल गई हैं आज का मनुष्य बदल गया है, आदि-आदि।

हमारा कहना है कि कहीं कुछ नहीं बदला, बदला है तो एकमात्र मनुष्य के ज्ञान प्राप्ति का स्त्रोत बदल गया है। जीवात्मा स्वयं को कर्मफल रहस्य तथा अपने मुख्य लक्ष्य और प्रकृति एवं ईश्वर व ईश्वर की न्यायकारी व्यवस्था को ठीक-ठीक कैसे जाने समझे तथा तदानुकूल इनका सदुपयोग कर कल्याण स्वयं करें। इसका ज्ञान जीवात्मा को परमपिता परमात्मा प्रदत्त वेद ज्ञान है। **महर्षि दयानन्द सरस्वती के कथनानुसार वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना- पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।** इस श्रेय मार्ग को तजकर आज का मानव अल्पज्ञ जीवात्मा के मिश्रित ज्ञान के कारण अपने लक्ष्य से छिंटककर इन्द्रियों का दास बनकर रह गया है। उसे भोग और भोग से प्राप्त सुखों का ध्यान तो है किन्तु वेदज्ञान के अभाव में अपवर्ग का उसे दूर-दूर तक पता नहीं है। वेदज्ञान का अभाव जगत् में कभी नहीं हो सकता क्योंकि परमपिता परमात्मा का ज्ञान होने से यह भी अनादी और अनन्त है। यह सृष्टि प्रलयावस्था में चली जाएगी तब भी परमपिता परमात्मा और उसका ज्ञान यथावत रहेंगे। अभाव तो मानव के स्वयं के जीवन से है और उसका दोषी ना तो परमात्मा है ना प्रकृति है ना अन्य कोई जीवात्मा, दोषी है तो मात्र और मात्र स्वयं मानव तनधारी जीवात्मा, जिसे परमात्मा ने मननशीलता, वाणी के द्वारा व्यक्त करने तथा नैमित्तिक ज्ञान ग्रहण क्षमता आदि गुणों से विभूषित कर उत्पन्न किया है।

'ना तो देर है, ना अन्धेर है, सब कर्मों का फेर है'- अर्थात् परमपिता परमात्मा की न्यायकारी कर्मफल व्यवस्था को कुछ जानने समझने का प्रयास करते हैं।

उदाहरणार्थ एक शारीरिक सम्बन्ध से पिता अपने दो, तीन, चार अथवा पांच पुत्रों का समान रूप से अपने सामर्थ्य अनुसार भोजन वस्त्र आदि आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए उनके कल्याण की भावना से समुचित अपने सामर्थ्य से भी परे जाकर उनकी शिक्षा का प्रबन्ध करता है। अब उन पुत्रों में जो पुत्र अपने पिता के उपलब्ध साधनों का सदुपयोग करते हुए पूर्ण पुरुषार्थ कर सफलता को प्राप्त करता है उसका जीवन सुखी सम्पन्न होता है और उस व्यक्ति का भाई जिसे उनके पिता ने समान रूप से साधन उपलब्ध करवाएं वह उन साधनों का उपयोग भोग- विलासिता में कर

आलस्य-प्रमाद में उपलब्ध अवसर को गवा देता है तो उसे जीवन में क्या प्राप्त होगा? यह पाठक स्वयं निर्णय कर सकते हैं।

इस उदाहरण को हम दूसरे रूप में देखते हैं एक व्यक्ति का बैंक में खाता है उसमें उसके कुछ रुपए जमा हैं तथा उसके खाते में वह और रुपए जमा कराने हेतु स्वतन्त्र है, चाहे जितने जमा कर सकता है और उसके पास ए.टी.एम. कार्ड है वह उस कार्ड के माध्यम से अपने खाते से रुपए निकाल सकता है किन्तु वह उतने ही रुपए निकाल सकता है जितने खाते में जमा है अथवा खाते में जमा करता चला जाएगा तो निकालता भी चला जाएगा ऐसा कदापि नहीं होगा कि खाते में राशि शून्य है और ए.टी.एम. से रुपए जब चाहे निकल जाएं। इसी प्रकार कर्मफल आपका खाता है उसमें जैसे कर्म जमा है उसका आपको फल उसी अनुरूप प्राप्त होता चला जाएगा।

आसुमल उर्फ आसाराम के पूर्व जन्म-जन्मान्तरों के कर्मों का फल था कि उसका प्रारम्भिक जीवन निर्धनता तथा अभावों में व्यतीत हुआ किन्तु उसके कर्म फल खाते में कुछ ऐसे अच्छे शुभ कर्म भी जमा थे जिसके फलस्वरुप उसने ऐश्वर्य के सुखों को भोगा, अरबों, खरबों की धन सम्पदा का स्वामी, अपना सर्वस्व लूटाने वाले करोड़ों लोगों की अन्धश्रद्धा का पात्र, उसके एक इशारे पर पलक झपकते उसकी प्रत्येक वैध-अवैध इच्छाओं की पूर्ति करते सैकड़ों शासनाध्यक्ष तथा राज्याधिकारियों का विशाल साम्राज्य यहां तक कि अपने आपको परमपिता परमात्मा के स्थान पर प्रतिष्ठित करने में भी सफल यह सब अकारण नहीं हो गया और न ही आसाराम की कोई जादूगरी है, अगर आसाराम चमत्कारी अथवा जादूगर है तो उसके प्रारम्भिक दिनों में उसका जादू क्यों नहीं चला, उसने अपने दिन तंगहाली में क्यों काटे? और अब उसका तिलिस्म उसके चमत्कार अथवा जादू का तेज कहां खो गया? व्यक्ति तो वही है फिर यह अन्तर क्यों दिखाई दे रहा है? इसका एक मात्र उत्तर यह है-कर्मफल, आसाराम के कर्मफल खाते में जब तक अच्छे कर्मों का धन (बैलेंस) जितना जमा था उतना उसे मिला अगर वह उसे द्रुतगति से उपयोग नहीं करता अथवा उस कर्मफल खाते में शुभ कर्मों को और जमा करता चला जाता तो उसका जीवन सफल हो जाता किन्तु जो आसाराम को पूर्व जन्म कृत-कृत्यों के अनुसार मानव जीवन मिला, चक्रवर्ती राज्यादि ऐश्वर्यों के सुखों की मानिंद साम्राज्य का सुनहरा विलक्षण अवसर मिला उसका सदुपयोग कर वह अपना इहलोक और परलोक (मोक्षानन्द की प्राप्ति) दोनों को संवार सकता था, बना सकता था। किन्तु खेद है कि उसने अपना इहलोक और परलोक दोनों बिगाड़ लिया। औरों को उपदेश देने वाला स्वयं की सन्तान के निर्माण में भी असफल रहा यह सब वेदज्ञान के अभाव के कारण है, अगर वेद ज्ञान होता तो परमात्मा और परमात्मा की न्यायकारी कर्मफल व्यवस्था को अच्छे से जान लिया होता तो आज आसुमल को आंसू नहीं बहाने होते। वेद ज्ञान होता तो परमात्मा के रुद्र स्वरूप को ठीक से जान लिया होता कि जो दुष्टों को दण्ड देकर रुलाता है उसका नाम रूद्र है।

हम यहां आसुमल उर्फ आसाराम को कटघरे में खड़ा नहीं कर रहे हैं, ना हम न्यायालय के फैसले पर हमारी मोहर लगा रहे हैं हो सकता है आसाराम निर्दोष हो, उन्हें किसी षड्यंत्र के तहत फंसाया गया हो जैसा उनके अन्धभक्तों का कथन है, हम उनके भक्तों के इस कथन के ना तो

भोग रहा है नर्क अब, पापी आसाराम

ढोंगी बाबा कर रहे-निश दिन गंदे काम।
आर्यावर्त्त को कर रहे, दुनियां में बदनाम॥
दुनिया में बदनाम, किया है गारत, भारत प्यारा।
हमें देख हंस रहा, देख लो, अब जग सारा॥
जनता है नादान, चाल में आ जाती है।
इसीलिए तो नहीं, बुराई रुक पाती है॥

सृष्टि का यह नियम है, सुनों लगाकर ध्यान।
कर्मों का फल जीव को, देता है भगवान॥
देता है भगवान, प्रभु की अद्‌भुत माया।
न्यायकारी जगदीश, किसी ने पार न पाया॥
बड़े-बड़े बलवान वीर, धनवान निराले।
जगदीश्वर ने मिटा दिए पल में मतवाले॥

भोग रहा है नर्क अब, पापी आसाराम।
करता था जो रात-दिन, ढोंगी गन्दे काम॥
ढोंगी गन्दे काम, बड़ा बनता था त्यागी।
खुद को जो शैतान, बताता था वैरागी॥
अबलाओं की लाज लूटता था, नित पापी।
साधु वेश में, घूम रहा था, खल सन्तापी॥

दुनिया के नर-नारियों! अब तो जाओ जाग।
भला इसी में छोड़ दो, गुरुडम का तुम राग॥
गुरुडम का तुम राग, छोड़ दो सुख पाओगे।
वैदिक धर्मी बनो, नहीं तो धोखा खाओगे॥
पाखण्डियों की पोल खोल दो, आगे आओ।
स्पष्टवादी बनो, जगत् में आदर पाओ॥

जगत् गुरु दयानन्द के, मानो तुम उपकार।
जीवन को कर लो सफल, करो वेद प्रचार॥
करो वेद प्रचार, रात-दिन करो भलाई।
बनो प्रभु के भक्त, मार्ग है यह सुखदायी॥
'नन्दलाल' अब दुखी-जनों को गले लगाओ।
करो धर्म के काम, अमर जग में हो जाओ॥

विश्वकर्मा कुल गौरव
- पं. नन्दलाल निर्भय -
बहीन, जनपद- पलवल, हरियाणा
चलभाषः ९८१३८४५७७४

पक्ष में है ना विपक्ष में हमारा तो एक मात्र उद्देश्य है परमात्मा का सत्य स्वरूप, परमात्मा द्वारा मनुष्य तनधारी जीवात्मा के कल्याण हेतु प्रदत्त वेद ज्ञान और वेदानुकूल न्यायकारी कर्मफल व्यवस्था को प्रतिष्ठापित करना। हो सकता है आसाराम वर्तमान न्यायालीन व्यवस्था अनुसार निर्दोष हो और उन्हें षड्यंत्र वश फंसाया गया हो किन्तु वेद अनुकूल परमपिता परमात्मा की न्यायकारी व्यवस्था अनुसार यह निश्चित है कि उन्होंने जो ऐश्वर्यों का सुख भोगा वे उतने ही थे जितने उनके किसी जन्म के शुभ कर्म संचित थे और जहां से उनके सुखों की समाप्ति होकर पीड़ादायक जेल यात्रा षड्यंत्र के तहत् शुरू होती है वह इस जन्म के कृत-कृत्यों के अनुसार न भी हो तो उनके किसी पूर्व जन्म का कोई ऐसा घोर पाप तो अवश्य है जिसका फल उन्हें इस जन्म में ईश्वर बन जाने के बाद भी भोगना पड़ रहा है।

अंग्रेजी भाषा में खाते में जमा धन को बैलेंस कहा जाता है बैलेंस को हिंदी में संतुलन भी कहा जाता है अर्थात् आपको अपने खाते में संतुलन बना कर रखना आवश्यक है आपका आपके खाते में संतुलन बना हुआ है तो ना तो देर है, ना अन्धेर है। ए.टी.एम. मशीन में कार्ड लगाओ आपकी संतुलन सीमा में राशि अंकित करो और धन आपके हाथ में ऐसा ही कुछ जीवात्मा के कर्मफल खाते का हिसाब परमपिता परमात्मा द्वारा संचालित इस जगत् रूप बैंक में कर्मों का संतुलन बिगड़ा तो ना देर है, ना अन्धेर है, सब कर्मों का फेर है और नहीं समझ पाया तो उसका वेदज्ञान का उलटफेर है।

अत्यन्त खेद और दुर्भाग्य का विषय है कि ऋषि दयानन्द के कथनानुसार **'अक्ल के अन्धे और गांठ के पूरे'** लोगों का प्रमाण आसुमल के प्रकरण निराकरण के दिन भी देखने को मिला वेद ज्ञान के प्रकाश से वंचित अज्ञानता के अन्धकार में गोते लगाते असंख्य लोगों को हमने दिनांक २५ को आसुमल के लिए प्रार्थना, पूजा-पाठ और हवन की नौटंकियां करते देखा तथा न्यायालय द्वारा सजा सुनाए जाने के बाद रोते बिलखते देखा। इन अक्ल के अन्धे और गांठ के पूरे लोगों को इतना होने के बाद भी निम्न बातें समझ में नहीं आ रही है कि-

१. अगर उनका आसाराम ईश्वर है तो वह इतना बेबस क्यों?

२. क्या एक ईश्वर भी कभी रोता है?

३. अगर वह प्रार्थना कर रहे हैं तो ईश्वर के लिए प्रार्थना किससे?

४, क्या! ईश्वर का भी भला-बुरा हो सकता है? और सर्वशक्तिमान ईश्वर के भले के लिए सामान्य मनुष्य प्रार्थना कर सकता है?

५. आसाराम के ऊपर आरोप लगाने वाले अन्य कोई लोग नहीं उसके अपने वैसे ही अन्धभक्त थे जैसे जो दिनांक २५ को रो रहे थे क्या इनकी अपनी बेटियों के साथ ऐसा दुष्कृत्य हो तभी उनकी आंखें खुलेंगी?

६. एक गुरु के चेले आपस में गुरु भाई मानते हैं इन अन्ध भक्तों को अपने गुरु भाई की विरह वेदना क्यों अनुभूत नहीं होती जिसकी अबोध पुत्री का शील हरण मानव से देव और देव से दानव बने बगुला भगत आसुमल ने कर लिया। ●

चाल धर्म की नैया की

नही समझ में आता भैया, कैसी चल रही धर्म की नैया।
कोई पूजे कृष्ण-कन्हैया, कोई पूजे काली मैया॥
सबकी पूजा करवाने को, है पण्डित जी तैयार।
धर्म के ठेकेदार बनें है, पर सुधार को नहीं तैयार॥
धरम करम सब भूल बैठे, बस याद रहा व्यापार।
मेरी भोली हिन्दू जाति थोड़ा, कर तो सही विचार॥

गीत बना लिये हैं मनमाने, जिसका अर्थ वे खुद नहीं जानें।
रोज गा-गा करके रात दिन, जिनका करें बखान॥
देव समान महापुरुषों का, जिससे होता भारी अपमान।
जननांगों को पूज रही हैं, बिना लिये लाज और संज्ञान॥
सुनने वाले भी सुर ही मिलाते, नहीं समझने को तैयार।
मेरी भोली हिन्दू जाति थोड़ा, कर तो सही विचार॥

गंजेड़ी-भंगेड़ी शिव को बताते, गणपति को आधा लड्डू चोर।
रास रचैया, राधा का रसिया, कहते कन्हैया को माखनचोर॥
ये तो अपमान ही उनका, हम जिनका मचा रहे शोर।
कहते-सुनते तो रोज ही रहते, करते कभी नहीं गौर॥
शुद्ध बुद्धि से चिन्तन करने में, लगाव मिनट दो-चार।
मेरी भोली हिन्दू जाति थोड़ा, कर तो सही विचार॥

भुला रहे हैं श्रेष्ठता उनकी, करते फिर रहे हैं बदनाम।
ऐसा करने को भी बोल रहे, हैं ये ही धरम का काम॥
अपने पूर्वजों और माननियों को, हम ही बक रहे गाली।
क्या शब्दों के अर्थ न जानें? या अक्ल से हो गये खाली॥
इनको प्यार करो और मान बढ़ाओ, श्रेष्ठ करो व्यवहार।
मेरी भोली हिन्दू जाति थोड़ा, कर तो सही विचार॥

सत्य-सनातन धर्म की बातें, सही बताना जरूरी है।
अपनी अगली पीढ़ी को, संभालना तो मजबूरी है॥
शिक्षा प्रणाली में नहीं मिल रहा, इसका कोई ज्ञान।
तो इस विषय में हम क्यों, नहीं दे रहे जरूरी ध्यान॥
बहक रही हमारी नई पीढ़ी अज्ञान के कारण आज।
इसी चिन्ता से सत्य धर्म का, प्रचार करता आर्य समाज।
इसीलिए तो वैदिक धर्म का, प्रचार करता आर्य समाज॥

- आर्य पी.एस. यादव
आर्य समाज मण्डीदीप,
रायसेन, (म.प्र.),
चलभाष- ९४२५००४३७९

कज्जल दर्पण- उज्जवल दृश्य

- देवनारायण भारद्वाज -
'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ.प्र.
चलभाष -०५७१-२७४२०६१

व्रज के एक दार्शनिक सन्त बहुत प्रसिद्ध थे। बड़े-बड़े राजे-महाराजे, श्रेष्ठीगण उनके दर्शन व आशीष वचन के लिए चक्कर लगाते रहते थे। अभी वे स्नानादि से निवृत्त होकर अपने उपासना के आसन पर बैठने ही जा रहे थे कि उन्होंने अपनी बेटी को आवाज लगाई बेटी! मेरा दर्पण लेकर आओ, सन्त एक विशेष आकृति बनाकर चन्दन का तिलक अपने मस्तक पर लगाते थे। बेटी जो दर्पण लेकर आई- वह पानी से भरा हुआ एक कठौता था। कठौता लकड़ी का बना एक तसला समझ लीजिए। सन्त जी ने पानी के स्थिर होने पर अपने माथे पर तिलक लगाना आराम्भ किया ही था कि एक राजा उनके दर्शनों के लिए उपस्थित हो गये। उस दिन तो संक्षिप्त दर्शन के बाद राजा जी लौट गए, दूसरे दिन वे फिर आए, और उनको सोने-चांदी की आरशी भेंट की। सन्तजी ने उनकी आरशी को वापस करते हुए-निर्लोभी शब्दों में कहा दिया- ' **मैं अपनी कुटिया में व्यर्थ वस्तुओं का भण्डार बनाना पसन्द नहीं करता और कृपया आप भी यहां से हट जाइए- मेरी धूप रुक रही है।**' एक कोई दूसरे दार्शनिक सन्त थे, उन्होंने आरशी ही नहीं एक बड़े दर्पण की भेंट को स्वीकार कर लिया था, आश्रम की प्रमुख दीवाल पर टांग दिया था। वे सन्त तो महान् थे प्रतिष्ठित थे और नित्य उपासना से पूर्व दर्पण में स्वयं को देखा करते थे। वास्तव में बहुत ही कुरूप थे। उनके द्वारा दर्पण में मुख देखते समय एक शिष्य ने पूछ लिया- 'गुरुजी! क्या आप इतने सुन्दर हैं जो दर्पण में स्वयं को झांका करते हैं?' उन्होंने उत्तर दिया- ' **निःसन्देह मैं कुरूप हूं, इसीलिए मैं दर्पण में झांक कर अपनी कुरूपता को मान करते हुए अपने मन-वचन-कर्म से ऐसा व्यवहार करता हूं जिससे मेरी कुरूपता ढंक जाए और आचरण की सुन्दरता छा जाये।**' शिष्य ने फिर पूछा-'**तो फिर जो लोग सुन्दर हैं, उन्हें दर्पण देखने की आवश्यकता नहीं है क्या?**' गुरुजी ने उत्तर दिया- '**उन्हें तो दर्पण देखने की और भी अधिक आवश्यकता है, जिससे अपनी सुन्दरता को बनाए रखने के लिए उसमें चार चांद लगाने के लिए सुन्दर कार्य-व्यवहार करते रहें और कोई निन्दनीय कार्य न करे, जिससे उनकी सुन्दरता में ह्रास नहीं विकास होता रहे।**' कोई भी क्यों न हो, जो उपनिषद् कथाओं को सुन लेते हैं उनके जीवन में (उप+नि+षद) '**असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमयेति**' का शतपथ प्रस्तुत हो जाता है।

बादशाह औरंगजेब की पुत्री जेबुन्निशा ने अपने पितृव्य दाराशिकोह से उपनिषद् की कथाओं को सुनकर '**दर्पण**' के अर्थ को समझ लिया था। (दर्प+न) किसी भी प्रकार के दर्प अहंकार को न करना। तभी तो भेंट में मिला चीनी आईना या दर्पण के यकायक दासी के द्वारा टूट जाने पर उसके डर को प्रताड़ना को उसकी हताशा के वाक्य के साथ अपनी शुभाषा के वाक्य को जोड़कर भयमुक्त कर दिया था।

अज कजा आइनाये चीनी शिकस्त।
खूब शूद सामाने खुद बीनी शिकस्त।

कोई कितना ही करे, दर्पण आज की अपरिहार्य वस्तु बन गया है जो मोबाइल से बढ़ते-बढ़ते सेल्फी का स्वयं चित्रण बन गया है। इसकी दशा- दुर्दशा के सचित्र समाचार सर्वत्र दिखाई-सुनाई देते हैं, जो स्वमित्रा तो कम स्वहन्ता के रूप में अधिक प्रदर्शित होते हैं। लेखक के पास भी एक ऐसा दर्पण रहा है, जो अपनी स्वर्ण जयन्ती मनाते हुए विदा लेने की स्थिति में आ गया है। उसे मैं कज्जल दर्पण कहता रहा हूं, जो मुझे सदैव उज्जवल दृश्य दिखाता रहा है। कालेज के प्रवक्ता पद को छोड़कर १९६० में जब राजकीय सेवा में योगदान किया था, तब चतुर्थश्रेणी से लेकर प्रथम श्रेणी तक कर्मचारी, अधिकारियों के वेतन कम होते थे, किन्तु चरित्र के बल पर निर्वाह अच्छी प्रकार से हो जाता था। प्रारम्भिक स्तर पर मैं मुख्यालय लखनऊ में नियुक्त था। खादी वस्त्रों के प्रचार के लिए सभी को गान्धी आश्रम से हुण्डियां दी गई थीं, जिनके मूल्य के बराबर वे खादी के वस्त्र क्रय कर सकते थे, और मूल्य किश्तों के अनुसार कई महीनों में चुका सकते थे। मैं अपनी हुण्डी लेकर गान्धी आश्रम हजरतगंज में पहुंचा, तो उस मूल्य में मुझे अपनी पसन्द का कोई कपड़ा नहीं मिला। अन्ततः विक्रय सहायक की पसन्द से ही मूल्य भर का वस्त्र क्रय कर लिया। वह वस्त्र एकदम गहरे काले रंग का ऊनी वस्त्र क्या, भेड़-बकरी के बालों से बना अत्यन्त खुरदरा था। अब लखनऊ से प्रोन्नति पर मैं मेरठ आ गया।

मेरठ में वस्त्र शिल्पियों को मन पसन्द कुर्ता बनाने के लिए दिया। कई दिन रखकर उन्होंने वापस कर दिया। बोले जो आप चाहते थे वो मैं नहीं बना सकता। विवाह हुए कुछ ही माह हुए थे। श्रीमती जी से आग्रह किया, उन्होंने उस वस्त्र में मेरी अभिलाषा भी पूरी कर दी और कनिष्ठ अनुज के लिए एक सदरी भी बना दी। उस वस्त्र का स्वरूप ऐसा बन पड़ा था कि उसे कोट-कुर्ता-कमीज किसी भी रूप में पहन सकते थे। खुरदरा वह था ही दिगम्बर रहने वाले सन्त जी भी जब उसे देखते थे तो कह उठते थे कि यदि मैं कभी वस्त्र धारण करूंगा, तो शीत ऋतु में ऐसा ही कठोर-कण्टक पूर्ण कज्जल वस्त्र ही बनवाउंगा। उस का काला रंग मुझे उसी प्रकार भूले-बिसरे चित्र दिखाता रहता था, जिस प्रकार किसी सिनेमाघर के अन्धेरे हाल में पर्दे पर उज्जवल दृश्य दिखाई देते हैं। जैसे-जैसे मेरे साथ-साथ उस वस्त्र की आयु बढ़ती जाती रही है, वैसे-वैसे पुरातन दृश्य और अधिक उज्जवल होते जाते रहे हैं। उसके निरन्तर

फटते जाने पर भी मैंने उसका साथ नहीं छोड़ा। जिस वस्त्र को कभी हम लवादा, कभी कवच नाम से बुलाते थे, धीरे-धीरे वह विदीर्ण होने लगा, बाहें फटी तो बन्डी, बन्डी फटी तो ऊपरी जॉकेट, वह भी फटी तो शाल-पट्टिका और उसके फटने पर भी सन्ध्योपासना के आसन के रूप में हमारा साथ देते रहा। इस ऊनी वस्त्र की पवित्रता की पात्रता चिर स्मृति की प्रेरणा-प्रसादी की उभरती हुई दृश्यावली चल चित्रों से भी अधिक चमकदार है। आज के युग में वे दृश्य जीवन व्यवहार में दुर्लभ हैं। वे इस कज्जल दर्पण से स्पष्ट स्मरण पटल पर ऊभर आते हैं। वे, देखिये, अमौसी हवाई अड्डे पर पुत्री इन्दिरा गांधी के साथ प्रथम प्रधानमन्त्री पं. जवाहरलाल नेहरू उतर रहे हैं। पूरा महानगर उनके स्वागत में उमड़ रहा है। उनके साथ सुरक्षा गार्डों का कोई भी दल नहीं है। खुली जीप में हाथ हिला कर स्वागत स्वीकार करते चलते हैं। फूल मालाओं को हंसते हुए बच्चों की ओर फेंक देते हैं। विशाल सभाओं में मंच पर उनके साथ लोकप्रिय नेतागण होते थे, सुरक्षा गार्डों की भीड़ नहीं। लखनऊ विश्वविद्यालय में भाषण देकर निकलते समय खुली जीप में युवा छात्र उनको स्पर्श करके देखना चाहते थे। नेहरू जी जीप पर इधर-उधर अथवा ऊधर से इधर होते रहते थे और भीड़ में जीप चींटी की भाँति रेंगती हुई आगे बढ़ती थी। एक नेहरू जी ही क्या मान्य. मुरारजी देसाई, मुख्यमन्त्री चन्द्रभानु गुप्त, श्रीमती सुचेता कृपलानी सभी बिना सुरक्षा गार्डों के घेरे से बाहर रहते थे। हजरतगंज में मन्त्रीगण, विधायक स्वतन्त्र रूप से टहलते मिल जाते थे। यहां के राज्य सूचना केन्द्र पर निरन्तर रवीन्द्र संगीत की ध्वनि गुञ्जरित होती थी, तथा उच्च स्तरीय नेतृत्व अगल-बगल बैठ कर चर्चा में व्यस्त रहता था।

सिटी बस, टेक्सी, टेम्पों तो चलते थे, किन्तु सर्वाधिक संख्या इक्का व तांगों की रहती थी। तांगा चालक स्वयं को नवाबों का वंशज बताकर चार आने-आठ आने (चौथाई या आधा रुपया) की पेंशन पर गर्व करते थे। एक वंशज तो ऐसे थे जो नित्य सन्ध्या को शानदार रंग बिरंगे वस्त्र व टोपी धारण कर ऊपर से रंगीन छतरी तान कर हजरतगंज में भ्रमण करने आते थे। जलपन गृह एवं भोजनालय के बाहर आज की भाँति टेढ़ी निगाह से देखने वाले सुरक्षा गार्ड नहीं होते थे। प्रत्युत सजी धजी वेशभूषा में कोई कर्मचारी रहता था जो प्रवेश करन वाले व्यक्तियों को सेल्यूट से स्वागत करता था। भीतर जाकर चार आने (पच्चीस पैसे) का दोसा खाने वाले को भी यह सलूट-स्वागत मिल जाता था। लालबत्ती चौराहे के बडे.काफी हाऊस में सायंकाल को प्रसिद्ध साहित्यकार भगवतीचरण वर्मा, यशपाल, इलाचन्द्र जोशी आदि सभी के सहज ही दर्शन सुलभ हो जाते थे। ये लोग भी तांगा-इक्का पर चढ़ते- उतरते देखे जाते थे। उन्हीं दिनो रूस देश के प्रथम अन्तरिक्ष यात्री यूरी नागरिन को भारत आमंत्रित किया गया था। कुछ भारतीय अधिकारियों के साथ वे खुली जीप में बैठकर अधिकतर खड़े होकर लोगों का स्वागत हंसते-मुस्कुराते हुए स्वीकार कर रहे थे।

यह देखिये हजरतगंज के लालबत्ती वाले बड़े चतुष्पथ के समीप बापूजी की प्रतिमा है स्टेडियम के समीप बेगम हजरत महल पार्क है, अमीनाबाद का हनुमान मन्दिर का पार्क या अमीनाबाद पार्क है। यहां बिना किसी गार्ड के डॉ. राम मनोहर लोहिया, आचार्य जे.पी. कृपलानी आदि-आदि की सभायें बिना रोकटोक के चलती रहती थी। अमीनाबाद में ही एक बड़ा पुस्तक बाजार था, जिसमें दुकानों की भरमार थी। आकर्षण का केन्द्र एक पार्श्व में स्थित पुरानी पुस्तकों की बड़ी-बड़ी दुकानें थी। जब मैं लखनऊ से विदा होने लगा तो उन पुरानी पुस्तक-दुकानों का भ्रमण किया। एक हिन्दी शब्दकोश मात्र बारह रुपए में क्रय करके लाया, जिसने मेरा बहुत साथ दिया। उनको, जिन्होंने उसे उस दुकान पर पहुंचाया- मैं सम्मानपूर्वक स्मरण करता हूं, क्योंकि उन्हीं की कृपा से मैं अपने शब्दज्ञान में वृद्धि कर सका।

हमारा यह कपड़े का कज्जल दर्पण चित्र पटल की भाँति न जाने कितने चलचित्रों को समेटे है, उसका दृश्य-दर्शन सदैव चलता ही रहेगा। लखनऊ के राज्य स्तरीय अनुभाग में मुझे क्लब मन्त्री बनाया। आने वाली पत्र-पत्रिकाओं कार्यालय के लोग तो कम पढ़ते थे, किन्तु न्यू हैदराबाद के स्वच्छ, शुद्ध प्रभाग में रहता था, वह मिश्रा, शुक्लाओं की बस्ती थी, जो क्लब कार्यालय में नहीं लग पाता था, वह हमारे छोटे से आवास के शान्त सुरक्षित द्वार पर चलता था। युवा कम सेवा निवृत्तजन साथ-साथ बैठकर हास्य-विनोद पूर्ण ज्ञानवर्धन करते थे और मेरा मार्गदर्शन भी होता रहता था। मेरी नई-नवेली नववधू के वहां पहुंचने पर शुक्लाजी एवं उनकी धर्मपत्नी जिन्हें हम दद्दाजी एवं दिद्दीजी कहते थे, ने हम लोगों को अपने पास ही बुला लिया था। उनके अपार प्रेमाधार का मैं भूरिशः आभार व्यक्त करता हूं।

इस वस्त्र ऐसी कज्जल दर्पण का एक-एक रेशा अब मुझसे विदा होने वाला है , किन्तु उसका उज्जवल दृश्य आजीवन मुझसे पृथक नहीं हो सकता है। यह मेरा कोई तथ्यहीन काल्पनिक कथन नहीं है, प्रत्युत यह वैदिक विवाह दर्शन का सार है। वैवाहिक यज्ञ श्रृंखला प्रारम्भ करने से पूर्व मण्डप में ही वर पक्ष की ओर से कन्या एवं वर दोनों को ही गृह की देवियों द्वारा तैयार किए हुए चुनरी एवं दुपट्टा ओढ़ाये जाते हैं। इन सूक्ष्म वस्त्रों को बनने या तैयार करते समय गृहदेवियों की भावनाएं भी गूंथ दी जाती हैं, जो नव-दम्पत्ति के युगल जीवन में ही नहीं, वर-कन्या दोनों के समग्र पारिवारिक जीवन हेतु मंगलकारिणी होती है। यथा।

ओं जरां गच्छ परिधत्स्व वासो भवाकृष्टीनामभिशस्ति पावा।
शतं च जीव शरदः सुवर्चा रयिं च पुत्रानुसंव्यय स्वा युष्मतीद परिधत्स्वः वातः ।। ओं यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्रा बृहस्पती।
यशो भगश्च मा विदद्यशो मा प्रतिपद्यताम् ।। पार. गृह.।।

अभी जो उपरिवस्त्र वर-कन्या धारण करें, वे यह भावनायें सुदृढ़ कर जाएं जिनसे नव-दम्पत्ति आजीवन धन-वैभव-यश से परिपूरित बने रहकर अपना, परिवार का, समाज का और राष्ट्र का ऐश्वर्य-सम्मान बढ़ाते रहे। अर्द्धांगिनी की चुनरी के चीर के स्पर्श मात्र से स्नेह भावनाएं स्फुरण कर उठती है, वैसे ही इस काले कलूटे वस्त्र के विचार मात्र से कज्जल दर्पण प्रकट होकर भारत भूमि के उज्जवल दृश्य प्रस्तुत कर देता है। महर्षि दयानन्द के अनुसार राम-कृष्ण आदर्श योगिराज, श्याम वर्ण किन्तु आप्त पुरुष हैं। इनका अनुसरण करने पर मनुष्य उज्जवल मुखी बनता है।

या अनुरागी चित्त की गति समझुहि नहिं काय।
ज्यों ज्यों बाढ़ै श्याम रंग, त्यों-त्यों उज्जवल होय।। •

मनुष्य की नासमझी या भूल

- मोहनलाल दशोरा 'आर्य' -
नारायणगढ़, जिला-मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष- ०९५७५७९८४१२

कहते हैं जब मनुष्य माँ के पेट में रहता है, बाहर दुनिया में आने के लिए छटपटाता है, तब ईश्वर से प्रार्थना करता है कि हे ईश्वर! मुझे इस नौ महीने के बन्धन से मुक्त कर दे। मैं दुनिया में नवजीवन पाकर नेक कर्म करूंगा और तेरी भक्ति में जीवन पूरा कर मोक्ष के लिए हर संभव प्रयास करूंगा।

भले ही उपरोक्त बात काल्पनिक हो, परन्तु मनुष्य जीवन का मूल उद्देश्य तो यही है। पिछले जन्म में कुछ अच्छा किया होगा तभी यह सुखमय जीवन हम भोग रहे हैं। क्योंकि कर्म फलदाता ईश्वर निष्पक्ष न्यायकारी है। जैसे कर्म, वैसे फल। ऐसे कोई टाल नहीं सकता। परन्तु मनुष्य जीवन की आपाधापी और सुख साधनों को पाने के फेर में यह सब भूल जाता है। पहले तो वह मोह, माया, लोभ, लालच, अहंकार आदि में पड़कर भूल जाता है कि उसे वास्तव में क्या करना जरूरी है? फिर आधे अधूरे ज्ञान वाले तथाकथित गुरु गुमराह कर देते हैं। पाप करो- क्षमा मांग लो। तीर्थ दर्शन स्नान कर लो, गुरु की सेवा करो, मोक्ष करा देगा। सत्संग कर लो, कथा सुन लो, प्रायश्चित हो जावेगा आदि-आदि।

मनुष्य अल्पज्ञानी है हर बात समझना, सीखना पड़ती है। गलत गुरुओं और असत्य संदेह भरे शास्त्र को पढ़ने से गुमराह होकर गलत धारणाएं मन में बना लेता है।

- जैसे मैं ही शरीर हूं खाना-पीना मौज उड़ाना ही सुख है, कल किसने देखा। भौतिक सुख साधनों के पीछे उम्र पूरी कर देता है। अस्थायी सुखों के लिए मरता रहता है।
- आत्मा सो परमात्मा इसे हर तरह से प्रसन्न तृप्त रखना इसके लिए वैध-अवैध है, कुछ भी करना पड़े।
- सांसारिक वस्तुओं से मोह-भूमि, भवन, सोना-चांदी, धन पति-पत्नी, पुत्र अपनों को स्थायी रिश्तेदार मानकर सुख साधनों में डूबे रहना। जो कभी भी साथ नहीं जाते।
- मैं कभी मरूंगा नहीं या हर जन्म में यहीं आकर भोगूंगा। यह सोचकर अथाह सम्पत्ति गबन, घोटाला, भ्रष्टाचार से परिग्रह।
- अपने बुरे विचारों, लोभ, तृष्णा, वासना में फंसकर, आत्मा की आवाज न सुनना और ईश्वर के आदेश को न मानकर श्रेय मार्ग छोड़कर प्रेय मार्ग में फंसना। इकट्ठा करना व मर जाना।
- विषयों के भोग को सच्चा सुख, मनमानी इच्छाओं की पूर्ति में शांति और अपार सुख-साधनों के भोग उपयोग को ही जीवन का आनंद समझ लेने की भूल करता है।
- जबकि वास्तविकता यह नहीं है- सही बातें जानो समझो, सृष्टी में ईश्वर जीव और प्रकृति के त्रैतवाद को जानो, मैं शरीर नहीं हूं, मैं अमर जीवात्मा हूं। शरीर पूर्व कर्म अनुसार दिया मेरा घर है,निवास धर्मशाला है और संसार चलायमान है। **हमारे पास शरीर मन और आत्मा है। तीनों को अलग-अलग शरीर को सुख, मन को शान्ति व आत्मा को आनंद चाहिए। नेक पुरुषार्थ से साधन शरीर सुख के लिए जरूरी है। सेवा, दान, परोपकार व सत्कर्म मन की शांति के लिए है और आत्मा के आनंद के लिए सत्संग, स्वाध्याय, साधना है।** ईश्वर हमारा स्थायी माता-पिता, बन्धु, सखा, सहायक है। उसे पाने के लिए (मोक्ष), शरीर-मन व आत्मा को उपरोक्त आवश्यक बातों से तृप्त जीवन में करते हुए लक्ष्य को प्राप्त करना स्थायी सुख शांति और आनंद की प्राप्ति के लिए श्रेय मार्ग उचित है और श्रेय मार्ग को खोजने का साधन है आर्ष-साहित्य। वेद, उपनिषद्, भाष्य, सत्यार्थ प्रकाश, वैदिक संसार जैसे सत्यज्ञान देने वाले साहित्य का स्वाध्याय करने पर मनुष्य सही मंजिल तक पहुंच सकता है।●

जानें! ईश्वर को और बढ़ायें- ईश्वर से निकटता

परमानन्द प्राप्ति का एकमात्र मार्ग

- पं. उम्मेदसिंह विशारद -
गढ़निवास, मोहक्कमपुर, देहरादून
(उत्तराखण्ड)
चलभाष- ०९४११५१२०१९

ईश्वर किसे कहते है मूल तीन सिद्धान्त

- **ईश्वर उसे नहीं कहते जो कभी हो और कभी न हो? वह अजर अमर है-**
- **ईश्वर उसे भी नहीं कहते जो कही हो और कहीं न हो? वह सर्वव्यापक है-**
- **ईश्वर उसे भी नहीं कहते जो कसी का हो और किसी का न हो? वह सर्वाधार है। सबका है।**

समर्पण - ब्रह्माण्ड के रचियेता निराकार सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वशिक्तमान ईश्वर को पहचानना, जानना और मानना ही मानव जीवन का सुख का आधार है। चन्दन वृक्ष के समीप उगने वाले पौधे उसकी समीपता की वजह से सुगन्धित हो जाते हैं, वैसे ही उसकी उपासना, साधना और आर्ष ग्रन्थों के स्वध्याय से हम ईश्वर के करीब अर्थात् उसका

आभास कर सकते हैं। ईश्वर के समीपता का अर्थ है, ईश्वरीय गुणों को धारण करना है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्य ईश्वर का मार्ग दिखाया : युग पुरुष महर्षि दयानन्द जी के आर्य समाज के दूसरे नियम में ईश्वर के सत्य गुण बताकर संसार का कल्याण किया है वह नियम है, ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर-अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है। यदि मानव समाज ईश्वर के उपर्युक्त गुणों के आधार पर माने-जाने विचारे तो संसार का सम्पूर्ण मानव कलह, ईर्ष्या व अज्ञानता समाप्त होकर सुख-शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो सकता है।

ईश्वर के कार्यों को मनन करके उसकी उपासना से निकटता बढ़ती है: उपासना का अर्थ है कि हम ईश्वर के सृष्टि क्रम विज्ञान का मनन करें। यह स्वाभाविक है कि हम जिसके गुणों का मनन करते हैं, उससे हमें अनुराग होता जाता है, और हम उसके नजदीक होते जाएंगे। इसी प्रकार हम ईश्वर के गुणों का मनन करेंगे तो हमारी श्रद्धा ईश्वर से बनती जाएगी। ईश्वर हममें समाविष्ट होते जाएंगे और हम ईश्वर में समाविष्ट होते जाएंगे। हमें ईश्वर के गुणों जैसा बनने का प्रयत्न करना चाहिए। उपासना का तात्पर्य अपनी मनोभूमि को इस लायक बनाना कि हम ईश्वर के आज्ञानुवर्ती बन सके। साधना का अर्थ है अपने गुण-कर्म, स्वभाव को सात्विक वृत्ति में साध लेना है। इसके लिए हमें नित्य आत्म निरीक्षण करना चाहिए। अपनी अज्ञानता को दूर करने के लिए स्वाध्याय, संयम और सेवा के लिए भी हमें प्रयत्नशील होना चाहिए।

आइए हम ईश्वर के कुछ कार्यों का मनन करते हैं: ईश्वर ने अद्‌भुत सृष्टि रचना की है और सूर्य, चन्द्रमा, तारे व सारे ब्रह्माण्ड को बिना किसी सहारे के अपनी शक्ति से चला रहा है व स्थिर किये हुए हैं। जैसे- सूर्य पृथ्वी से ९ करोड़ तीस लाख मील दूर है। चन्द्रमा पृथ्वी से २ लाख चालीस हजार मील दूर है। निरन्तर अपनी धूरी पर घूमते रहते हैं, किंतु आश्चर्य है इनकी दूरी घटती-बढ़ती नहीं है। चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा १७ दिन ७ घंटे १६ मिनट और १२ सेकंड में पूरी करता है। पृथ्वी अपनी धूरी पर २३ घंटे ५६ मिनट ९ सेकंड में घूमती है और सूर्य की परिक्रमा पृथ्वी करते हुए 1 सेकंड में १८ मील की दूरी तय करती है और अपनी धूरी पर १०३७ मील प्रति घंटा के रफ्तार से घूमती है। सूर्य का व्यास ८ करोड़ ५८ लाख ८५ हजार मील है और प्रकाश की किरणे पृथ्वी पर ८ मिनट में पहुंचती है। सबसे बड़ा ग्रह बृहस्पति है, जो अपनी धूरी पर ९ घंटे ५५ मिनट में घूमता है और ३३३ दिनों में सूर्य की परिक्रमा करता है।

सूर्य जलती हुई अग्नि का पिंड है और इसकी सतह का तापमान १२००० डिग्रीसेंटी ग्रेट है और दूरी इतनी है की तापमान सामान्य बना रहता है। अगर थोड़ी-सी भी दूरी नजदीक हो जाए तो पृथ्वी जलकर राख हो जाए और थोड़ी-सी दूरी हो जाए तो पृथ्वी बर्फ बन जाएगी। सूर्य की किरणे सीधे पड़ जाए तो जीना दूभर हो जाए। ईश्वर की व्यवस्था से इसमें सुरक्षा ओजोन किरणें रहती हैं, जिसे ओजोन परत कहते हैं। इसी प्रकार पृथ्वी का व्यास ७९०० मील है और पर्वतों की ऊंचाई ५११ मील है और समुद्र की गहराई ७ मील है। 3/४ संसार में जल है।

ब्रह्ममाण्ड का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से कार्य कर रहा है। यदि उसमें जरा-भी व्यवधान हो जाएगा, तो विराट ब्रह्ममाण्ड का अस्तित्व एक क्षण में समाप्त हो जाए और एक कण के विस्फोट से अनंत प्रकृति में आग लग सकती है. सर्वाधिक बड़े तारों की चमकने वाली संख्या २० है। इसमें व्याध नाम का तारा सबसे अधिक दीप्तमान है। यह सूर्य की तुलना में २१ गुना अधिक है। सूर्य का तापमान २३१० डिग्री फारेनहाइट है और पृथ्वी ११० फारेनहाइट डिग्री है।

पृथ्वी के ऊपर अयन मंडल की पट्टियां जिन्हें आई लेग स्पीयर कहा जाता है, जिससे पृथ्वी सुरक्षित रहती है तथा पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा 1 वर्ष में पूर्ण करती है और उसकी गति प्रति घंटा १ लाख १ सौ ९९ मील होती है। सूर्य और मंडल का व्यास १ शंख १८ खरब किलोमीटर है और समूचे मंडल को संभालना सूर्य का काम है। समस्त सौर मंडल बिना टकराये सहायता करते रहते हैं।

नोट : ईश्वर की महान सुव्यवस्थित नियमित सत्ता का आभास कराने के लिए विभिन्न शास्त्रों से आंकड़े लिए गए हैं। खगोल शास्त्रीयों के अनुसार इनका वर्णन कम ज्यादा हो सकता है। यह तो ईश्वर के संक्षिप्त कार्यों का वर्णन है। यदि हम ईश्वर के गुणों और कार्यों का चिंतन करेंगे तो उसकी विशालता का आभास हो जाएगा। ईश्वर के गुणों का और सम्पूर्ण सृष्टि क्रम विज्ञान का कोई भी वर्णन नहीं कर सकता है।

ईश्वर से कैसे निकटता और श्रद्धा बढ़ाए मेरा अनुभव: हमारी दिनचर्या और उपासना का समय नियमानुसार होना चाहिए और संध्या के बाद चिंतन करना चाहिए कि ईश्वर अति महान् है, अतः यह आंखें उसे देख नहीं सकती, वह अति सूक्ष्म है व सभी पदार्थों में ओत-प्रोत है, वह ईश्वर हृदय गुफा में विद्यमान है। ईश्वर उपासना का समय प्रातः ५ बजे एकांत सुनसान होता है। स्नान के पश्चात् योग आदि करके संध्या करके फिर चिंतन करें कि ईश्वर ने सूर्य, चन्द्रमा, तारे, वायु, अग्नि, वनस्पति, अन्न, फल आदि हमारे लिए दिए हैं और ईश्वर की विशालता का भी ध्यान करते जाए। कानों में ध्वनि ओ३म् की श्रवण करते जाए, एकाग्र होकर ध्यान में उस जगदीश्वर की कृपा का आभास करते-करते अश्रुपांत होने लगे तो समझिए हम ईश्वर के निकट आ गए हैं। अपने हृदय व मस्तिष्क में कल्पना से ओ३म लिख लेवें। बस उसी ध्यान में मन को लगा देंवे और ईश्वर की महानता व कार्यों का चिंतन करते जाएं। आपार आनंद की प्राप्ति होती है।

ईश्वर हमारा स्वाभाविक जन्म-जन्म का मित्र है: हमें हर पल स्मरण रखना चाहिए ईश्वर हमारा स्वाभाविक मित्र है। हमने ही उसकी उपेक्षा कर रखी है, वह हमारी उपेक्षा कभी नहीं करता है। हम एक उसी ओर बढ़ने की चेष्टा तो करें फिर पता चलेगा वह हमारा स्वागत कैसे करता है, जहां संयोग होता है वहां वियोग अवश्य होता है, किंतु ईश्वर से न कभी संयोग होता है न कभी वियोग होता है, अपितु सदैव योग ही योग रहता है। इसीलिए मैनें इस लेख का शीर्षक रखा है **जानें! ईश्वर को और बढ़ाऐं- ईश्वर से निकटता।** ●

ज्ञान का सागर चार वेद यह, वाणी है भगवान की। इससे मिलती सब सामग्री, जीवन के कल्याण की।।

'वेदों की ओर लौटो'- ऋग्वेद ज्ञानागार के कुछ मोती

- पं. सत्यपाल शर्मार्य -
पुरोहित एवं भजनोपदेशक
आर्य समाज-देहरी, जिला-मन्दसौर म.प्र.
चलभाष- ८४३५७४६४७४

ज्ञान वह प्रकाश है जो मनुष्य के मन और मस्तिष्क का अंधकार समाप्त कर देता है। सृष्टि के आदि से मानव के मार्गदर्शन और कल्याण के लिए प्रभु ने जो ज्ञान-प्रकाश दिया है, उसका नाम वेद है। परमात्मा द्वारा प्रदत्त यह ज्ञान जिन ऋचाओं में प्रकट है उनके चार भाग हैं- ऋग्, यजुः साम व अथर्ववेद। इन वेदों में सभी सत्य विद्याओं का बीज विद्यमान है ये वेद स्वतः प्रमाण, तर्क रहित, सार्वभौमिक, सर्वकालिक व यौगिक शब्द वाले हैं। व्याकरण का प्रादुर्भाव भी वेद से ही हुआ है। ऋग्वेद विज्ञान काण्ड है, विज्ञान में गुण और गुणी का वर्णन व विश्लेषण है। समस्त मूल पदार्थ ऋग् से प्राप्त हैं और सारी गतियां यजुः से सम्बन्ध रखती है। यजुः शब्द का यज्ञ धातु से बना है जिसके देव पूजा संगतिकरण और दान अर्थ हैं। सामवेद उपासना काण्ड है, साम मन्त्र ऋचा से नापकर बने हैं। समस्त विक्षेपों को क्षीण करने से उपासनामय है। साम में सा = द्युलोक , म = पृथिवी, सा = विद्या, म = कर्म, स = ऋचा, अमः = साम ज्ञान है। सा = परमेश्वर, म = जीव। यह वस्तुतः समन्वय है अथर्वेद- अथ+ अवाड.अर्थात् इन जगत् के पदार्थों के अन्दर उस प्रभु की सत्ता अथवा वस्तु तत्व को खोजने से यह अथर्व है। ज्ञान का विषय है। वेद में ऋषि, देवता (प्रतिपाद्य विषय) छन्द, स्वर आते हैं। ऋषि- मन्त्र दृष्टा, वेदज्ञ, ब्रह्मज्ञ, प्रयोक्ता, सामगान वाला, ज्ञान में दक्ष आदि होता है। देवता का अर्थ प्रतिपाद्य विषय से है, मन्त्र में जो विषय चर्चित है उसी को देवता कहते हैं। मानव जीवन में आने वाली समस्त प्रकार की उलझनों को सुलझाने के लिए वेद ही मार्गदर्शक है। मानव जीवन जीने का संविधान है। इस तारतम्य में ऋग्वेद के दूसरे मण्डल से सप्तम मण्डल तक के सभी सूक्तों के मन्त्र और विषय का विवरण मार्ग दर्शिका के रूप में निम्नानुसार दर्शाया गया है-

ऋग्वेद द्वितीय मण्डलम्

सूक्त	मन्त्र क्र.	विषय
१	१ से ३ तक	अग्नि के दृष्टान्त से विद्वान और विद्यार्थियों के कृत्य।
	४ से १० तक	राज शिष्य के कृत्य।
	११ से १६ तक	अध्यापक के विषय में।
२	१ से ७ तक	विद्वानों के विषय के अन्तर्गत राज विषय।
३	१	अग्नि का वर्णन।
	२से ४ तक	अग्नि के दृष्टान्त से विद्वानों के विषय में।
	५ से ८ तक	स्त्री पुरुष के आचरण के विषय में।
	९ से ११ तक	पुरुष के विषय में।
४	१ से २	विद्वान के विषय में।
	३ से ६ तक	अग्नि कार्यों से विद्वान के विषय में।
	७वां	अग्निपरता से ही विद्वानों के विषय में।
	८-९	विद्वानों के विषय में।
५	१	जीव के गुणों के विषय में।
	२-३	ईश्वर के विषय में।
	४, ७-८	विद्वानों के गुणों के विषय में।
	५-६	विदुषी स्त्री के विषय में।
६	१	अग्नि के गुणों के विषय में।
	२ से ६ तक	विद्वानों के गुणों के विषय में।
	७-८	ईश्वर के विषय में।
७	१ से ६ तक	विद्वानों के गुणों के विषय में।
८	१	अग्नि विषय का वर्णन।
	२ से ६ तक	विद्वानों के विषय में ।
९	१ से ६ तक	अग्नि विषयक विद्वानों के विषय में।
१०	१	अग्नि विषय का उपदेश।
	२ से ६ तक	विद्वानों को अग्निविद्या ग्रहण का उपदेश।
११	१ से १० तक	राज धर्म का वर्णन।
	११ से १७ तक	वैद्य विद्वान के विषय में।
	१८-१९	सेनापति के गुणों के विषय में।
	२०	सूर्य के दृष्टान्त से राज धर्म।
	२१	विद्वान के विषय में।
१२	१ से ३ तक	सूर्य के गुणों का वर्णन।
	४ से ६ तक व १०	ईश्वर विषय के विषय में।
	७-८	बिजली रूप अग्नि के विषय में।
	९	ईश्वर और बिजली के विषय में।
	११,१२, १४-१५	ईश्वर के विषय में।
	१३	सूर्य के विषय में।
१३.	१,४,५ व ८ से १३ तक	विद्वानों के गुणों का उपदेश।
	२-३, ६-७	ईश्वर के विषय में।
१४	१	सोम के गुणों के विषय में।
	२	बिजुली के विषय में।
	३ से ७ तक	राजा के विषय में।
	८ से ११ तक	प्रजा व प्रजाओं के लिए क्रिया कौशल।

	१२	ईश्वर के विषय में।
१५	१ से ५ तक	विद्वान, सूर्य और परमेश्वर के लिए।
	६	सूर्य के विषय में।
	७	सूर्य्य के दृष्टान्त से विद्वानों के विषय में।
	८	प्रकारान्तर से विद्वानों के विषय में।
	९	राज विषय में।
	१०	दान देने के कर्म विषय में।
१६	१-२	बिजुली के विषय में।
	३-४	विद्वानों के विषय में।
	५ से ९ तक	सूर्य के विषय में।
१७	१	सूर्य के गुणों के विषय में।
	२	ईश्वर विषय में।
	३ से ६ व ८	विद्वानों के विषय में।
	७ व ९	विदुषी के गुणों के विषय में।
१८.	१ से ६ तक	यान के विषय में।
	७	पदार्थ के विषय में।
	८	ईश्वर और विद्वानों के विषय में।
	९	ईश्वर और उपदेशकों के गुणों के विषय में।
१९	१ व ७-८	विद्वानों के विषय में।
	२-३ व ६	सूर्य के विषय में।
	४	दाता के विषय में।
	५	बिजुली के विषय में।
	९	दक्षिणा के गुणों के विषय में।
२०	१-२	इन्द्र शब्द से विद्वानों के गुण।
	३-४	विद्वान और ईश्वर के विषय में।
	५ से ८ तक	सभेश के गुणों के विषय में।
	९	दाता के गुणों के विषय में।
२१	१ से ६ तक	विद्वानों के गुणों के विषय में।
२२	१	सूर्य्य के विषय में।
	२	बिजुली के विषय में।
	३	ईश्वर के विषय में।
	४	जीव के विषय में।
२३	१-२, १७,१८,१९	परमेश्वर के विषय में।
	३, १५, १६	विद्वानों के विषय में।
	४-५ से ११ तक	विद्वानों और ईश्वर के विषय में।
	१२-१४	राज विषय में।
२४	१ से ८ तक	विद्वान लोग क्या करें।
	९, १३	राज पुरुष कैसे हो, व क्या करें।
	१०, १२	राजा और प्रजा क्या करे।
	११,१५-१६	फिर मनुष्यों का क्या कर्त्तव्य है।
	१४	अध्यापक लोग कैसे हों।
२५	१	बिजुली का वर्णन।
	२-३	कौन मनुष्य विद्या वृद्धि कर सकता है।
	४	कौन विजयी होते हैं।
	५	कौन मनुष्य कार्यों को सिद्ध करते हैं।
२६	१ से ४ तक	विद्वानों के क्या कर्त्तव्य हैं।
२७	१	राज पुरुष कैसे हो।
	२ से ५ तक	पढ़ाने-पढ़ने वाले के विषय में।
	६	विद्वानों के संग में प्रीति रखने वाले मनुष्य क्या करें।
	७	न्यायाधीश के विषय में।
	८-९	मनुष्य किसके तुल्य क्या करे।
	१०	मनुष्य कैसे दीर्घ आयु वाले हों।
	११	मनुष्य क्या करें।
	१२	कौन प्रशस्त हो।
	१३ से १७ तक	फिर कैसे राजा होवे।
२८	१-२	उपदेशक कैसा हो।
	३	पुत्र लोग कैसे हों।
	४	यह जगत् कैसा है।
	५	विद्यार्थी लोग कैसे हों।
	६	अध्यापक और उपदेशक के विषय में।
	७-८ व ११	मनुष्य क्या करें।
	९	विद्वान लोग क्या करें।
	१०	राजपुरुष क्या करें।
२९	१ से ७ तक	विद्वान के विषय में।
३०.	१	वायु और सूर्य्य के विषय में।
	२-३	सूर्य्य मण्डल के कृत्य विषय में।
	४ से ११ तक	राजपुरुषों के कर्त्तव्य विषय में।
३१	१-२	शिल्प विद्या के विषय में।
	३-४	राजा-प्रजा के विषय में।
	५	स्त्री-पुरुष के कर्त्तव्य के विषय में।
	६-७	हम मनुष्यों को क्या करना चाहिए।
३२	१	मनुष्यों का क्या कर्त्तव्य है।
	२-३	विद्वानों की मित्रता के विषय में।
	४ से ८ तक	स्त्रियों के गुणों के विषय में।
३३	१ से ८, १३ से १५ तक,	वैद्य के विषय में
	९ से ११ तक	राज पुरुष के विषय में।
	१२	विद्या अध्ययन हेतु।
३४	१-२, ५से ८, १० से १५ तक,	विद्वानों के विषय में।
	३,४ व ९	राज पुरुषों के विषय में।
३५.	१	अग्नि के विषय में।
	२	ईश्वर स्तुति के विषय में।
	३	रा मेघ के विषय में।
	४-५	विवाह के विषय में।

	६ से १२ तक	विद्वानों के विषय में।
	१३ से १५ तक	इस जगत् में कौन लोग सुख पाते हैं।
३६	१ से ६ तक	विद्वानों के गुणों सम्बन्धी।
३७	१ से ६ तक	विद्वानों के गुणों सम्बन्धी।
३८	१ से ३ तक	ईश्वर के विषय में।
	४-५	सूर्य्य लोक का विषय।
	६ से ११ तक	विद्वानों के विषय में।
३९	१	अग्नि के विषय में।
	२ से ८ तक	विद्वानों के विषय में।
४०	१	पवन के गुणों के विषय में।
	२ व ४	अग्नि के विषय में।
	३	अग्नि और वायु के विषय में।
	५ व ६	विद्वानों के गुणों के विषय में।
४१	१ व २	अध्यापक के विषय में।
	३ से ५ तक	अध्यापक और अध्येताओं के विषय में।
	६	सूर्य्य और चन्द्रमा के विषय में।
	७ से ९ तक	अग्नि और वायु के गुणों के विषय में।
	१०	सूर्य्य के विषय में।
	११ व १२	सूर्य्य प्रकरण से परमेश्वरोपसना विषयक।
	१३ से १५ तक	पढ़ाने और पढ़ने वालों के विषय में।
	१६-१७	विदुषी के विषय में।
	१८ से २९ तक	स्त्री-पुरुष के विषयक।
४२	१ से ३ तक	उपदेशक के गुणों के विषय में।
४३.	१ से ३ तक	उपदेशक के गुणों के विषय। ●

गतांक से आगे

आध्यात्मिक जिज्ञासा-समाधान

समाधानकर्ता
- आचार्य सोमदेव आर्य -
महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल
ऋषि उद्यान, अजमेर (राजस्थान)
चलभाष- ८६१९६३५३०७

जिज्ञासा- ५ः सन् १८५५ के बाद अर्थात् १४० साल व्यतीत हो जाने के बाद भी विवाह आदि संस्कार ९० से ९५% पौराणिक रीति से हो रहे हैं । यदि लग्न पत्रिका आदि की जरूरत पड़े तो वह हाथी की सूंड वाले गणेश की छपी मिलती है। क्या आर्य समाज कोई ऐसी योजना बना रहा है कि कम से कम जिला स्तर पर ऐसी पत्रिका या वैदिक कलेण्डर या पुरोहित उपलब्ध हो जाए?

इन्द्र सिंह, २९ अनाज मंडी, भिवानी

समाधान- इस विषय में आर्य समाज का कुछ प्रयत्न तो रहा है, कहीं-कहीं आर्य समाजों में बिना गणेश की लग्न पत्रिका मंत्रों से युक्त भी मिलती है। इसके लिए योजना हो सकती है जो की शीर्ष सभाओं की धर्मार्य सभा का कार्य है।

लग्न पत्रिका को तो आप व्यक्तिगत रूप से भी क्रियान्वित कर सकते हैं। कुछ काम हम अपने स्तर पर भी कर सकते हैं हमारे द्वारा किए जा सकते हैं । कुछ कार्य सभाएं ही कर सकती हैं किंतु सभाओं की आज कथा ही क्या कहें, इनको जो करना था 140 वर्षों में वह ना कर कुछ और ही कर रही है जो कि आप को व अन्य संवेदनशील आर्यों को पीड़ित करती है । ●

आध्यात्मिक जिज्ञासा-समाधान

प्रश्न- आपके

उत्तर- मूर्धन्य वैदिक विद्वान के

समस्त पाठकगणों से अनुरोध है कि आपकी ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति, पुनर्जन्म, कर्मफल व्यवस्था, मनुष्य जीवन, धर्म- संस्कृति आदि विषयों से सम्बन्धित कोई जिज्ञासा, शंका, अथवा प्रश्न हो तो लिख भेजें। आपकी जिज्ञासा, शंका अथवा प्रश्नों का समाधान वेद शास्त्रों के मर्मज्ञ मूर्धन्य विद्वान आचार्य सोमदेव जी के द्वारा प्रस्तुत किया जावेगा। अपनी जिज्ञासाएं डाक से **आचार्य सोमदेव जी आर्य**, ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड अजमेर (राज.) के पते पर भेजें। जिसकी प्रति वैदिक संसार कार्यालय के पते पर भी भेजें। एक माह में मात्र एक जिज्ञासा, शंका अथवा प्रश्न करें। **- सम्पादक**

प्रवेश-सूचना

वेदयोग महाविद्यालय (गुरुकुल)

देवयोग गुरुकुल संस्थान द्वारा संचालित-वेदयोग महाविद्यालय जो शास्त्री (बी.ए.) से आचार्य (एम.ए.) पर्यन्त महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, रोहतक हरियाणा से सम्बद्ध है। कक्षा तीसरी से लेकर बारहवीं पर्यन्त म.प्र. बोर्ड भोपाल से सम्बद्धता प्राप्त है। प्रवेश १ मई से लेकर १५ जुलाई तक, विद्यार्थी स्वस्थ, आज्ञाकारी अनुशासनप्रिय होना चाहिए। आंशिक विकलांग छात्र भी प्रवेश ले सकते हैं। यह गुरुकुल खण्डवा जिले में जावर-मून्दी-पुनासा मार्ग पर खण्डवा से २० कि.मी. दूर केहलारी ग्राम के निकट हरे-भरे वृक्षों एवं शान्त क्षेत्र में स्थित है।

सम्पर्क- प्राचार्य- सर्वेश सिद्धान्ताचार्य

चलभाष- ९१६५१६८१५८, ९१७९१८३८३३
वेब साईड-www. vedyoggurukul.in
ई-मेल- vedyoggurukul@gmail.com

श्रावणी पर्व की सार्थकता

- महात्मा चैतन्यमुनि -
महादेव, सुन्दरनगर
जिला-मण्डी , हिमाचल प्रदेश
चलभाष - ९४१८०५३०९२

अविवेक ही व्यक्ति के समस्त दुःखों का कारण माना गया है इसलिए जो भी जीवन में सुख चाहता है उसे विवेकशील होना अनिवार्य है। विवेकी बनने के लिए वेद ही सर्वोत्तम ग्रन्थ है क्योंकि वेद स्वयं परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान है। जिस प्रकार सूर्य के अभाव में अन्धकार में डूबकर व्यक्त ठोकरें खाता है ठीक इसी प्रकार वेदज्ञान के अभाव में व्यक्ति भटक जाता है। **महर्षि पतजंलि जी ने अविद्या, अस्मिता, राग, द्वैष और अभिनिवेश को क्लेश माना है तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अविद्या को ही अन्य क्लेशों का भी जनक माना है। उनके अनुसार अविद्या ही समस्त दुःखों का कारण है।** व्यक्ति, समाज, परिवार या राष्ट्र वेदानुयायी बनकर ही सुख, शान्ति और समृद्धि को प्राप्त हो सकता है। इसलिए महर्षि दयानन्द जी ने अपना कोई अलग सम्प्रदाय न चलाकर लोगों को एक ही सत् परामर्श दिया कि **'वेदों की ओर लौटो।' वेद स्वयं ही ज्ञान का पर्याय है अतः अज्ञानान्धकार का निराकरण करने के लिए वेदों का स्वाध्याय नितान्त अनिवार्य है।** वेद का मनन- चिन्तन करने के लिए प्राचीन काल से ही जन साधारण का वेद के मनीषियों के यहां जाकर ज्ञान प्राप्त करने की परम्परा रही है जो कालान्तार में जागरुकता पैदा करने के लिए वेद सप्ताह अर्थात् श्रावणी पर्व का आयोजन किया जाता है। आर्य समाज संस्था की यह विशेषता है कि यह किसी मत-मजहब को लेकर व्यक्तियों को बांटने का कार्य नहीं करती, बल्कि परमात्मा के ज्ञान वेद को लेकर समूची मानवता को एकता के सूत्र में बान्धकर तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार द्वारा व्यक्ति के चतुर्दिक विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। श्रावणी पर्व के अवसर पर वेद स्वाध्याय के प्रति लोगों में न केवल रुचि पैदा की जाती है, बल्कि इस अवसर पर बड़े-बड़े पारायण यज्ञों का भी आयोजन किया जाता है। यह एक अत्यधिक स्तुत्य प्रयास है अन्यथा आज प्राचीन संस्कृति को लोग भूलते चले जा रहे हैं और अनेक प्रकार की सम्प्रदायों में बंटकर वातावरण को स्वार्थमय तथा विषासक्त बनाते चले जा रहे हैं।

वेद हमें भौतिक और आध्यात्मिक रूप से सम्पन्नता प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। आज व्यक्ति भौतिकतावाद में इतना अधिक संलिप्त हो चुका है कि इसे प्राप्त करने के लिए वह पूरी तरह से विवेकहीन हो चुका है। अनैतिकता का सहारा लेकर व्यक्ति उन सुख-सुविधाओं को जुटाने में लगा हुआ है जिनसे तृप्ति मिलने वाली नहीं है। जो व्यक्ति को तृप्ति तक पहुंचा सकती है उस आध्यात्मिकता को सब भूलते चले जा रहे हैं। शारीरिक आवश्यकताओं की भूख इतनी अधिक बढ़ गई है कि व्यक्ति इससे आगे कुछ भी सोचने के लिए तैयार नहीं है। ये भौतिक प्रसाधन उसे अन्ततः तृप्ति देने वाले नहीं है इस सत्य का भी उसे पग-पग पर आभास होता रहता है, मगर मृगतृष्णा रूपी भटकाव में वह निरन्तर भटकता चला जा रहा है। ये सांसारिक भोग उसे हर बार चेतावनी देते हैं कि हम में तुम्हें तृप्त करने की सामर्थ्य नहीं है, मगर व्यक्ति बार-बार भोगों में डूबकर और अतृप्त होकर भी वहीं तृप्ति खोज रहा है जहां वह है ही नहीं। वह इस जीवन रूपी चौराहे पर खाली का खाली खड़ा है...अतृप्त है...रो भी रहा है...तड़प भी रहा है, मगर पुनः-पुनः भौतिक भोगों की आग में स्वयं को झोंकता भी चला जा रहा है। उसकी स्थिति ठीक इस प्रकार की हो गई है मानों कोई अपनी हथेली पर आग का अंगारा लेकर खड़ा हुआ हो, उसे छोड़ने के लिए भी तैयार नहीं है और उसकी जलन के कारण तड़प भी रहा हो। वह इतना भी ज्ञान नहीं रखता कि जलन देने वाली अग्नि को तो उसने स्वयं ही पकड़ रखा है। इस त्रासदी से आज अधिकतर लोग रूबरू हो रहे हैं। ऐसे ही लोगों को सम्बोधित करते हुए मानो वेद कहता है-

अन्ति सन्तं न जहाति अन्ति सन्तं न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।। अथर्व. १०/८/३२

अर्थात् पास बैठे हुए को छोड़ता नहीं, पास बैठे हुए को देखता नहीं। अरे उस परम पिता परमात्मा के काव्य वेद को देखकर जो न कभी मरता है और न कभी पुराना होता है। इस मन्त्र के भावों का यदि हम गहराई से मनन करें तो हमारे जीवन का कांटा ही बदल सकता है। संक्षिप्तता से इसका भाव हम इस प्रकार समझ सकते हैं कि परमात्मा के काव्य अर्थात् प्रकृति और वेद ज्ञान के सम्यक अध्ययन से हम इस तथ्य को जान लें कि इस प्रकृति में सुख तो है मगर आनन्द नहीं है। यदि वास्तविक आनन्द का पान करना है तो शारीरिक एवं भौतिक सृष्टि में उसकी तलाश छोड़कर उसे आध्यात्मिकता में खोजना होगा। आत्मा को उसकी वास्तविक खुराक मिलने पर ही तृप्ति मिल सकती है। इसलिए वेद मन्त्र हमें चेतावनी देते हुए कह रहा है कि यदि तुम सुख और आनन्द चाहते हो तो परमात्मा के शाश्वत नियमों का अवलोकन करके आत्मा रूपी रथी के इस रथ को परमात्मा की ओर मोड़ना होगा। परमात्मा के सान्निध्य में जाकर ही तुझे परम शान्ति और तृप्ति मिल सकती है।

हमारा वेद सप्ताह मनाने का उद्देश्य भी यही होना चाहिए कि हम जीवन की पगडण्डी पर चलते-चलते अचानक जिन झाड़-झंखाड़ों में उलझ गए है उनसे निकलने के लिए वेद ज्ञान को व्यावहारिकता में लाएं। आज समाज, राष्ट्र और समूचा विश्व आतंक और भय के वातावरण से गुजर रहा है। कुछ वर्ष पूर्व जो सौहार्द्र और प्रेम का वातावरण था वह लुप्तप्राय ही हो गया है। मानव इतना हृदयहीन हो गया है कि जहां उसे दूसरों का उपकार करने से प्रसन्नता होती थी आज वह अपकार करके प्रसन्न होने लगा है। अलगाववाद, मजहबवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद और सम्प्रदायवाद के काले बादल हमारे चारों ओर मंडरा रहे हैं। कब किसके घर पर बिजली गिर जाए कुछ पता नहीं। इन समस्याओं का समाधान

खोजा तो जा रहा है मगर स्थिति यह है कि मरज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की। हम अपने ही देश को लें। यहां पर प्रत्येक नेता या दल अपनी-अपनी वोट की राजनीति खेल रहा है, राष्ट्र के सामूहिक विकास की किसी को चिन्ता नहीं है। तुष्टिकरण और वोट की राजनीति ने ऐसी दीवारें खड़ी कर दी है जो दिन-प्रतिदिन और भी अधिक ऊंची होती चली जा रही है। **चाहे व्यक्तिगत हों, परिवार और समाज तथा देश की हो सभी समस्याओं का समाधान हमें वेद में मिल सकता है, क्योंकि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। सत्य एक ऐसी रामबाण औषधि है जिससे सभी रोग समाप्त हो सकते हैं। वेद हमें सत्य की कसौटी पर रहकर जीना सिखाता है।** हमारे साथ समस्या यही है कि हमने झूठ का सहारा ले रखा है तथा एक झूठ को सही ठहराने के लिए हम एक और झूठ का सहारा ले रहे हैं। इस प्रकार इन झूठों के अम्बार तले हम दब गए हैं। हमें इस बात की गांठ बांध लेना चाहिए कि झूठ के सहारे हमारा किसी भी क्षेत्र में उत्थान नहीं हो सकता है। यह ठीक है कि जैसे रोगी को कड़वी दवाई खाने में तो अच्छी नहीं लगती है, मगर उसका परिणाम सुखद होता है। ठीक इसी प्रकार वेद के सत्य पर चलना हमें पहले तो बहुत अटपटा और अव्यवहारिक लग सकता है, क्योंकि हमें अपने-अपने स्वार्थ के दायरों में सिमटकर जीने की आदत पड़ गई है। मगर वास्तविकता यह है कि हमें अपने-अपने संकुचित दायरों से बाहर निकलकर सत्यता को स्वीकार करना होगा। क्योंकि सत्य की सोच ही अन्ततः ठीक होती है। वेद हमें सत्य के साथ जुड़ने की ही प्रेरणा देता है।

सर्वप्रथम हम इसी बात का चिन्तन करते हैं कि मानव-मानव के भीतर ये दूरियां क्यों बढ़ती चली जा रही है। होता यह है कि अपने तप, त्याग और साधना से कोई भी व्यक्ति जब उच्चतम स्तरों को छू लेता है तो उसके बहुत से अनुयायी भी बन जाते हैं मगर ये अनुयायी उन आदर्शों पर चल नहीं पाते हैं मगर मात्र लकीर से फकीर बन जाते हैं। उसी महापुरुष ने जिस तप और त्याग से जीवन की ऊंचाईयों को छुआ था उस प्रक्रिया को नजर अन्दाज करके उस महापुरुष की ही पूजा-अर्चना शुरू कर दी जाती है। **आज हमारे समाज में ऐसे पैगम्बरों, अवतारों और गुरुओं की मानों बाढ़-सी आ गई है। गुरु होना तो बुरी बात नहीं, मगर गुरुडम प्रथा ने इस समाज का बहुत अहित किया है। इससे मानवीय एकता को बहुत बड़ा धक्का लगा है तथा परमात्मा के स्थान पर व्यक्तियों की पूजा होने लगी है। इस व्यक्ति पूजा ने अन्य अनेक प्रकार की कुरीतियों को भी जन्म दिया है। अलग-अलग नामों और पूजा पद्धतियों ने एक मानव धर्म को अनेक सम्प्रदायों में बांट दिया है। यह एक अटल सत्य है कि कोई भी महापुरुष परमात्मा नहीं बन सकता और अल्प ज्ञानी होने के कारण ही उसके द्वारा दिया गया ज्ञान निर्भ्रान्त और पूर्णतया सत्य नहीं हो सकता है।** मगर आज जैसे मानों अन्धे ही अन्धों को रास्ता दिखा रहे हैं इसलिए अज्ञानता के गडढे में गिरकर चतुर्दिक विनाश हो रहा है। **तथाकथित इन भगवानों की भीड़ में परमात्मा कही खो गया लगता है** और मत-मजहब एवं सम्प्रदायों की अज्ञानता में मानवीय गुणों का ह्रास हुआ है। एक सामूहिक सोच जिससे हमारी चतुर्दिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होना था, विलुप्त हो गई है।

आज इस बात की परम आवश्यकता है कि मानव मूल्यों की पुनः **स्थापना करने के लिए एक सामूहिक सोच का विकास किया जाए जो वेद के आधार पर ही हो सकती है क्योंकि वेद पूर्णतया सार्वभौमिक और परमात्मा की सत्यवाणी है।** जिस परमात्मा को लोगों ने व्यक्तिवाद, देवी-देवतावाद तथा स्थान विशेष की काराओं में कैद कर दिया है उसके बारे में वेद कहता है-

इशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम् ।। यजु. ४०/१

मन्त्र में आदेश दिया गया है कि हमें उस एक परम पिता की उपासना करनी चाहिए जो सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है। वही इस संसार का सृजनकर्ता और संचालक है। वही समस्त संपदाओं का स्वामी भी है इसलिए उसकी दी हुई वस्तुओं का अनासक्ति अर्थात् त्याग भाव से भोग करना अपेक्षित है, क्योंकि अन्ततः यह सब कुछ उसी पिता का है।

मन्त्र में बहुत ही व्यवहारिक बात कह दी गई है। परमात्मा किसी स्थान विशेष में नहीं है बल्कि वह सर्वव्यापक है और समस्त संपदा का मालिक भी वहीं है। यह सब कुछ तो हमें मात्र प्रयोग करने के लिए दिया गया है ताकि हम अपने जीवन को सार्थकता प्रदान कर सके। **मन्त्र के भावों को आत्मसात् करने से जहां एक परमात्मा की आराधना का प्रचलन होकर मानवीय एकता को आधार मिलेगा वहीं दूसरी ओर आज मेरा-मेरी का जो वातावरण बना है उससे भी समाज को मुक्ति मिल सकती है। लोभ के कारण ही व्यक्ति दूसरे की वस्तु को चुराने का प्रयास करता है। इसी लोभ के कारण वह सांसारिक वस्तुओं के साथ अपनी आसक्ति भी जोड़ देता है जो व्यक्ति के दुःख का मुख्य कारण है। जब व्यक्ति मन्त्र के तथ्य को आधार मानकर अनासक्त भाव से समस्त वस्तुओं का प्रयोग करेगा तो यह अनासक्ति ही उसे आनन्द और वास्तविक सुख तक पहुंचा सकेगी। त्याग और अलोभ की वृत्ति पैदा होने पर ही व्यक्ति परोपकारी बन सकता है।** जो परोपकारी होगा उसका चिन्तन वयष्टि से समष्टि की ओर उन्मुख हो जाएगा तथा उसके हृदय में ही समूची मानवता के हित की बात आ सकेगी। फिर उसके हाथ किसी की सम्पत्ति चुराने या उसे मारने के लिए नहीं उठेंगे, बल्कि सहयोग के लिए ही उसके हाथ आगे बढ़ेंगे। इस प्रकार की ऐषणाओं से ऊपर

उठकर जब वह एक परमपिता की उपासना करेगा तो उसके भीतर इस सत्य का उदय भी होगा कि परमात्मा के नाम पर मैंने जो दीवारें खड़ी कर दी थी वे वास्तव में कितनी बचकानी और अहितकारी थीं। वह इस संकीर्णता से ऊपर उठेगा कि मेरा मजहब, मेरी जाति, मेरा सम्प्रदाय या मेरा गुरु ही सबसे बड़ा है...इसके स्थान पर वह वास्तविक आध्यात्म की ऊंचाइयों को छूकर श्रेष्ठ मानव बनकर अपना और समूची मानवता का हित करने की दिशा में स्वाभाविक रूप से अग्रसर हो सकेगा। वह परमात्मा ही वास्तव में सृष्टि का सृजन करने वाला और मालिक है वेद में अन्य अनेक ऐसे बहुत से मन्त्र है **यथा ...भूतस्य जातः पतिरेक** आसीत् ।। (यजु. १३-४) अर्थात् समस्त प्राणीमात्र का पति (स्वामी) वह परमपिता परमात्मा ही है और वह अनेक नहीं बल्कि एक है और एक ही रहेगा...वेद की यह शिक्षा हमें एकता के सूत्र में बांध सकती है और भगवानों के नाम पर बंटने की कुप्रवृत्ति से मुक्ति दिला सकती है। भगवानों का भगवान और गुरुओं का गुरु वह परमात्मा ही है। एक वही उपास्य है और उसी की उपासना करनी चाहिए। लोक-परलोक की उन्नति का आधार यही है...व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र की सुख-शान्ति एवं समृद्धि का यही मूलमन्त्र है। हम सभी एक ही जाति अर्थात् मनुष्य जाति के हैं और वही परमात्मा हमारा पिता है।

हम कैसे पुत्र है जो पिता को भी भूलते जा रहे हैं। वेद में बहुत ही सुन्दर शब्दों में कहा गया है- **त्वं हि नःपिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अथा ते सुम्नमीमहे।। (साम. ४-२-१३-२) स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये।। (ऋ.१-१-९)** अर्थात् वह परमात्मा ही हमारा माता-पिता और सुख शान्ति तथा प्रसन्नता देने वाला है। वह हमारा ऐसा पिता है जिसकी पावन गोद हमें सहजता से उपलब्ध है। वह निरन्तर अपने स्नेह की हम पर वर्षा कर रहा है...मात्र उसे पहचानकर उसकी गोद में बैठ जाने की जरूरत है मगर पता नहीं हमारे भीतर कब विवेक पैदा होगा तथा हम भौतिकतावाद की इस अन्धी दौड़ से मुक्त होकर उस आनन्दमयी गोद में बैठकर चिर तृप्ति को प्राप्त करेंगे। ऐसा होने से ही व्यक्ति के भीतर वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना पैदा हो सकेगी तथा मानववाद की स्थापना होकर प्रेम और सौहार्द्र की पवित्र गंगा बहेगी। जिस दिन संसार के सभी व्यक्ति अपने उस एक असली पिता को पहचान जाएंगे उसी दिन मजहबवाद से मुक्त होकर एक वैदिक धर्म की शरण में आकर आनन्दित हो सकेगा। जब तक हम इस अनुभूति से नहीं गुजरेंगे तब तक भला एक कुटुम्ब की भावना कैसे पैदा हो सकेगी? जिस राष्ट्र के लोग एक राष्ट्रपति को मान्यता देकर उसके नियमानुसार चलते हैं वहीं पर अच्छी व्यवस्था और शान्ति बनी रह सकती है उसी प्रकार यदि हम सुख-शान्ति और भाईचारा चाहते हैं तो इस संसार का भी हमें एक ही पति मानना अनिवार्य है। एक ही राष्ट्र में जहां दो दो राष्ट्रपति बन जाएं वहां पर संघर्ष तो अनिवार्य रूप से हो ही जाता है। समूचे विश्व या देश में केवल बैठकों या नारों से एकता स्थापित नहीं हो सकती है। इसके लिए तो ठोस प्रयास करने होंगे। वोट की गोटियां खेलने वालों द्वारा भी एकता और भाईचारा स्थापित नहीं हो सकता है। यदि वास्तव में ही हम एकता स्थापित करना चाहते हैं तो वेद की शरण में ही जाना होगा। जहां कहा गया है-

सं गच्छध्वं सं वद्ध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथापूर्वे संजानाना उपासते।। (ऋ. १०-१९-२)

अर्थात् हम सभी मिलकर चलें, मिलकर बोले, हमारे मन एक हों जिस प्रकार हमारे पूर्वज देवत्व से परिपूर्ण होकर अपने-अपने अधिकार क्षेत्र में रहकर जीते थे, हम भी उन्हीं का अनुसरण करें। यह ऋग्वेद के संगठन सूक्त का मात्र एक मन्त्र दिया गया। वास्तव में पूरा सूक्त हमें प्रेम और सौहार्द्र के साथ मिल-जुलकर रहने की शिक्षा देता है। इन भावों को यदि सभी लोग आत्मसात् कर लें तो आज की आपाधापी में भी स्वर्ग-सा सुन्दर वातावरण बन सकता है। यह मन्त्र परिवार, समाज, राष्ट्र और समूचे विश्व को एकता का महान् सन्देश दे रहा है। यदि हम मिलकर चलेंगे, मिल बैठकर विचार करेंगे, हमारी वाणी में एकता अर्थात् कथनी-करनी समान होगी तो हमारे मन भी निश्चित रूप से मिलेंगे। जब तक न तो हमारे मन मिलें, न हमारी आवाज और विचार मिलें तब तक एकता की बात करना मात्र दिवास्वप्न ही है। जो लोग अनेकता में एकता का नारा लगाते हैं उनसे कदापि एकता स्थापित नहीं हो सकेगी। ऐसे लोग स्वयं धोखे में रहकर औरों को भी धोखा दे रहे हैं। हम तो एकता में ही एकता के स्थापन की व्यवहारिक बात करने वालों में है।

यदि मात्र औपचारिकता भर निभाने के लिए न मनाया जाए तो हमारे यहां का प्रत्येक पर्व एक दिव्य सन्देश देता है और मैं समझता हूं कि **श्रावणी पर्व को तो एक राष्ट्रीय पर्व घोषित किया जाना चाहिए, क्योंकि यह पर्व किसी प्रकार के सम्प्रदाय की बात नहीं करता है, बल्कि इसका लक्ष्य है कि हम परमात्मा की वेदवाणी की मनन-चिन्तन करें और तद्वत् अपने-अपने जीवन का निर्माण करें। वेद स्वयं ज्ञान का प्रतीक है और ज्ञान रूपी आंख हम जब तक अपने भीतर पैदा नहीं करेंगे तब तक निश्चित रूप से अज्ञानान्धकार में भटककर अनेक प्रकार के दुःख और कष्ट भोगते रहेंगे। केवल वेद का सन्देश ही सार्वभौमिक और सार्वकालिक है इसलिए इसी को आधार मानकर आज के विषासक्त वातावरण से निजात पाई जा सकती है। अन्य कोई मार्ग नहीं है। सत्य से बढ़कर और कोई धर्म नहीं है और वेद ही सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है** अतः आज की प्रत्येक समस्या का समाधान हमें वेद में ही ढूंढना होगा। वेद ही समूची मानवता को एक सूत्र में पिरौने की संजीवनी देने वाला ज्ञान है। असत्य का त्याग और सत्य का ग्रहण करना ही व्यक्ति के विकास का आधार है इसलिए आज वेद के सत्य को हृदय से स्वीकारने की जरूरत है। श्रावणी पर्व की सार्थकता इसी में है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को सत्य के पक्ष में करके आध्यात्मिकता की ऊंचाइयों को छूकर अपना और समूचे विश्व के चतुर्दिक विकास का मार्ग प्रशस्त करें। हम वेद के आधार पर आज की दिशाहीन मानवता को कुछ स्वर्णिम आयामों तक पहुंचाने की दिशा में कुछ सार्थक कार्य करके पुण्य के भागी बन सकते हैं। बस इसी भावना को आत्मसात् करना ही इस पर्व का दिव्य सन्देश है। ●

महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश के पञ्चम समुल्लास में संन्यास की आवश्यकता बताते हुए लिखते हैं कि जैसे शरीर में सिर की आवश्यकता है वैसे ही आश्रमों में संन्यास की आवश्यकता है। क्योंकि इसके बिना विद्या, धर्म कभी नहीं बढ़ सकता और दूसरे आश्रमों को विद्याग्रहण, गृहकृत्य और तपश्चर्यादि का सम्बन्ध होने से अवकाश बहुत कम मिलता है। पक्षपात छोड़कर वर्तना दूसरे आश्रमों को दुष्कर है। जैसा संन्यासी सर्वतोमुक्त होकर जगत् का उपकार कर सकता है, वैसे अन्य आश्रम नहीं कर सकता।

संन्यास ग्रहण करना ब्राह्मण का ही अधिकार है, मनु का प्रमाण भी है कि- **एष वोऽभिहितो धर्मो ब्राह्मणस्य चतुर्विधः** मनु. ६-१७॥ अर्थात् यह चार प्रकार अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम करना ब्राह्मण का धर्म है। परन्तु जो सब वर्णों में पूर्ण विद्वान, धार्मिक, परोपकार प्रिय मनुष्य है उसी का 'ब्राह्मण' नाम है। यहां विद्वानों को ही ब्राह्मण कहा है-, अविद्वान को नहीं। चाणक्य ने कहा है कि-

'विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्य कदाचन।
स्वदेशे पूज्येते राजा, विद्वान सर्वत्र पूज्यते॥

विद्वानों को भी वेद पथ से पृथक नहीं होना चाहिए। अथर्व वेद में आज्ञा है कि-

मा प्रगाम पथो वयं मा यज्ञान्द्रि सोमिनः
मान्त स्थुनो अरातयः॥अ. १३.१.५९ मई)

अर्थात्- हम वेदपथ को न त्यागें। यज्ञ (देवपूजा, दान और संगीतकरण) आदि शुभ कार्मों को न छोड़े। अदानियों को अपने मध्य उत्पन्न न होने दें। मनु महाराज के अनुसार संन्यासी का धर्म है कि-

इन्द्रियाणां निरोधेन राग द्वेषक्षपेण च।
अहिंसया च भूतानाम मृतत्वाय कल्पते॥ मनु. ६.६०॥

अर्थात् - इन्द्रियों को अधर्माचरण से रोक, राग-द्वेष को छोड़ सब प्राणियों से निर्वेर वर्त्तकर, मोक्ष के लिए सामर्थ बढ़ाया करें।

ऐसा ही कथन गीता में कहा है कि-

सेयः स नित्य संन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति।
निद्वन्द्वो हि महाबाहो सुख बन्धात्प्रमुच्यते॥ गीता- ३-३॥

अर्थात् - जो मनुष्य न तो कर्म फलों से घृणा करता है अर्थात् जीवन में प्राप्त सुख व दुःख में सहज भाव से रहता है, और न कर्मफल की इच्छा करता है, अर्थात् निःश्रेयस कर्म करता है वह सदैव संन्यासी जाना जाता है। हे महाबलशाली अर्जुन! ऐसा मनुष्य समस्त द्वन्द्वों से रहित होकर सब बन्धनों को पार कर पूर्णतया मुक्त हो जाता है।

अतः संन्यासी का मुख्य कर्म स्वार्थ रहित परोपकार करना है। परोपकारी को ऋषि कहा गया है- **ऋषिः स यो मनुर्हितः।**

वृक्ष कबहू न फल चाखे, नदी न सिंचय नीर।
परमारथ के कारण संतन धरा शरीर॥ कबीर जी॥

संन्यासी को विनम्र स्वभावी होना चाहिए। क्रोध ज्ञान को हर लेता है। कहा भी है कि-

नमन्ति फलनोवृक्षाः नमन्ति गुणिनो जनाः।
शुष्कवृक्षाश्च मूर्खाश्च न नमन्ति कदाचन॥
और - अधनाः. धन मिच्छति, धनं मानं च मध्यमाः।

संन्यासी

- स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती -
आश्रम-११६, गान्धी नगर, मथुरा (उ.प्र.)
चलभाष- ९८६८७२०७३९

उत्तमा मानमिच्छन्ति मानो हि महतां धनम् ॥

अर्थात् - उत्तम पुरुषों के लिए मान सत्कार ही सबसे बड़ा धन है। संन्यासी का मान होने से अन्य विद्वानों को संन्यास ग्रहण करने की प्रेरणा मिलती है।

संन्यासी को मृदुभाषी होना आवश्यक है क्योंकि-

संसार विष वृक्षस्य द्वे फले अमृतोपमे।
सुभाषित च सुस्वादः सङ्गति सज्जने जने॥

अर्थात् - इस विष रूपी संसार के दो फल ही अमृत के समान हैं। एक मधुरता के साथ मीठी कल्याणकरी वाणी बोलना और दूसरा उत्तम

मैं मानवता का पाठ पढ़ाऊंगा

मैं मानवता का पाठ पढ़ाऊंगा।
मैं दानवता का नाश कराऊंगा॥
जो भारत देश में कुछ धूर्त हो रहे हैं।
निर्दोष बन्धुओं को कत्ल कर रहे हैं॥
सुता मां-बहनों का अनादर कर रहे हैं।
केवल अपने स्वार्थ के लिए जी रहे हैं॥
ऐसे लोगों को राष्ट्र से भगाऊंगा।
मैं दानवता का नाश कराऊंगा॥
जो भारत देश को अपना नहीं माने।
खुद को न जाने और न दूसरों को पहचानें॥
अपने स्वार्थ में अन्यों को सताते रहते।
स्वयं नहीं चलते और न दूसरों को चलने देते॥
मैं ऐसे दुष्ट लोगों को देश से भगाऊंगा।
मैं दानवता का नाश कराऊंगा॥
।शठे-शाठ्यम समाचरेत् का पाठ पढ़ते हैं हम।
दिवाकर और शशि की तरह आगे बढ़ते है हम॥
दुश्मनों को हम कभी छोड़ेंगे नहीं बन्धुओं।
उनका नामोनिशान मिटा देंगे बन्धुओं॥
मैं सबको सत्यार्थ प्रकाश पढ़ाऊंगा।
मैं दानवता का नाश कराऊंगा॥

डॉ. रवीन्द्र कुमार शास्त्री 'सोम'
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद, हरियाणा
चलभाष ८७००६४०७३६

सज्जनों की संगति करना। अर्थात् संन्यासी को मूर्ख और दुष्ट मनुष्यों से दूर रहना चाहिए।

वर्तमान में आर्य समाज के विद्वान उपरोक्त उपदेश तो करते हैं, परन्तु स्वयं अपने व्यवहार में नहीं लाते। कई विद्वान ६० वर्ष से अधिक की आयु प्राप्त कर चुके हैं, लेकिन संन्यास ग्रहण करने की इच्छा नहीं रखते। इसी कारण श्रोताजन उन्हें मिथ्यावादी कहते हैं और उनके उपदेशों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अगर कोई उनसे कारण पूछता है तो कहते हैं हम संन्यासी जीवन जी रहे हैं, जबकि दक्षिणा पहले ही तय करके उपदेश नहीं करने जाते हैं और विद्वान संन्यासियों व वानप्रस्थियों को उपदेश नहीं करन देते।

अत: ऐसे विद्वान महर्षि दयानन्द के उपरोक्त वेद सम्मत विचारों के विरुद्ध स्वेच्छाचारी ही रहते हैं। इसी परिस्थिति में अविद्वानों को ही संन्यास ग्रहण करा कर उन्हें उपदेशनार्थ प्रशिक्षित करना ही एकमात्र उपाय है, परन्तु संन्यासियों से द्वेष रखने वाले विद्वान कहते हैं कि सन्यासी को अपने परिवार में नहीं जाना चाहिए। जबकि वेद या ऋषि ग्रन्थों में ऐसा कहीं भी निषेध नहीं है। वास्तव में ऐसा वही कहते हैं जो स्वयं संन्यास तो ग्रहण नहीं करते और संन्यास ग्रहण कर लिया तो संन्यास धर्म का पालन नहीं करते।

महर्षि दयानन्द ने संस्कार विधि के ग्रहाश्रम संस्कार के प्रमाण में लिखा है कि-

इहैव स्तं मा वि योष्टं विश्वमाथुर्व्यश्नुतम् ।
क्रीड़न्तो पुत्रैर्नप्तृीय र्मोदमानौ स्वे गृहे।। ऋ. १०.८५. ४२।।

अर्थ- हे स्त्री और पुरुष मैं परमेश्वर आज्ञा देता हूं कि जो तुम्हारे लिए पूर्व विवाह में प्रतिज्ञा हो चुकी है, जिसको तुम दोनों ने स्वीकार किया है (**इहैव**) इसी में (**स्तम्**) तत्पर रहो (**मा वियोष्टम्**) इस प्रतिज्ञा से विमुक्त न हो ओ (**विश्वमायुर्व्यश्नुतम्**) ऋतुगामी होके सम्पूर्ण आयु जो १०० वर्ष से कम नहीं है उसको प्राप्त होओ और पूर्वोत्तर धर्म रीति से (पुत्रै:) पुत्रों और (**नप्तृभि:**) नातियों के साथ (**क्रीडन्तो**) क्रीड़ा करते हुए (**स्वे ग्रहे**) उत्तम ग्रह वाले (**मोदमानौ**) आनन्दित होकर ग्रहाश्रम में प्रीतिपूर्वक वास करो।

क्या संन्यास ग्रहण कर परिवार में न जाने का सम्बन्ध न रखने से विवाह की प्रतिज्ञाओं और इस मन्त्र में ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन नहीं होगा। अवश्य ही परिवार से सम्बन्ध तोड़ना वेद विरुद्ध होगा।

संन्यास धर्म में भी संन्यासी का धर्म पक्षपात रहित परोपकार करना है, तब परिवार के पुत्र, पौत्र, पत्नि आदि का उपकार न करे? अवश्य करें क्योंकि परिवार से उसका नाम सदैव जुड़ा रहेगा।

परिवार से सम्बन्ध विच्छेद करने पर वेद आज्ञा का उल्लंघन होगा और मानव समाज उसे दोषी ठहरायेगा।

देखने में आया है कि जिन पुरुषों ने ग्रहस्थ नहीं भोगा वे भी वृद्धावस्था आने पर परिवार वालों पर ही आश्रित रहे हैं कोई अन्य क्यों कर सेवा करेगा?

अत: संन्यासी को यही उचित है कि वह स्वजनों से सम्बन्ध बनाए रखे, परन्तु त्याग भाव से, आसक्त होकर नहीं, क्योंकि अन्त में तो सबको छोड़ना ही पड़ता है। इस लेख के विरुद्ध किसी विद्वान के पास कोई वेद प्रमाण हो तो नि:संकोच सूचित करें। ●

अथ मनु महिमा

मन से मनु ने मनन सिखाया बिना दर्प कन्दर्प किया।
मौन मनस्वी मुनि ने जग को मानव दर्शन पूर्ण दिया।
मनु से मनसिज हार गया, मनु[1] से ही मानव महामना,
मनु से मान्य मुनिश्वर सारे दिव्य मनीष वितान तना।।

मनु ने मनोयोग सिखलाया, ताकि मिले भवमय भजन,
मनु से पूरे हुए मनोरथ रत्न मिले जनमन रंजन।
मनु के मन्त्रों से ही मन्त्री नरपति मान्य बने हैं,
मनु की कर्मव्यवस्था से भू पर धन धान्य बने हैं।।

जो अनुसधित हुआ तर्क से वही धर्म शरधनु है,
सम्प्रदाय में जलते जग तेरा उपाय तो मनु है।
मनु है मूल पुरुष सबका पर मनु का मूल मनुर्भव[2] है।
ऋचा- ऋचा हैं प्रेम पताका जग की उन्नति सम्भव है।।

मनु को मान मान्य मानव दानव बनने से बचता था,
गुण कर्मों की कितनी सुन्दर अमर अल्पना रचता था।
अब तो मूक प्राणियों की ही कब्र तुम्हारे उदर बने,
मनु को भूल दनुजता के ये नग्न नाच के नगर बने।।

मनु के बिना कहां वेदों की महिमा मण्डित होती,
कैसे दुष्ट दानवों की दुष्कृतियां दण्डित होती।
मनु न होते कैसे नारी पूजित पण्डित होती,
मनु न होते तो हां सचमुच गीता[3] खण्डित होती।।

धर्म द्रोहियों, देशद्रोहियों, नीचों की करतूतें काली,
जय[4] में मनु में जाली रचना कितनी अधिक मिला डाली।
मनु को मूल रूप में मानव एक बार तो पढ़ लेना,
फिर चाहो तो चौराहे पर चढ़ाकर फांसी दे देना।।

कितने फुले फले-फूले कई भीम धराशायी होंगे,
सद्गुण संस्कारों के जग में मनु के सभी शरण होंगे।
मनु ने काल नाप डाला है, मनु के ये मन्वन्तर हैं,
मनोजयी मनु कालजयी के कोटि-कोटि संवत्सर हैं।।

जब तक है यह अवनी अम्बर गंगौत्री गिरिमाल हिमा।
जब तक है मानव तब तक क्यों होगी इति मनु की महिमा।।

टिप्पणियां- १. यस्तर्केणानुसंधते सधर्मोवेद नेतर: (मनु)
२. मनुष्य बनो (ऋग्वेद)
३. गीता में मनु के कई श्लोक हैं।
४. जय-महाभारत का मूल नाम

- रमेशचन्द्र चौहान
२६२, पार्श्वनाथ नगर,
इन्दौर (म.प्र.)
चलभाष - ९८२६०-३१३४९

प्रेरणास्पद व्यक्तित्व- श्री आर.सी. आर्य, जेल अधीक्षक, इन्दौर

श्रीमान आर.सी. आर्य सुपुत्र श्री भीमसिंह जी आर्य, निवासी-भीमकुण्ड, तह.- थांदला, जिला-झाबुआ, मध्यप्रदेश। वर्तमान में केन्द्रीय जेल इंदौर में जेल अधीक्षक पद पर अपनी सेवा दे रहे हैं।

विनम्रता, सहजता, सरलता, दयाभाव, सेवाभाव, कर्मठ, स्वच्छ छवि, प्रेरणास्पद व्यक्तित्व के धनी आर्य जी को वैदिक धर्म सिद्धान्त विरासत रूप में प्राप्त हुए हैं। जिसका श्रेय झाबुआ-बांसवाड़ा क्षेत्र के अति पिछड़े दूरस्थ क्षेत्र में अति निर्धन वनवासियों को विधर्मियों के शिक्षा-सेवा आदि के माध्यम से धर्मान्तरण के कुचक्र से बचाकर उनके मध्य चटनी रोटी खाकर शिक्षा-संस्कार तथा वैदिक धर्म पुनर्जागरण के लिए जीवन खपा देने वाले वीतराग संन्यासी स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज को जाता है।

दिनांक २१ मार्च १९५७ को आपका जन्म हुआ। आपके परिवार में आपके पिताजी तथा दो माताएं (सगी बहनें) होकर आप १७ भाई-बहनों में सबसे ज्येष्ठ हैं।

आपका विवाह दिनांक २६ जनवरी १९८९ को श्री ब्रजकिशोर जी श्रीवास्तव की सुपुत्री सुश्री रश्मि जी से आर्य समाज जबलपुर में सम्पन्न हुआ। आपके साले साहब श्री अंजनी कुमार आर्य बरगी बांध परियोजना में एस.डी.ओ. के पद पर सेवा उपरान्त सेवानिवृत्त हो चुके हैं।

आपके तीन सुपुत्र चि. रश्मिक रत्न आर्य, बी.ए.एल.एल.बी. , चि. रक्षित प्रकाश आर्य, एम.बी.ए. मार्केटिंग, चि. ऋत्विक कुमार आर्य एम.वी. एम.एस. अध्ययनरत हैं।

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम बांसवाड़ा (राज.) को अपना जीवन समर्पित करने वाले आर्य जगत् की सुप्रसिद्ध विभूति आचार्य जीववर्धनजी शास्त्री को आपकी छोटी बहन श्रीमती भाग्यवन्ती जी ब्याही गई हैं।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा आपके जन्म ग्राम में हुई। प्रारम्भिक शिक्षा के बाद आप छठी से ग्यारहवीं (हायर सेकेण्डरी) तक महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थान्दला में रहे। जहां आपने अपनी शिक्षा के साथ-साथ वैदिक सिद्धान्तों तथा देशसेवा का पाठ पढ़ा। आगे उच्च शिक्षा हेतु आप श्री रामकृष्ण जी बजाज जो रेलवे में सेवारत थे और जिनका जीवन वैदिक धर्म प्रचार के साथ-साथ महर्षि दयानन्द सेवाश्रम को सेवा कार्यों को समर्पित रहा की प्रेरणा से रीवा के शासकीय महाविद्यालय में मैकेनिकल इंजीनियरिंग में प्रवेश लिया। इंजीनियरिंग के पश्चात् आपने पी.एस.सी. की परीक्षा उत्तीर्ण कर जेल प्रशासन विभाग में सहायक जेलर के रूप में उज्जैन जेल में पदस्थ हुए। सहायक जेलर से कर्मक्षेत्र की शुरुआत कर कर्त्तव्य निष्ठा के बूते पर पदोन्नत होकर उप अधीक्षक के रूप में शाजापुर, झाबुआ, इन्दौर, अलिराजपुर में सेवाएं देते हुए जेल अधीक्षक के पद पर पदोन्नत होकर दिसम्बर २०१६ में पुनः इन्दौर आए। कुछ समय के लिए आपका सेवाकाल रतलाम तथा धार में भी रहा। वर्तमान में लगभग २००० कैदियों की क्षमता वाली केन्द्रीय जेल जिसमें अधिकांश आजीवन कारावास दण्ड प्राप्त, कुख्यात अपराधिक पृष्ठभूमि के हैं पर कुशलतापूर्वक अपनी सेवाएं दे रहे हैं। यह जेल ऐसी है जहां पर कपड़े की बुनाई, स्टेशनरी, प्रिंटिंग, बर्तन बनाने का कारखाना, चमड़े के बैग आदि सामान का निर्माण आदि अनेक कार्य व्यापक स्तर पर बंदियों से करवाये जाते हैं।

अपराधियों-बन्दियों पर कठोरतापूर्वक नियमानुकूल नियंत्रण के साथ उनके लिए आपके अर्न्तमन में एक सहानुभूति भी होती है तथा आपका प्रयास होता है कि उनमें सुधार किया जावे इस दिशा में भी आप प्रयासरत रहते हैं। जब आप उप अधीक्षक के रूप में पदस्थ थे तब आपके प्रयासों से डॉ. सोमदेव जी शास्त्री मुम्बई का इन्दौर प्रवास के समय जेल में कैदियों के मध्य यज्ञ-सत्संग का आयोजन करवाया गया था। वैदिक धर्म के विद्वान जब भी इन्दौर क्षेत्र में पधारे वे अपनी समय सुविधा तथा इच्छानुसार जेल में बंदियों के मध्य अपना प्रवचन शिक्षा आदि देकर इन भूले-भटके मानवों को भी मानवीयता की राह पर लाने के लिए अपना योगदान दे सकते हैं। उनका स्वागत आर्य जी की ओर से रहेगा यह उनकी भावना है। इतने महत्वपूर्ण उच्च पद पर आसीन, व्यस्त जीवन के उपरान्त भी आप को अहंकार छू तक नहीं गया है। जब भी किसी आयोजन में आपको आमंत्रित किया जाता है आप पधारने का पूर्ण प्रयास करते हैं। बन्दियों, अधिनस्थ अधिकारियों, कर्मचारियों तथा आपसे मिलने की इच्छा लेकर आने वाले अतिथियों के साथ व्यवहार से आपकी व्यवहार कुशलता का परिचय प्राप्त होता है। यह सब आपको बाल्यकाल से वीरासत में मिले वैदिक धर्म के संस्कारों तथा महर्षि दयानन्द सेवाश्रय में प्राप्त की गई शिक्षा-उपदेशों का परिणाम है।

आप वैदिक संसार से विगत लगभग चार वर्षों से जुड़े हुए हैं। आपने वैदिक संसार के कार्यों के प्रति सन्तोष व्यक्त करते हुए कहा कि '**वैदिक संसार**' आर्य जगत् में महर्षि दयानन्द प्रणीत सर्व मानवाकूल वैदिक धर्म विचारों के प्रचार-प्रसार में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इसके माध्यम से विज्ञान आधारित विभिन्न आर्य विद्वानों के तथ्यपूर्ण लेखों के माध्यम से आर्य समाज की मूल भावना के अनुसार जन जागृति पैदा करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। मैं वैदिक संसार के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं।' वैदिक संसार के प्रति अपने उद्गार व्यक्त करने पर वैदिक संसार परिवार आपका हार्दिक आभार व्यक्त करता है तथा आपके स्वस्थ, सुख-शान्तिमय दीर्घायुष्य, यशस्वी जीवन की कामना करता हूं।

-सुखदेव शर्मा, प्रकाशक- वैदिक संसार

गुरुकुल होशंगाबाद में वर्ष २०१८-१९ हेतु प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.) में कक्षा छठवीं एवं सातवीं में योग्य विद्यार्थियों हेतु प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। इच्छुक जन दिनांक १५ जून से १५ जुलाई २०१८ के बीच में आने वाले प्रत्येक रविवार को मौखिक व लिखित परीक्षा दिलवाकर छात्रों को प्रवेश करवा सकते हैं। जानकारी हेतु सम्पर्क करें-

आचार्य सत्यसिन्धु आर्य-०९९०७०५६७२६, ०९४२४४७१२८८

दक्षिणा- क्या, कब, क्यों, कैसे, कितनी और किस तरह?

- पं. भद्रपाल सिंह आर्य,
पुरोहित–आर्य समाज टी.टी. नगर,
भोपाल (म.प्र.)
चलभाष- ०९८२६७६७४६२

दक्षिणा शब्द 'दक्ष' धातु से बनता है, जिसका अर्थ वृद्धि और शीघ्रता है। अतः दक्षिणा से यजमान के यज्ञ के फल की वृद्धि होती है और शीघ्रता भी होती है, अतः यज्ञ की दक्षिणा अवश्य और तुरन्त देनी चाहिए, अन्यथा फल की प्राप्ति नहीं होती है, **वेद में दक्षिणा को यज्ञ की पत्नी कहकर उसका नाम 'स्तावा' निर्धारित किया गया है।** दक्षिणा से ही यज्ञ की प्रशंसा होती है।

दक्षिणा का महत्व- ऋग्वेद में दक्षिणा के संबंध में कहा गया है कि दक्षिणा देने वाले यजमान दक्षिणा के प्रभाव से सात माताओं का दोहन प्राप्त करते हैं तथा महान् श्रेष्ठ मार्ग प्राप्त होता है तथा दीर्घायु को, बहुविध सुखों को और मोक्ष को प्राप्त करते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार दक्षिणा की उपेक्षा नहीं करना चाहिए, अपितु यथाशक्ति श्रद्धापूर्वक बड़े सत्कार से देना चाहिए। ऋत्विजों को दी गई दक्षिणा-वेद का सम्मान, वेद को अर्पण किया गया धन, जिसके द्वारा परमात्मा की प्रीति और प्रसन्नता होगी ऐसा मानकर देना चाहिए।

दक्षिणा कब- यज्ञ की दक्षिणा यज्ञ के तुरन्त बाद देनी चाहिए। विलम्ब से देने से यज्ञ और दक्षिणा का स्वरूप बिगड़ता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार यज्ञ की पूर्णाहुति के तुरन्त बाद इस क्रिया का (दक्षिणा) विधान किया गया है। दक्षिणा तुरन्त देने के लाभ और विलम्ब से देने से दोष उत्पन्न होते हैं। वेद के जानने वालों का अभिमत है कि यज्ञ दक्षिणा के साथ पुत्र और फल के द्वारा यजमान को फलदाता होता है। जो यजमान अपनी अज्ञानता व अन्य कारणों से उसी क्षण दक्षिणा नहीं देता है तो एक मुहूर्त बीत जाने पर उस दक्षिणा को दुगनी मात्रा में देना चाहिए। एक रात्रि का विलम्ब हो जाने पर सौ गुना अधिक देना चाहिए। तीन रात्रि का विलम्ब हो जाने पर सहस्त्रगुना अर्थात् हजार गुना अधिक देना चाहिए, एक सप्ताह बीत जाने पर उसका दो गुना अर्थात् दो हजार गुना दक्षिणा देना चाहिए। यदि एक मास अर्थात् महीने का विलम्ब हो जावे तो एक लाख गुना और एक वर्ष का विलम्ब हो जाने पर तीन करोड़ गुना दक्षिणा देनी चाहिए। एक वर्ष के बीत जाने पर भी यदि यज्ञ की दक्षिणा नहीं दी जाती है तो यज्ञ का फल नष्ट हो जाता है।

दक्षिणा क्यों- जो लोग यह समझते हैं कि अग्नि में आहुति की सम्पूर्णता से ही यज्ञ पूर्ण हो जाता है दक्षिणा की आवश्यकता नहीं, शतपथ के अनुसार **ध्नन्ति वा एतद्यज्ञम्** अर्थात् निःसंदेह यज्ञ को नष्ट करते हैं। **महर्षि याज्ञवल्क्य के अनुसार आहुति से तो देवता प्रसन्न होते हैं और दक्षिणा से वेदज्ञ विद्वान देव तृप्त होते हैं, इस प्रकार जब दोनों प्रकार के देव प्रसन्न होते हैं तो यजमान को सुनिश्चित, निर्धारित फल की प्राप्ति होती है।**

दक्षिणा कैसे?- **दक्षिणा को देना और दक्षिणा को लेना दोनों ही श्रेष्ठ कर्म हैं। दक्षिणा छिपाकर नहीं, प्रकट रूप में, अच्छी प्रकार सत्कार से, सबके सामने देवें, वेद के प्रचार एवं वेद की रक्षा के लिए दक्षिणा अत्यन्त आवश्यक है।**

दक्षिणा कितनी- दक्षिणा यज्ञ के अनुरूप देवें, दक्षिणा प्राप्त ऋत्विजादि एवं उपस्थित विद्वान यजमान की कीर्ति का विस्तार उतने ही सामर्थ्य से करते हैं। जितनी सामर्थ्य से यजमान दक्षिणा को प्रशंसा के योग्य बनाता है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार- जितना बड़ा यज्ञ हो जिस मात्रा से किया जाए उतनी ही बड़ी मात्रा को दक्षिणा से वृद्धि को प्राप्त होता है। दक्षिणा के बारे में गृह सूत्रों में संस्कारादि की दक्षिणा कम से कम गौ की नियत की गई है। शतपथ में भी गाय को दक्षिणा में देना दर्शाया गया है। शतपथ में ६, १२ एवं २४ की संख्या में देने का विधान किया गया है। **वेदों में यज्ञ को गन्धर्व और दक्षिणा को अप्सरा का रूप दिया गया है, यज्ञ पुरुष है और दक्षिणा उसकी पत्नी है, यजमान को चाहिए कि वह अपने पुरोहित को प्रशंसनीय दक्षिणा देवे।**

दक्षिणा किस तरह- दक्षिणादि देते समय ऋत्विजों (पुरोहितों) ने हमारे प्रति बड़ी कृपा की है और इनकी कृपा से, परमात्मा की कृपा एवं प्रसाद प्राप्त होगा तथा यज्ञ की सफलता होगी, ऐसे पूजनीय एवं श्रद्धायुक्त भाव से विनम्र होकर दक्षिणा देनी चाहिए। **महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसके लिए उत्तम प्रकार से यथासामर्थ्य देने का लिखा है।** महर्षि पुनः लिखते हैं कि आसन, अन्न (फलादि), जल(विविधपेय), वस्त्र, पात्र एवं धनादि का उल्लेख करते हैं, अतः सामर्थ्य शब्द में न्यूनाधिक परिमाण ग्रहण करना चाहिए।

दक्षिणा के बाद के कर्म- दक्षिणा देने के पश्चात् ऋत्विजों को प्रथम भोजन कराना चाहिए। दयानन्द के अनुसार हुतशेष धृतभाग मोहन भोग (यज्ञ शेष) ऋत्विजो को कराकर पुनः दक्षिणा देकर सत्कारपूर्वक विदा करें, फिर स्वयं भोजन करें।

न्यून दक्षिणा से शूद्रत्व की वृद्धि- यज्ञ के आरम्भ में ऋत्विक वरण में कुण्डल, अंगूठी, उत्तम वस्त्रादि और यज्ञ के अन्त में उत्तम दक्षिणा पुनः भोजनोपरान्त दक्षिणा का विधान किया है। ऐसा न करने से वेद और वैदिक विद्वानों की उपेक्षा से शूद्रत्व की वृद्धि हो रही है।

भूयसी दक्षिणा एवं भोजन की दक्षिणा- मुख्य दक्षिणा के पश्चात् जो दक्षिणा बाद में दी जाती है और यज्ञ में उपस्थित विद्वान ब्राह्मणों को सत्कारार्थ जो भी द्रव्यादि दिया जाता है उसे भूयसी दक्षिणा कहते हैं, भोजन के बाद भी दक्षिणा देवें। **इस प्रकार दक्षिणा के तीन रूप है।**

मुख्य दक्षिणा, पूर्णाहुति के तुरन्त बाद, भूयसी दक्षिणा- सत्कार स्वरूप द्रव्यादि भेंट भोजन दक्षिणा भोजन के बाद।

यज्ञ पात्र ऋत्विजों को भेंट- यज्ञ के लिए जो भी पात्र उपयोग आते हैं, वे भी यज्ञ की समाप्ति पर ऋत्विजों को ही दे देना चाहिए, यजमान को अपने पास नहीं रखना चाहिए। ऐसा न करने से यज्ञ का अर्थ नष्ट हो जाता है।

दक्षिणा देने का क्रम- दक्षिणादि द्वारा सम्मान करते समय सर्वाधिक सम्मान ब्राह्मा का, उसके बाद अन्य ऋत्विजों का, उसके बाद अन्य सहयोगियों का, उपदेशकों, प्रचारकों एवं अन्य महानुभावों का करना चाहिए।

अन्य दक्षिणाएं- मुख्य दक्षिणा (द्रव्य दक्षिणा) के साथ आसन, पात्र, फल, मेवा, अन्न, उत्तम वस्त्र देना चाहिए। **ऋत्विजों को वस्त्र आदि देते समय उनकी पत्नियों के लिए भी यथासम्भव उत्तम वस्त्र आभूषण देने चाहिए।●**

ओजोन मण्डल और पृथ्वी का पर्यावरण

- शिवनारायण उपाध्याय -
७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा, (राज)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

सम्पूर्ण सृष्टि एवं ऊर्जा का मूल स्त्रोत सूर्य है। सूर्य से प्राप्त प्रकाश एवं ऊर्जा से सम्पूर्ण जीवधारियों का जीवन चलता है। इतना उपयोगी होने के साथ ही सूर्य अनेकों प्रकार की घातक किरणें पृथ्वी की ओर फेंकता है। यदि ये किरणें पृथ्वी की सतह तक पहुंच जाए तो हमारे जीवन को खतरा उत्पन्न हो सकता है। प्रकृति ने इन्हें रोकने की व्यवस्था भी कर रखी है। प्रकृति ने हमारी पृथ्वी के चारों और २५ किमी. से ४० किमी. की ऊंचाई तक ओजोन गैस का एक रक्षा कवच छाते की तरह तान रखा है। यह सूर्य की हानिकारक किरणों को पृथ्वी की सतह तक आने से रोक देता है। हानिकारक किरणें ओजोन परत से टकराकर परावर्तित हो जाती है। इन खतरनाक सूर्य की पराबैंगनी किरणों से जीवधारियों और मनुष्य के रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक शक्ति का ह्रास होता है। आंखों में मोतियाबिन्द उतर आता है। चमड़ी के कैन्सर की आशंका कई गुना बढ़ जाती है।

ओजोन एक गैस है। इसका पता सर्वप्रथम एक जर्मन वैज्ञानिक क्रिश्चियन स्कान वेन ने किया था। यह आक्सीजन से मिलती-जुलती है। वायुमण्डल में ओजोन गैस ऐसे तैयार होती है जैसे किसी फैक्ट्री में उत्पन्न हो रही है।

ओजोन परत की खोज सर्वप्रथम सन् १९१३ में दो फ्रांसीसी वैज्ञानिकों चार्ल्स फार्वी और हेनर व्यूसन ने की थी। ओजोन गैस वायुमण्डल में बहुत कम है। अर्थात् १० लाख के एक हिस्से से भी कम ओजोन (O_3) में आक्सीजन (O_2) से एक परमाणु अधिक होता है। ओजोन गैस का रंग हल्का नीला तथा गंध तीखी होती है। ओजोन मण्डल में आक्सीजन पर सूर्य की पराबैंगनी किरणों की क्रिया से यह उत्पन्न होती रहती है।

पिछले कुछ वर्षों से वायुमण्डल में ओजोन गैस की कमी अधिक अनुभव की गई है। ओजोन की अधिक कमी वाले क्षेत्र को **'ओजोन छिद्र'** की संज्ञा दी गई है। यदि ओजोन गैस की और कमी होती है तो सूर्य का खतरनाक विकिरण पर्याप्त मात्रा में पृथ्वी तक पहुंच जाएगा और हमारे जीवन के लिए खतरा पैदा करना आरम्भ कर देगा। ओजोन के घटते स्तर की खोज सन् १९८५ में तीन वैज्ञानिकों फारमैन, गार्डिनर और शाकलिन ने की थी, परन्तु ओजोन स्तर में छिद्र होने की खोज एक शेरवुड रोलैण्ड ने की थी। इस पर उनको तीन साथियों के साथ संयुक्तरूप से नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

ब्रिटेन के अन्टार्कटिका सर्वेक्षण दल ने सन् १९८५ में एक सर्वेक्षण रिपोर्ट सन् १९८४ की जिससे ज्ञात हुआ कि सन् १९७२ के बीच ओजोन में लगभग ४० प्रतिशत की कमी पाई गई। इस रिपोर्ट की पुष्टि अन्य वैज्ञानिक संस्थानों ने भी की। अमेरिका की तीन महत्वपूर्ण संस्थाओं (१) राष्ट्रीय वैज्ञानिकी एवं अन्तरिक्ष प्रशासन (नासा), (२) राष्ट्रीय विज्ञान फाउण्डेशन तथा (३) राष्ट्रीय समुद्री एवं वायुमण्डलीय

।। इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागात् ।।

गुरुकुल प्रभात आश्रम
प्रवेश-परीक्षा

प्राचीन वैदिक आर्ष-परम्परा के संवाहक गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ (उत्तरप्रदेश) में नवीन प्रवेशार्थी छात्रों की प्रवेश-परीक्षा पूर्व वर्षों की भाँति इस वर्ष भी २६ से ३० जून २०१८ तक सम्पन्न होगी। प्रवेशार्थी छात्र की अर्हता पञ्चम श्रेणी उत्तीर्ण, मेधावी, स्वस्थ, सुशील एवं आयु १० वर्ष होनी चाहिए। प्रवेश परीक्षा लिखित एवं मौखिक दो चरणों में एक दिन में ही **(प्रातः ८ से ११ बजे तक तथा सायं २ से ५ बजे तक)** होगी। लिखित परीक्षा में ६० प्रतिशत अंक प्राप्त छात्र ही मौखिक परीक्षा में लिए चुना जाएगा।

विशेष जानकारी के लिए आचार्य, गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोला झाल, मेरठ से सम्पर्क करें।

दूरभाष- ०८००६७०२५५१, ०९७१९३२५६७७

सूचना- अभिभावक समय का विशेष रूप से ध्यान दें।

प्रशासन ने ओजोन की अत्याधिक कमी पाई, जिसे ओजोन छिद्र नाम दिया, क्योंकि यहां से सूर्य की पराबैंगनी किरणें पृथ्वी तक पहुंच सकती है। चिन्ता का विषय तो यह है कि ओजोन परत अनुमान से कहीं अधिक तीव्र गति से छिजती जा रही है।

अनुसंधानकर्ताओं ने बताया कि सन् १९८१ से सन् १९९१ के बीच ओजोन छिद्र तेरह गुना अधिक बढ़ गया था। सन् १९९२ की एक स्टेट ऑफ दी वर्ल्ड रिपोर्ट के अनुसार उत्तरी गोलार्द्ध के घनी आबादी वाले क्षेत्र में ओजोन सुरक्षा कवच अनुमान के विपरीत दुगुनी गति से सिकुड़ता जा रहा है। विभिन्न संस्थाओं द्वारा किए गए अनुसंधान से दो ओजोन परत के छिद्रों का पता लगाया गया है। पहला ओजोन छिद्र अन्टार्कटिका महासागर के ऊपर तथा दूसरा ओजोन छिद्र आर्कटिका महासागर के ऊपर है। ओजोन गैस में कमी सितम्बर, अक्टूबर के महीनों में अधिक पाई जाती है।

ओजोन गैस की कमी के कारण-

(१) **मानवीय कारक**-रसायन विज्ञान के अनुसार यदि ओजोन और क्लोरीन को मिलाया जाए तो ओजोन आक्सीजन में बदल जाती है। रसायनों के मनमाने उपयोग से विश्व के अनेक देश पर्यावरण को खतरनाक और विषैला बना रहे हैं। एक देश की जहरीली हवा दूसरे देश तक पहुंच जाती है। ऐसे कुछ रसायन और गैसें ऊपर वायुमण्डल में पहुंच कर ओजोन की छतरी में छिद्र कर रही हैं। इन गैसों में सबसे खतरनाक रसायन है क्लोरो फ्लोरो कार्बन । ये रसायन कार्बन, क्लोरीन तथा फ्लोरीन से मिलकर बनते हैं। ये रसायन समताप मण्डल में जाकर ५० से १०० वर्ष तक ज्यों के त्यों बने रहते हैं। इन पदार्थों का आविष्कार सन् १९२८ में हुआ था। उनका उपयोग रेफ्रीजरेटरों, एयरकंडीशनरों, रासायनिक फुहारों तथा अनेक पदार्थों के निर्माण में किया जाता है। इन रासायनिक पदार्थों के उपयोग से तथा उद्योग-धन्धों से गैसों के रूप में निकलने वाला क्लारो-फ्लोरो कार्बन वायुमण्डल में पहुंच रहे हैं, चूंकि इनमें क्लोरीन की मात्रा अधिक होती है, इसलिए यह वायुमण्डल में ओजोन की परत को नष्ट कर रहा है, जिससे ओजोन की मात्रा घट रही है।

(२) **प्राकृतिक कारक-** वायुमण्डल में होने वाले प्राकृतिक कारकों की वृद्धि से वायुमण्डल में ओजोन की काफी कमी हो रही है। क्लोरीन के आविष्कार के बाद प्रारम्भ में वैज्ञानिकों ने सोचा था कि क्लोरीन के द्वारा थोड़ी सी मात्रा में ओजोन का विघटन होगा, परन्तु उन्हें शीघ्र ही पता चला कि एक ओजोन अणु को तोड़ने के बाद क्लोरीन का परमाणु शान्त नहीं बैठता है, किन्तु मुक्त होने के बाद एक ओजोन पर आक्रमण करता रहता है। यह रासायनिक क्रिया तब तक चलती रहती है जब तक कि क्लोरीन का परमाणु नाईट्रोजन आक्साइड के किसी अणु से न टकराएं। अनुमान है कि क्लोरीन का एक परमाणु लगभग १ लाख ओजोन अणुओं को विघटित कर देता है।

(३) **पराध्वनि वायुयान-** पराध्वनि जैट वायुयानों द्वारा ओजोन मण्डल प्रदूषित होता है। इन वायुयानों में उच्च ज्वाला तापमान पर दहन प्रक्रिया के अन्तर्गत नाइट्रिक आक्साइड निकलती है, जिसके फलस्वरूप ओजोन की मात्रा में कमी हो जाती है।

(४) **उर्वरक-** नाइट्रोजन वाले उर्वरक जो उद्योगों में तैयार किए जाते हैं ओजोन प्रदूषण के लिए अत्यधिक उत्तरदायी है।

(५) **ज्वालामुखी उद्भेदन-**ओजोन की मात्रा को कम करने वाला शक्तिशाली स्त्रोत ज्वालामुखी उद्भेदन है। ज्वालामुखी उद्भेदन से निकले हुए बादल ५० किमी की ऊंचाई तक समताप मण्डल में प्रवेश करते हैं। यह उद्भेदन दो प्रकार से वायुमण्डल को प्रभावित करता है।

(अ) **क्षोभमण्डल** में यह उद्भेदन वायु धुंध की परत बनाता है, जिसके फलस्वरूप सौर विकिरण की गहनता कम होने से वायु मण्डल शीतल हो जाता है।

(ब) **समताप मण्डल** में क्लोरीन की मात्रा अधिक पहुंचने से ओजोन प्राय समाप्त हो जाती है।

ओजोन परत की सुरक्षा हेतु अन्तरर्राष्ट्रीय प्रयत्न-

ओजोन परत की सुरक्षा के लिए तथा ओजोन की कमी की गम्भीरता को देखते हुए अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सभी देश इस समस्या से चिन्तित हैं। विश्व से सभी वैज्ञानिक संगठन इस बात पर एकमत हैं कि यदि हमें ओजोन का विनाश करने वाले अन्य रसायनों का प्रयोग बन्द करना होगा। **ओजोन परत की सुरक्षा के लिए एक विशेष प्रकार की प्रायोगिक रूपरेखा तैयार की गई है। इस प्रायोगिक रूपरेखा को अण्टार्कटिका ओजोन प्रयोग की संज्ञा दी गई है। ओजोन की कमी को रोकने के लिए अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर और भी प्रयास हो रहे हैं।**

ओजोन सुरक्षा की दिशा में सन् १९८७ में मांट्रियल संधि इस अर्थ में प्रमुख उपलब्धि मानी जाएगी कि पहली बार इस सन्धि पर हस्ताक्षर करने वाले देशों में जिनकी संख्या १९९० में यूरोपीय समुदाय के सदस्यों सहित ६६ हो गई थी। अपने सी.एफ. सी. के उत्पादन और खपत को क्रमिक रूप से घटाकर १९८६ ई. के स्तर से आधा करने की सहमति प्रदान की। **३ जून से १५ जून सन् १९९२ ई. तक रियोडीजेनेरो (ब्राजील) में संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में पृथ्वी सम्मेलन हुआ। इसमें ११५ देशों के शासनाध्यक्ष तथा राष्ट्राध्यक्ष तथा १५००० गैर सरकारी संगठन पृथ्वी की सुरक्षा की चिन्ता पर विचार किया था। इस सम्मेलन की महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि यहां पर विश्व पर्यावरण सुरक्षा तथा ओजोन परत पर खुलकर बहस हुई। सम्पूर्ण विश्व ने इसकी आवश्यकता को अनुभव किया। विश्व में सी.एफ.सी. रसायनों के नियंत्रण के लिए अन्तरराष्ट्रीय सहमति और समझौते किए जा रहे हैं। आशा है कि ये सफल होंगे।●**

जानें! अजवाइन, काली मिर्च, जीरा, धनिया, मैथी, लौंग, हल्दी तथा पौदीना आपके लिए कैसे-कितने हितकारी

- दिलीप आर्य -
दिलीप पैलेस, आगरा रोड
दुबे पड़ाव, अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश)
चलभाष- ६३९५९०२५७४

अजवाइन- ◇ जो शराब छोड़ना चाहते हैं वे आधा किलो अजवाइन को ४ लीटर पानी में पकाकर लगभग २ लीटर बचने पर छान कर रखें, इसे भोजन के पहले एक कप पियें इससे लीवर भी ठीक होगा और शराब पीने की इच्छा भी कम होगी।

◇ २-३ ग्राम अजवाइन को पाउडर करके छाछ के साथ लेने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

◇ १० ग्राम अजवाइन पाउडर में आधा नींबू का रस, ५ ग्राम फिटकरी पाउडर व छाछ को मिलाकर बालों में मलने से रूसी ठीक होती है। साथ ही लीखें व जुएं भी मर जाती हैं।

इलायची- ◇ इलायची पाउडर २-३ ग्राम शहद में मिलाकर लगाने से मुंह के छाले ठीक हो जाते हैं।

◇ २-३ ग्राम इलायची पाउडर में मिश्री मिलाकर लेने से पेशाब की जलन व रुक-रुक कर आने की समस्या ठीक होती है।

◇ २ इलायची व ३ लौंग को पानी में चाय की तरह उबालकर पीने से हिचकी रोग ठीक होता है। यदि ठीक नहीं हो तो यह प्रयोग दिन में ३-४ बार करें।

काली मिर्च- ◇ एक या दो बार काली मिर्च मुंह में रखकर चूसने से खांसी में आराम मिलता है व नींद भी ठीक आती है।

◇ शीत पित्त होने पर ४-५ काली मिर्च पीसकर उसमें एक चम्मच गर्म घी और शक्कर मिलाकर पिलाने से आराम होता है।

◇ २० ग्राम काली मिर्च, १०० ग्राम बादाम, १५० ग्राम खांड या मिश्री मिलाकर कूट लें। एक-एक ग्राम सुबह-शाम गर्म दूध या गर्म पानी से लेने पर पुरानी से पुरानी खांसी ठीक होती है व कमजोरी में भी लाभ होता है।

जीरा- ◇ दस्त होने पर ५-६ ग्राम जीरे को हलका भूनकर पीसकर दही की लस्सी के साथ लेने पर तुरन्त आराम मिलता है।

◇ भुना हुआ जीरा समभाग सौंफ थोड़ा भूनकर पीस लें, १-१ चम्मच दिन में ३-४ बार लेने से मरोड़ के साथ होने वाले पतले दस्त में आराम होता है।

◇ ५-७ ग्राम जीरे को ४०० मिली ग्राम पानी में पकाकर चौथाई भाग बचने पर प्रतिदिन दो बार पीने से आंतों की कृमि मर जाते हैं।

◇ ३-४ ग्राम जीरे को पानी में उबालकर छानकर मिश्री मिलाकर पीने से मूत्र विकार व प्रदर रोग आदि में आराम मिलता है।

धनिया- ◇ धनिया पाउडर में ४ गुना मिश्री मिलाकर दिन में १-१ चम्मच सुबह -शाम पानी के साथ लेने से अम्ल पित्त में लाभ होता है। इससे पेशाब भी खुलकर आती है।

◇ ३-४ ग्राम धनिया को ४०० मि.ली. पानी में पकाकर १०० मि. ली. शेष रहने पर छानकर ठण्डा कर लें, उसमें थोड़ा शहद मिलाकर पीने से रक्त प्रदर या शरीर में होने वाली चालीं गर्मी में आराम मिलता है।

◇ ४-५ ग्राम धनिया व उसकी पत्तियों को पीसकर चेहरे पर लगाने से चेहरा सुन्दर एवं मुहांसे व झाइयों में लाभ होता है।

◇ २-३ ग्राम धनिया पाउडर कुछ समय तक नियमित रूप से ठंडे पानी के साथ लेने से जिन्हें काम वासना ज्यादा परेशान करती है तो

पौदीना

◇ **आयुर्वेदिक मत-** यह एक प्रसिद्ध बूटी है जो तेज सुगन्ध युक्त है। कटु रस, लघु रुक्ष, तीक्ष्ण गुण, ऊष्ण वीर्य और कटु विपाक है। वात-कफ नाशक,, दीपन रोचन दृघ एवं आहमान नाशक है। अग्नि माद्य शूल-कृमि नाशक, विभूचिका, अतिसार, हैजा, जीर्णज्वर एवं कास संग्रहणी नाशक है।

◇ **वैज्ञानिक मत-**पुदीने में विटामिन-ए अधिक मात्रा में है विटामिन की दृष्टि से पुदीना दुनिया के समस्त रोगों में रक्षा करने वाली एक जड़ी-बूटी के समान है। पुदीने में अजवाइन से मिलने वाले सभी गुण हैं। पृथक्करण की दृष्टि से पुदीने में अग्नि प्रदीपक जठराग्नि को प्रदीप्त करने वाले तत्व भी बड़ी भारी मात्रा में विद्यमान है। पुदीना भूख लगाने वाली महौषध है। त्वचा की गर्मी समाप्त होती है अतिरिक्त वसा को कम करता है। इसमें मुख्य तत्व थायमोल होता है।

◇ **उपयोग -**पुदीने का रस आधा तोला, अदरक का रस आधा तोला सैंधा नमक मिलाकर पीने से पेट का शूल मिटता है।

◇ पुदीने का रस पीने से खांसी, अतिसार और हैजे में लाभ करता है।

◇ पुदीने का ताजा रस शहद के साथ सेवन करने से आतों की खराबी और पेट के रोगों में लाभ मिलता है।

◇ पुदीने का ताजा रस शहद के साथ सेवन करने से त्रिदोष ज्वर से होने वाले विकारों में लाभ होता है।

◇ पुदीने का ताजा रस कफ, सर्दी में अत्यन्त उपयोगी है।

◇ पुदीने-तुलसी, काली मिर्च, अदरक आदि की चाय पीने से वायु दूर होती है, भूख खूब लगती है।

◇ ताजा पुदीना, छुआरा, सैंधा नमक, हींग, काली मिर्च और जीरा इन सबकी चटनी बनाकर उसमें नीबू का रस निचोड़कर खाने से मुंह में रुचि स्वाद पाचन आता है।

हरिश्चन्द्र आर्य, अधिष्ठाता उपदेश विभाग
प्रचार कार्यालय, अमरोहा, उ.प्र.
चलभाष - ९४१२३२२४६०

उसमें कमी हो जाती है। इससे हाइपर एसिडिटी में आराम मिलता है।

मैथी- ◇ मैथी, हल्दी व सौंठ को बराबर मात्रा मे लेकर पाउडर करके रखें, १-१ चम्मच सुबह-शाम गर्म पानी या गर्म दूध से सेवन करने से आर्थराइटिस पुराना जोड़ों का दर्द व सभी प्रकार के वात रोग व सूजन ठीक होते हैं।

राई - ◇ राई को सिरके के साथ पीसकर त्वचा रोग, दाद खाज, खुजली में लगाने से आराम मिलता है।

◇ सिरदर्द व सूजन में राई को पीसकर लेप करने से आराम मिलता है।

लौंग- ◇ शरीर में कहीं नासूर या फोड़ा हो गया हो तो ५ लौंग,हल्दी को पीस कर लगाने से ठीक होता है।

◇ दांत दर्द में लौंग को दर्द वाले स्थान में दबाने से या पाउडर करके उस स्थन पर लगाने से पीड़ा शान्त होती है।

हल्दी- ◇ हल्दी, नमक और थोड़ा सरसो का तेल मिलाकर उंगली से मसूड़ों की मालिश करने से पायरियां, मुख दुर्गन्ध, ग्रन्थि दांतों के रोग में अति लाभदायक है।

◇ आधी चम्मच हल्दी को थोड़ा भूनकर शहद के साथ लेने से गला बैठना या खांसी में तुरन्त आराम मिलता है।●

आर्य संस्कृति के प्रबल प्रचारक: लाला रामजस के नाम पर स्थापित महाविद्यालय ने १०० वर्ष पूर्ण किए

आपने दिल्ली में रामजस कालेज का नाम तो सुना होगा, जिस महापुरुष के नाम पर यह संस्थान स्थापित है, वे ऋषि दयानन्द के अनुयायी सच्चे आर्यपुरुष थे, यह जानकर आपको प्रसन्नता होगी।

भारतीय समाज एक काल में वेदों के ज्ञान को भूल गया। इसका परिणाम यह हुआ कि वह या तो भाग्यवादी बन बैठा, अथवा यथार्थ जगत् को मिथ्या समझ बैठा। इस कारण से पुरुषार्थ करने के स्थान पर अकर्मण्य जीवन जीने लगा। इसी मानसिकता के कारण विदेशियों का हमारे देश पर राज्य हो गया। ऐसे विकट काल में स्वामी दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने सोते हुए देशवासियों को जगाया। उन्होंने सिखाया कि आत्मा अमर है और कर्म से ही भाग्य बनता है। एक सशक्त और क्रियाशील जीवन की महत्ता भाग्य के फैसले की स्वीकृति की अपेक्षा कहीं अधिक है। भाग्य कर्मों का फल है। कर्म भाग्य के निर्माता होते हैं। स्वामी जी का उपदेश सुनकर लाखों का जीवन बदल गया। उन महान लोगों में से एक थे लाला रामजस आर्य।

आपका जन्म १८६५ में मेरठ के अमानुल्लापुर ग्राम में हुआ। स्वामी दयानन्द का जब मेरठ आगमन हुआ। तब उनके दर्शन और उद्बोधन से बालक रामजस का वैदिक धर्म में प्रवेश हुआ। वे स्वामी दयानन्द के समाज सुधार के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेने लगे। दलितोद्धार और शुद्धि कार्य उन्हें विशेष रूप से प्रिय थे।

एक बार उन्हें पता चला कि अली शेर नामक एक व्यक्ति को तुच्छ अपराध के लिए सजा हुई है। उन्होंने उसकी जमानत भरी, उसे छुड़वाया। **उसे वैदिक धर्म का मर्म समझाया। अली शेर को वैदिक धर्म की श्रेष्ठता का बोध हुआ। वह रामजस जी के प्रयास से सपरिवार शुद्ध होकर आर्य बन गया।** रामजस जी ने घोषणा की कि अली शेर मेरा छोटा भाई है। आज से वह धर्मसिंह के नाम से पुकारा जाएगा। वह मेरे परिवार का सदस्य है। वह मेरे घर में ही निवास करेगा। कालांतर में धर्मसिंह की दो पुत्रियों विद्या और तारा ने जन्म लिया। बड़े होने पर लाला रामजस जी ने उनका विवाह सम्पन्न हिन्दू परिवारों में करवाया। लालाजी ने उस अवसर पर कहा कि अगर धर्मसिंह का लड़का होता तो वे उसका विवाह अपने परिवार की किसी लड़की से करवाते। **लालाजी सच्चे इन्सान थे। आर्यों के इसी व्यक्तित्व का अदालतें भी सम्मान करती थीं।**

लालाजी अंग्रेजों के अत्याचारों के भी घोर विरोधी थे। समय-समय पर उनके विरोध में उतर जाते थे। नारी जाति उस समय अशिक्षा, बाल विवाह और विधवाओं की दारुण अवस्था से पीड़ित थी। लालाजी से नारी की ऐसी दशा देखी न गई। उन्होंने इस अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष आरम्भ कर दिया। १९१० की एक घटना है, ग्राम पतला, जिला गाजियाबाद के एक ब्राह्मण की पुत्री भगवान देई, जिसकी शादी कलीना गांव में हुई थी, जवानी के प्रथम चरण में विधवा हो गई। उस लड़की के सामने अंधकारमय जीवन था। समाज उसे घृणा की दृष्टि से देखता ता। लाला जी ने उसका पुनर्विवाह करवाने का निर्णय यिा। जब रूढ़िवादियों को यह पता चला तो उन्होंने विरोध किया। **विधवा विवाह के समर्थन में आर्य समाजी खड़े हो गए। इस विषय पर शास्त्रार्थ हुआ। क्षेत्र में इसकी व्यापक चर्चा हुई। आर्य समाज ने शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त की। आखिर में एक ब्राह्मण परिवार के युवक बाबूराम से उसका पुनर्विवाह सम्पन्न हुआ।** समाज में नई चेतना का प्रचार हुआ। लालाजी का उत्साह और जोश दोनों बहुत बढ़ गया।

लालाजी के पास पर्याप्त भूमि थी। उन्होंने देखा कि गांव के दलित बहुत निर्धन हैं, उन्होंने अपनी जमीन से दलित भाइयों को जमीन दान रूप दी और अपने खेतों में चारा लेने की छूट भी दी। इससे उनकी आर्थिक हालत अच्छी हुई। उन्होंने दलित परिवारों को आर्थिक सहायता भी दी। बच्चों की शिक्षा का प्रबंध भी किया।

वैदिक सिद्धान्तों के प्रबल प्रचारक, विधवा-विवाह और शुद्धि के समर्थक, दलितों के सहायक, ईश्वर भक्त एवं ऋषि दयानन्द के अनन्य शिष्य लाला रामजस जी का ५९ वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके पुत्र रायकेदार नाथ द्वारा १९१७ में दिल्ली में शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति के लिए अपने पिता की स्मृति में रामजस कॉलेज, स्कूल आदि की स्थापना की गई। इस वर्ष रामजस शिक्षा संस्थान/ कॉलेज आदि को १०० वर्ष पूरे हुए हैं। **- डॉ. विवेक आर्य- drvivekarya@yahoo,com**

सुख पाने के प्रयास: असफल क्यों, सफल कैसे?

- रामनिवास गुणग्राहक-
वैदिक प्रवक्ता एवं पुरोहित
आर्य समाज- श्रीगंगानगर (राज.)
चलभाष- ०७५९७८९४९९१

हमारे आयुर्वेद के मनीषियों का मानना है कि संसार के सब मनुष्य व प्राणी जीवन भर जो भी कार्य करते है, उन सब कार्यों के पीछे एक ही उद्देश्य होता है और वह है-सुख। **'सुखार्था: सर्व भूतानां अत: सर्व प्रवृत्तय:।'** अर्थात् सब प्राणियों की सब प्रवृत्ति, भाग-दौड़ केवल सुख के लिए ही होती है। सचाई वो जो सबके हृदय से निकले। अन्य प्राणियों के बारे में तो क्या कहें, हां मनुष्य की बात करें तो संसार में ढूंढे से भी एक न मिले जो दु:ख पाने के लिए कोई कार्य का प्रयास करता हो। चोर चोरी भी करता है तो जेल जाने के लिए नहीं करता। हर मनुष्य की अपने हर कार्य से सुख पाने की अपनी निजी योजना होती है। **महत्वपूर्ण बात तो यह है कि हमने सुख पाने की जो योजना बनाई है क्या प्राकृतिक व्यवस्थाएं , सामाजिक मर्यादाएं भी उसकी अनुमति देती है। क्या शासन-संविधान की दृष्टि से हमारी सुख पाने की योजना मेल खाती है? अगर हां तो वह योजना ठीक है, देर-सवेर सफल होने की सम्भावना है। अगर उत्तर ना है तो भोले भैया प्रकृति के नियमों के विपरीत जाकर, समाज शासन के विपरीत जाकर सुख पाना सम्भव नहीं!** सुख पाने की तेरी योजना में सबसे पहले प्रकृति ही बाधा डालेगी, समाज व शासन तुझे रोकेगा। छोड़ दे ऐसी योजना को, वह तेरा कोरा भ्रम है। आज के मनुष्य का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यही है कि वह प्रकृति के नियमों, समाज की मर्यादाओं व शासन की व्यवस्थाओं की अनदेखी करके सुख पाने की योजनाएं बनाता है, फलस्वरूप उसकी ऐसी सारी योजनाएं आत्म हनन रूपी भय से प्रारम्भ होकर संकटों-समस्याओं, विसंगति और अन्तर्विरोधों से टकराकर दम तोड़ देती है। हां सम्भव है कि ऐसी योजना थोड़ी बहुत सफल होती दिखे, थोड़ा बहुत सुख मिलता हुआ दिखे, मगर ध्यान रखो, ऐसे आधे-अधूरे चिन्ता-व्याकुलता से सने हुए सुख से हमारी आपकी पूर्ण सन्तुष्टि नहीं होती। हमें जो सुख चाहिए उसे पाने के लिए सही दिशा में, उचित रीति से श्रम करने की आवश्यकता है।

सुख चाहने वालो! एक बात का ध्यान रखो, सुख कमाया जाता है चोरी नहीं किया जाता। चोरी का सुख हमारे चित्त की शान्ति नष्ट कर देता है, चित्त अशान्त हो तो सुख स्वादहीन, रसहीन और फीका-सा हो जाता है। घर में पति-पत्नी या पिता-पुत्र में किसी बात पर मनमुटाव या अनबन हो जाए तो अत्यन्त स्वादिष्ट भोजन में भी रुचि नहीं रहती। हमारे लिए सुख से कहीं अधिक मूल्यवान, अधिक तृप्तिकारक होती है शान्ति! जब भी हम किसी का सुख चुराकर, छीनकर भोगना चाहते हैं, उसी क्षण हमारे चित्त में अशान्त और व्याकुलता घर कर जाती है। उसके बाद जो सुख हम भोगते हैं, वह उस शान्ति और व्याकुलता के कारण रसहीन सा होकर रहता है। **दूसरी दृष्टि से देखें तो चोरी का सुख एक प्रकार से बैंक से लिए गए ऋण के जैसा ही होता है। बैंक से हमें धन दो प्रकार से मिलता है-एक वह जो हमने पहले श्रम करके कमाकर बैंक में जमा कराया हो, दूसरे वह जो हम बैंक से उधारी के रूप में लेकर आते हैं। अगर हमने पहले कमाकर जमाकर रखा है तो हम निश्चिन्त होकर ले आते हैं। हमारा धन था, हम ले आए। दूसरी ओर अगर हम उधार लेकर आते हैं तो उसे चुकाने की चिन्ता भी साथ ले आते हैं! सम्भव है**

वैदिक उपदेशक विद्यालय, लखनऊ

प्रवेश प्रारम्भ

सब सज्जनों के सूचनार्थ निवेदन है कि उत्तरप्रदेश के लखनऊ नगर में **'वैदिक उपदेशक विद्यालय'** स्थापित किया गया है। इसका उद्देश्य वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु समर्पित प्रचारक तैयार करना है। विद्यालय में पांच विषय पढ़ाये जाएंगे- १. संस्कृत व्याकरण, २. भारतीय दर्शन, ३. वेद (उपनिषद् सहित), ४ ऋषि दयानन्द, ५. योग।

विद्यार्थियों का आवास, अध्ययन एवं भोजन नि:शुल्क होगा, उन्हें कोई उपाधि (डिग्री) नहीं दी जाएगी। शनै: शनै: संस्कृत को संवाद की भाषा बनाया जाएगा। प्रवेश के नियम तथा अन्य विवरण निम्न प्रकार हैं-

१. न्यूनतम अर्हतायें:-

(क) हिन्दी, अंग्रेजी अथवा संस्कृत भाषा का सामान्य ज्ञान हो,
(ख) वर्णोच्चारण की परीक्षा उत्तीर्ण करनी होगी,
(ग) सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में उद्यत हो,
(घ) शरीर स्वस्थ एवं निरोग हो,
(ड) आयु १५ से ३५ वर्ष के बीच हो।

२. कार्यारम्भ:- ज्येष्ठ शुक्ला प्रतिपदा, वैक्रमाब्द २०७५, बृहस्पतिवार, १४ जून २०१८ से।

३. संचालक: - आचार्य रूपचन्द्र 'दीपक'
एम.एस.सी. (गणित), एम.ए., पीएच.डी. (दर्शन शास्त्र)
बी.एड. व्याकरणाचार्य; न्याय-विशारद् वेद-भूषण।
चलभाष : ९८३९१८१६९० ई मेल-rcdeepak@yahoo.com

४. पता- वैदिक उपदेशक विद्यालय, १३९३, एल्डिको उद्यान-२, रायबरेली रोड, लखनऊ- २२६०२५

५. दूरभाष - ७३७६९८७९३१

कि कई विपरीत परिस्थितियों में सरकारी अनुदान आदि के कारण बैंक हमारी उधार माफ कर दें, लेकिन परमात्मा की अटल कर्मफल व्यवस्था में माफी व छूट जैसी सुविधा नहीं है। अगर हमने बिना कमाये, बिना मूल्य चुकाये किसी का छीनकर या चुराकर सुख भोगा है तो उसके लिए भविष्य में पसीना तो बहाना ही पड़ेगा। कई बार आंसू बहाने पड़ते हैं। पहले श्रम करके सुख पा लो या पहले सुख पाकर श्रम करके उसका मूल्य चुका दो, चुकाना तो अवश्य पड़ेगा, लेने का फन्द देने से ही कटता है। पहले सुख पाकर बाद में चुकाना घाटे का सौदा हो सकता है। सच में देखा जाए तो उचित रीति से सत्य धर्म के पथपर चले बिना मनमाने ढंग से जो सुख पाने का प्रयास हम करते हैं वह सुख नहीं होता, केवल सुख का आभास जैसा होता है। सुख तो हमारे सत्कर्मों के फल के रूप में प्राप्त होता है। सत्कर्म किये बिना छीना-झपटी का सुख सुख नहीं माना जा सकता।

मानव जीवन के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, परमात्मा के सच्चे स्वरूप को समझना, उसके गुण-कर्म, स्वभाव का सही ज्ञान प्राप्त करना। अगर हम ऐसा नहीं कर पाते तो निश्चित मानिये कि हमारे जीवन की दशा और दिशा डावांडोल ही रहेगी। परमात्मा के बारे में अधिक नहीं तो इतना तो अवश्य जान लें कि इस विश्व (ब्रह्माण्ड) को बनाने वाला तथा चलाने वाला परमात्मा एक है, अनेक नहीं। वह सर्वत्र व्यापक है किसी स्थान विशेष मन्दिर-मस्जिद आदि में नहीं रहता। वह सर्वज्ञ है, सब कुछ जानता है। सर्वान्तर्यामी है, सब मनुष्यों व प्राणियों के हृदय की सब बातों को जानता है। वह सर्वशक्तिमान है, सृष्टि के बनाने, चलाने व हमारे कर्मों का फल देने आदि कामों में वह किसी की सहायता नहीं लेता। अपने ही सामर्थ्य से अपनी सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता आदि गुणों से वह अकेला ही सब कामों को सहजभाव से करता रहता है। परमात्मा के सब नियम, सिद्धान्त व व्यवस्थाएं अटल है, अपरिवर्तनीय है। वह निष्पक्ष न्यायकारी है, उसके सामने सब प्राणी, विद्वान-मूर्ख, बलवान, निर्बल, धनी-निर्धन, गुणी-गुणहीन, भक्त-अभक्त आदि सब मनुष्य और सब पशु-पक्षी आदि सब समान हैं, किसी के प्रति कोई भेदभाव नहीं। परमात्मा किसी की भक्ति से रीझता नहीं और भक्ति न करने वाले से खीजता, रुठता नहीं! परमात्मा का कोई भी भक्त परमात्मा की व्यवस्था के विपरीत कुछ भी नहीं कर-करा सकता। परमात्मा के बारे में इतना तो प्रत्येक मनुष्य को अवश्य ही जान और मान लेना चाहिए। इसके विपरीत परमात्मा के बारे में कुछ भी कहना और मानना कोरा अन्धविश्वास है और कोरी मूर्खता है। देश और दुनिया का दुर्भाग्य है कि परमात्मा के बारे में भांति-भांति की मनमानी मान्यताएं प्रचलित है और ये सब प्रचलित मान्यताएं, अन्धविश्वास को बढ़ाकर भ्रान्तियों को जन्म देने वाली है। परमात्मा के स्वरूप के बारे में भ्रान्ति, उसकी भक्ति-उपासना के बारे में भ्रान्ति, उसकी कर्मफल व्यवस्था के बारे में भ्रान्ति, उसके निष्पक्ष न्याय के बारे में भ्रान्ति। इतनी भ्रान्तियों में जीने वाला व्यक्ति सत्य, न्याय, नियम, सिद्धान्त और व्यवस्था व मर्यादाओं के मूल्य को समझने व स्वीकारने के योग्य कहा रह पाता है? जब उसे परमात्मा के न्याय में ही धांधली दिखाई देती हो तो लौकिक न्याय पर विश्वास टिकने का कोई कारण ही नहीं बचता।

परमात्मा का न्याय अटल है, उसकी हर व्यवस्था अटल है, वहां किसी के भी साथ नाम मात्र को भी भेदभाव या पक्षपात नहीं किया जाता। एक जनश्रुति भी है कि वहां देर भी नहीं हैं, अन्धेर नहीं। सच यह है कि वहां देर है और अन्धेर भी नहीं है। गेंहू का और इमली का दाना एक साथ बोने पर भी फल एक साथ नहीं देते तो क्या इमली के फल को देर से मिला फल माने? ये परमेश्वर की व्यवस्था है, कौन-सा कर्म कब फल देगा यह निर्णय वही करता है। उसकी कर्मफल व्यवस्था को भली-भांति जानकर हम पाने के प्रयास करेंगे तो हमें देर-सवेर पूर्ण सफलता मिलेगी ही। सुख कमाने की जो चर्चा हम पूर्व पंक्तियों में कर चुके हैं। उसका सीधा अर्थ यही है कि हम दूसरों को सुख दें। सुख देने वाले को सदैव सुख मिलता है और दुःख देने वाले को दुःख मिलता है। दूसरों को सुख दिये बिना जो सुख पाना चाहते हैं वे ईश्वर की व्यवस्था के विरुद्ध जा रहे हैं। भला जो आपने किसी को दिया नहीं वो आपको मिलेगा कैसे? सुख और दुःख हमारे अच्छे-बुरे कर्मों के फल है। पहली बात तो बिना कर्म किए कोई फल उत्पन्न ही नहीं होता, दूसरी बात अच्छा कर्म का बुरा और बुरे कम का अच्छा फल नहीं होता। अच्छे और बुरे कर्म की कसौटी भी परमात्मा ने हम सबको दे रखी है। जो हमें अपने लिए अच्छा लगे वो अच्छा और जो अपने लिए बुरा लगे वो बुरा। हम किसी को गाली दे रहे हैं, किसी का अपमान या अहितकारी रहे हैं। किसी का धन लूट छीन या ठग रहे हैं, मिलावटी सामान दे रहे हैं। एक क्षण रुककर विचार करें कि कोई हमारे साथ ऐसा ही करें तो हमें कैसा लगेगा? हृदय से उत्तर मिलेगा कि बुरा लगेगा तो मान लो यह बुरा कर्म है, इसका परिणाम भी बुरा ही मिलेगा। यही स्थिति सेवा, सम्मान आदि सत्कर्मों के प्रति देखी जाएगी।

हमें सुख पाने की न्यायपूर्ण योजना बनानी होगी। हमें बड़ी सरलता से यह सोचना होगा कि हमारे कर्मों का फल मनुष्य नहीं परमात्मा देता है। झूठ, छल-कपट, जुगाड़बाजी, रिश्वतखोरी व पैसा-प्रभाव मनुष्यों में तो चल जाता है परमात्मा के यहां नहीं चलता। ध्यान रखो वहां आपसे पूछा नहीं जाता कि आपने क्या किया, क्यों किया। अच्छा-बुरा कर्म करने के बाद आपके हाथ में कुछ नहीं रहता। हमारे कर्मों को देख-जानकर वह अपने आप तुरन्त उनका फल तय कर देता है। भलाई इसी में है कि हम कर्म करने से पहले ही सोच-विचार कर लें, सुख पाने के लिए सुख देना प्रारम्भ कर दें। कुछ छोटी सोच वाले दूसरो को सुख देना घाटे का सौदा मानते हैं, उनको समझाने के लिए इतना ही कहना है कि वे दूसरों को सुख देते समय यह न सोचें कि मैं किसी को सुख दे रहा हूं, बल्कि यह सोचे कि मैं अपने लिए सुख कमा रहा हूं। दूसरों को दुःख देते हुए भी यही सोच बनाएं तो निश्चित रूप से हमारे मन-मस्तिष्क को सन्तुलित होकर सुख पाने की न्यायपूर्ण योजना पर काम करना शुरूकर देंगे और तब हमारी सुख पाने की सब योजनाएं अवश्य सफल होंगी।●

मानवता को नष्ट करता, जन्मना जातिवाद

- प्रकाश आर्य -
महामन्त्री-सार्वदेशिक आर्य प्र.नि. सभा
महू, जिला-इन्दौर (म.प्र.)
चलभाष- ९८२६६५५११७

जाति, सम्प्रदायों में बांटकर,
कर रहे मानवता का अपमान।
उसके बेटे-बेटियों पर ये जुल्म,
करेगा क्षमा नहीं भगवान।।

परमात्मा ने इस संसार का व प्राणियों की आवश्यकता की चल-अचल वस्तुओं का निर्माण किया। उसने सूर्य, चन्द्रमा, मेघ से गिरता पानी, नदी, तालाब, समुद्र, यह पृथ्वी, वृक्ष, औषधि, पशु-पक्षी आदि समस्त प्राणी मात्र के लिए दिए। उसने मनुष्य-मनुष्य में कोई भेद नहीं किया, क्योंकि हम सब परमात्मा के ही पुत्र-पुत्री हैं, हममें कोई भेद नहीं। ये जाति भेद अज्ञानतावश मनुष्यों की देन है। परमात्मा ने किसी को ऊंचा-नीचा, अछूत या दलित नहीं बनाया, यह सब तो मनुष्य की सोच के कारण है। जब मनुष्य की बुद्धि में यह अज्ञानता का विचार नहीं आया था तब तक संसार में मनुष्य मात्र की एक ही जाति थी।

''दुनिया का इकरंगी आलम आम था।
पहले एक कौम थी, इन्सान जिसका नाम था।''

ये जातिवाद हमारी सनातन संस्कृति के अनुसार नहीं है। जिस प्रकार आज अनेक ऐसी कई मान्यताएं प्रचलन में आ गई हैं, जिनका कोई ठोस आधार ही नहीं है। किन्तु उन्हें मानने वालों की संख्या अच्छी खासी हो गई है, इसलिए उसे अब सामाजिक मान्यता के रूप में माना जा रहा है। ऐसे ही वर्ण व्यवस्था के स्थान पर जाति व्यवस्था का प्रचलन हो गया, क्यों हुआ, कबसे हुआ यह कहीं स्पष्ट नहीं है।

समाज में पहले वर्ण व्यवस्था थी, जिसमें मनुष्य की पहचान गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर थी, उचित थी। मनुष्य को अपनी योग्यता के अनुसार वर्णों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र स्थान प्राप्त होता था।

आज न समाजवाद है, न राष्ट्रवाद है न मानवीय दृष्टिकोण, इन सब पर भारी जातिवाद है। परिणाम हुआ खरबूजे को देख खरबूजा रंग बदलता है कि कहावत चरितार्थ हो रही है। जब जातिवाद को शस्त्र बनाकर ही सब कुछ पाया जा सकता है तो दूसरा वर्ग जो अभी तक जातिवाद को महत्व नहीं देता रहा, वह भी इसी ओर प्रेरित होकर जातिवाद को बढ़ावा दे रहा है।

जन्म के अनुसार जाति व्यवस्था में मनुष्य को बांटना समस्त समाज के लिए एक नासूर है। ऐसा नासूर जिसकी आग में समाज, संगठन, संस्कृति, राष्ट्र सभी बुरी तरह झुलस रहे हैं। जातिवादी और साम्प्रदायिक विचारधारा के कारण यह देश वर्षों तक गुलाम रहा। सनातन धर्म की जातियों में बंटी शक्ति ने विदेशी ताकतों को अवसर प्रदान किया। जातिवाद के पाप के कारण हमने ही भाइयों को तिरस्कृत कर उन्हें सनातन धर्म से पृथक होने हेतु विवश किया। जातिवाद के विष का ही प्रभाव था डॉ. भीमराव अम्बेडकर जैसे महान् व्यक्तित्व को बौद्ध सम्प्रदाय स्वीकार करना पड़ा। हृदय विदारक घटनाओं से पूर्ण मोपला काण्ड जिससे सनातन संस्कृति के भारी क्षति हुई, उपेक्षा के कारण सनातन धर्मियों ने दूसरे सम्प्रदाय को अपना लिया। जातिवाद का ही दुष्परिणाम कश्मीर, केरल, पूर्वांचल के कई राज्य हैं। जहां सनातन धर्मी अपने ही देश में अनेक प्रकार के संकट हिन्सा और अपमान से भरी जिन्दगी जी रहे हैं। जाति व सम्प्रदाय का ही परिणाम, पाकिस्तान, बंगला देश व कश्मीर का ताण्डव है। इस जातिवाद, छुआछूत की मानसिकता ने ही अपनी शक्ति , संगठन देश को कमजोर कर दिया।

जन्म से मनुष्य की जाति मानने का कहीं शास्त्रोक्त कोई प्रमाण नहीं है। योगीराज श्रीकृष्ण ने चार वर्णों को गुण, कर्म के अनुसार माना, कहा-

चातुर्वरण्यं मयाश्रृष्टं गुण कर्म विभाग सः

संसार के श्रेष्ठतम विद्वान आचार्य मनु ने जन्म से जाति को नहीं माना है। कर्म के अनुसार वर्ण व्यवस्था का सिद्धान्त माना गया है। **जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्चयते।** जन्म से सभी शूद्र अर्थात् अज्ञानी ही होते हैं, क्योंकि बालपन में किसी को कोई ज्ञान नहीं होता, इसलिए सभी को शूद्र कहा जाता है, परमात्मा ने हमें यह स्वतंत्रता दी है कि हम अपने जीवन को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र जो बनाना चाहे स्वयं बना सकते हैं। जन्म से कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य पैदा नहीं होता। शूद्र को किसी जाति से जोड़ना मूर्खता है।

प्राचीन समय में वर्ण व्यवस्था ही व्यवहार में थी, पुष्टि तुलसीदास जी की इन पंक्तियों से भी होती है।

वरणाश्रम निज-निज धरम निरत वेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखई नहिं भय सोक न रोग।।

जाति शब्द का उपयोग प्राणियों की एक प्रकार की श्रेणी के लिए किया जाता है, पहले यही किया जाता था। जैसे पंखों से उड़ने वाले समस्त पक्षियों की जाति पक्षी जाति, जल में रहने वाले समस्त जीवों की जलचर जाति, चौपाए प्राणियों की पशु जाति और मनुष्य के रूप में जन्में सभी की मानव जाति एक ही कहलायेगी। **''मानव जाति''**।

हमारी सनातन संस्कृति मनुष्य बनने का सन्देश देती है। **'मनुर्भव जनया दैव्यमः जनम'** पहले स्वयं मनुष्य बनो और दूसरों को भी मनुष्य बनाओ। किसी जाति का सदस्य बनने का नहीं कहा।

हम जिन भगवान राम को मानते हैं, उन्होंने सबको गले लगाया। जिनके रात-दिन गीतों में गाते है **'रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम'** पर उसे अपने जीवन में आत्मसात् नहीं करते।

इसके विपरीत परमात्मा की व्यवस्था को तोड़कर हमारी अज्ञानता व स्वार्थ के कारण जातिवाद को महत्व देना उचित नहीं। ऐसा करना पाप है, सामाजिक द्रोह है, ईश्वर के उन पुत्र-पुत्रियों के प्रति अत्याचार है, ऐसे कर्मों से हमें ईश्वर भी हमा नहीं करेगा।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द का जन्म ब्राह्मण परिवार में हुआ था। किन्तु वे जन्म के अनुसार जातिवाद के विरोधी रहे। समाज को इस सामाजिक बुराई को नष्ट करने का मार्गदर्शन दिया। **उनके अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द ने अछूतोद्धार का प्रस्ताव अमृतसर में हुए कांग्रेस अधिवेशन में रखा। जातिवाद से दुःखी हजारों सनातनधर्मियों को विधर्मी होने से बचाया। हजारों को सनातन धर्म में आने का मार्ग खोल दिया। इस प्रयास से हजारों पुनः सनातनधर्मी बन गए।**

आर्य समाज ने यह आन्दोलन चलाया है जिसका परिणाम है अन्य समाज की दृष्टि से जो अछूत, हरिजन, दलित कहलाते हैं, उन परिवारों के अनेक व्यक्ति आज विद्वान, पुरोहित, प्रचारक, संन्यासी, बनकर सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर देश-विदेश में पूजे जा रहे हैं।

आईये, जातिवाद के कलंक को दूर करें, राजनेताओं के स्वार्थ और साम्प्रदायिक षड्यंत्रों से दूर होकर मनुष्य-मनुष्य को एक मानें ताकि समाज, संस्कृति और राष्ट्र सुरक्षित, संगठित होकर प्रगतिशील बने। ●

हिन्दू धर्म में प्रचलित विभिन्न वादों की तुलना

- इन्द्रदेव गुलाटी -
संस्थापक-सावरकरवाद प्रचार सभा
बुलन्दशहर, (उ.प्र.)
चलभाष- ०८९५८७७८४४३

हिन्दू धर्म में ७ तरह के वाद प्रचलित हैं। इनके बारे में मुख्य-मुख्य जानकारियां दी जा रही हैं जो निम्न प्रकार हैं-

(१) त्रैतवाद् - ब्रह्माण्ड में ईश्वर-जीव-प्रकृति तीन अनादि सत्ताएं हैं, यह एक शाश्वत-नित्य-सत्य सिद्धान्त है। सुयोग से यह ईश्वरीय वाणी वेद प्रतिपादित सिद्धान्त है। ईश्वर-जीव-प्रकृति इन अनादि सत्ताओं के अस्तित्व के प्रतिपादक विचार-चिन्तन-कथन को त्रैतवाद कहा जाता है। ईश्वर-जीव- प्रकृति इन तीनों पदार्थों की विवेचना जैसे वेदों में की गई है वैसे ही उपनिषद्-न्याय- वैशेषिक- सांख्य आदि दर्शनों में भी की गई है।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने त्रैतवाद को ही सर्वोत्तम माना है, क्योंकि यह वेदानुकूल है। आर्य समाज त्रैतवाद का ही प्रचार-प्रसार करता है।

(२) अद्वैतवाद- वेद विरोधी नास्तिक विचारों ने त्रैतवाद के सिद्धान्त को उलझा दिया। वेद विरोधी सिद्धान्तों को छिन्न-भिन्न करने के लिए एक सिद्धान्त उभरा जिसे "**अद्वैतवाद**" के नाम से जाना गया। शंकराचार्य सम्पुष्ट अद्वैतवाद में ब्रह्म ही एकमात्र पदार्थ है। ब्रह्म ही सत्य है- जगत् मिथ्या है-जीव ब्रह्म ही है- ब्रह्म से भिन्न नहीं है।

मध्यप्रदेश में आनन्दपुर नाम का शहर है। इसी शहर में अद्वैतवाद का देश में प्रचार-प्रसार करने के लिए आनन्दपुर सत्संग आश्रम का मुख्य कार्यालय बनाया गया है। यहीं से समस्त शाखाओं को दिशा-निर्देश दिए जाते हैं। बुलन्दशहर में भी तीन मंजिला शानदार भवन है। भजन-कीर्तन-सत्संग समय-समय पर होते रहते हैं। मुख्य त्यौहारों पर सामूहिक भोज भी होता है।

(३) विशिष्टद्वैतवाद- रामानुजाचार्य पोषित इस वाद में ईश्वर-चित्त-अचित्त-तीन पदार्थ हैं। ये पदार्थ ब्रह्म के ही भेद हैं। ब्रह्म का ईश्वर भाग आत्मा-स्थानीय है। जीव और जगत् ब्रह्म के शरीर स्थानीय भाग हैं। ब्रह्म का ईश्वरूप चित् (जीव) अचित (जगत्) से विशिष्ट है।

(४) द्वैतवाद- माध्व मत के इस वाद में ब्रह्म-जीव- जगत् भिन्न-भिन्न पदार्थ हैं। भिन्न-भिन्न होने पर भी ब्रह्म निरपेक्ष है, जबकि जीव और जगत् सापेक्ष हैं। जीव और जगत् ब्रह्म की अपेक्षा रखते हैं। इस मत में ब्रह्म ही ईश्वर है वह विभिन्न अवतार लेता है। जगत् का मात्र निमित्त कारक है। मूर्ति पूजक इसी को मानते हैं।

(५) अचिन्त्य भेदाभेदवाद- चैतन्यमत के इस वाद में ब्रह्म ईश्वर कृष्ण है तथा विग्रह वाला है।

(६) शुद्धद्वैतवाद- वल्लभमत के इस वाद में ब्रह्म मायारहित है। आधिदैविक-आध्यात्मिक-आधि भौतिक ब्रह्म के तीन भेद हैं। आध्यात्मिक भेद पर ब्रह्म है- यही ईश्वर व कृष्ण है। ब्रह्म का आधिदैविक भेद जीव का अविर्भाव करता है। ब्रह्म का आधिभौतिक भेद जगत् का आविर्भाव करता है। यह आविर्भाव ब्रह्म के निमित्त व उपादान बनने पर होता है।

(७) द्वैताद्वैत वाद/ भेदाभेदवाद- निम्बार्काचार्य के इस वाद में चित्त-अचित्त एवं ईश्वर तीन तत्व हैं। ईश्वर ब्रह्म है- इसके ही परब्रह्म नारायण-भगवान-कृष्ण-पुरुषोत्तम आदि नाम हैं। ईश्वर ब्रह्म सगुण है तथा यह जगत् का निमित्त व उपादान कारण है। जीव और जगत् से ब्रह्म न तो अत्यन्त भिन्न है और न ही अभिन्न।

निष्कर्ष

(१) त्रैतवाद सर्वोत्तम है, क्योंकि यह वेदों के अनुकूल है। महर्षि दयानन्द ने इसे ही अपनाने पर जोर दिया है। आर्य समाजी अखबारों-पत्रिकाओं में समय-समय पर अथवा हर अंक में छापना चाहिए।

(२) शंकराचार्य- रामानुज-मध्व-चैतन्यदेव-निम्बार्क-वल्लभ आदि द्वारा चलाए गए सभी अद्वैतवाद वेद विरुद्धवाद है। ये सभी वाद वेदानुकूल उपनिषद्-दर्शन आदि शास्त्रों के भी प्रतिकूल है।

(३) वेद आदि शास्त्रों में ईश्वर-जीव- प्रकृति इन तीनों अनादि सत्ताओं का पृथक-पृथक प्रतिपालन है।

(४) दयानन्द के कथन से स्पष्ट है कि शंकराचार्य का सिद्धान्त नास्तिक मत के खण्डन की दृष्टि से आंशिक रूप से ग्राह्य है, पूर्णतः नहीं।●

भारत पुन: विश्वगुरु कैसे बन सकता है?

- राजेन्द्र व्यास -
पूर्व सम्पादक-आर्य संकेत
४१, शिवाजी पार्क, उज्जैन (म.प्र.)
चलभाष- ९४२५४३०९१५

मनुष्य परमात्मा की रचना है। मनुष्य शब्द-मन धातु से बना है- जिसका अभिप्राय है चिन्तन-मनन करना, अन्ततः किसी श्रेष्ठ निष्कर्ष पर पहुंचना।

भारत पुन: विश्वगुरु कैसे बन सकता है? यह प्रश्न चिन्तन-मनन के लिए हमारे समक्ष है। प्रश्न अहम् है। यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि भारत विश्वगुरु था क्योंकि भारत पुनः विश्वगुरु कैसे बन सकता है- इसमें 'पुनः' शब्द इस भारत के ' विश्वगुरु' की प्रामाणिकता को प्रकट करता है।

वैदिक ऋषियों की मान्यता है- **'तर्क प्रमाणाभ्यां वस्तु सिद्धि, न तु कथन मात्रेण।'** अर्थात् किसी वस्तु की सिद्धि, उसकी प्रामाणिकता तर्क और प्रमाणों से होती है- कथन मात्र से नहीं।

भारत की विश्वगुरु की प्रामाणिकता **'सा प्रथमा संस्कृतिः विश्ववाराः'**- -सम्पूर्ण विश्व में वैदिक संस्कृति वरणीय अर्थात् वरण करने योग्य है- यह ईश्वरीय सृष्टि के रचनाकाल से अपने अस्तित्व को आज पर्यन्त तो बनाए हुए है ही और अन्तकाल तक जन-जन के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

वैदिक संस्कृति ही सत्य सनातन संस्कृति है। वैदिक धर्म ही सत्य सनातन धर्म है। परमात्मा द्वारा दिया हुआ ज्ञान ही दिव्य ज्ञान है-जिसे हम ईश्वरीय वाणी, वेदवाणी, कल्याण वाणी के नाम से पुकारते हैं। यह सार्वदेशिक (सब देशों के लिए), सार्वभौमिक (समस्त भूमण्डल के लिए), सार्वकालिक (सब समय के लिए), सार्वप्रासंगिक (समस्त प्रसंगों के लिए) है, मानव मात्र-प्राणी मात्र की सुख समृद्धि के लिए है। प्रमाण स्वरूप

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय च।।
(२६/२ यजुर्वेद)

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र (सेवाभावियों के लिए) अपने परायों के लिए है।

वैदिक संस्कृति, वैदिक धर्म की प्रादुर्भाव स्थली भारत है- इसीलिए भारत ज्ञानदाता, विश्वगुरु के नाम से जाना जाता है। **भारत शब्द पर हम चिन्तन करें तो स्पष्ट होता है- प्रकाशदाता, अज्ञान को दूर करने वाला भारत है- 'भ' अर्थात् प्रकाश, आ-चारों और र- देना, त- उद्धार करने वाला किनारे लगाने वाला। भारतवर्ष ऐसा प्रकाश स्तम्भ है जो सबको प्रकाश दिखाकर किनारे लगाता है। अर्थात् सबका उद्धार करता है।**

महाभारत में महर्षि वेदव्यासजी ने भारत को महिमा मण्डित किया है। उसे विश्वगुरु के रूप में दर्शाया है। **वर्षम् भारत भारतम्, प्रियं भारत भारतम् पुण्यम् भारत भारतम् शिवम् भारत भारतम्।**

उक्त पंक्तियों का भाव यह है कि संसार में सब देशों में यदि कोई देश है तो वह है भारतवर्ष, सबसे प्रिय भारत है। पुण्यात्माओं, सन्तों, महात्माओं, आचार्यों

ईश्वर, जीव और प्रकृति अनादि है

ईश्वर, जीव और प्रकृति, ये तीन पदार्थ अनादि।
वेद शास्त्र, ऋषि-मुनियों ने, ये बात खोल बता दी।
निराकार ईश्वर ने ही, यह सारा जगत् रचाया,
कर्मानुसार फल देता सबको, तनिक फर्क नहीं पाया।
जीवों की रक्षार्थ ही यह प्रकृति जगत् रचाया,
उत्पत्ति कर पालन करे फिर अन्त में करे सफाया।
जीव, ईश्वर का अंश नहीं यह बात स्पष्ट बता दी।।१।। ईश्वर जीव...
जीव और ईश्वर चेतन है पवित्र और अविनाशी,
नहीं जन्मते, नहीं मरते, नहीं एक देश के वासी।
सत्तावन पदार्थ दोनों और अवयव रहित अविनाशी,
ज्ञानवान चेतन हैं दोनों, बिना भार और सर्वत्रवासी।
आत्मा परमात्मा एक नहीं यह बात स्पष्ट बता दी।।२।। ईश्वर जीव...
ईश्वर, जीव का लिंग नहीं, नहीं कोई रंग भेद होता है,
दोनों अनादि अनंत हैं, नहीं गलन सड़न होता है।
दोनों सक्रिय रहते हैं, नहीं कोई आकार भेद होता है,
बच्चे-बूढ़े नहीं बनते दोनों, केवल शरीर ही वृद्ध होता है।
नहीं उपादान, नहीं निमित्त कारण, रूद्र होने की बात बता दी।।३।। ईश्वर ...
जीव व्याप, ईश्वर व्यापक, वेद यह बतलाता है,
जीव सेवक, ईश्वर सेव्य आपस में पिता पुत्र का नाता है।
श्रेष्ठ कर्मों के कारण प्राणी, मानव चोला पाता है,
पाप कर्मों के कारण प्राणी, पशु और वृक्ष बन जाता है।
जीव से सूक्ष्म परमेश्वर है यह बात स्पष्ट बता दी।।४।। ईश्वर जीव...
ज्ञान कर्म के कारण मानव, ज्ञान शून्य का भोग करे,
खाद्य पदार्थ पहले बनते, फिर मानव उनका उपभोग करे।
पहले वनस्पति फिर पशु-पक्षी सब जीवन का समाधान करे,
सर्वशक्तिमान अपने सामर्थ्य से फिर सृष्टि का निर्माण करें।
ईश्वर द्वारा सृष्टि रचना की बात यहां समझा दी।।५।। ईश्वर जीव...

जांगिड कुल गौरव
- देशराज आर्य - सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य
सेक्टर-४, रेवाड़ी, हरियाणा
चलभाष - ०९४१६३३७६०९

की भूमि, देशभक्तों, वीरांगनाओं की भूमि भारत है। कल्याणकारी भूमि, विश्व बन्धुत्व, सर्वोदय, अन्त्योदय की भूमि भारत है।

कविवर जयशंकर प्रसादजी ने भारत महिमा गीत में जो भारत को जगाने वाला ज्ञानदाता विश्वगुरु सिद्ध किया है-

जगे हम लगे जगाने, विश्व में फैला दिया आलोक
व्योम तम पुंज हुआ तब नाश, अखिल संस्मृति हो उठी अशोक।

भारत की महानता, विश्वगुरु की प्रतिष्ठा को हमने दर्शाया है- परन्तु वर्तमान में हम क्या हैं इस पर चिन्तन आवश्यक प्रतीत होता है।

भारत राजनैतिक रूप से आजाद तो हुआ है पर वैचारिक गुलामी से भारतीय जनमानस परतन्त्रता की बेड़ियों से जकड़ा हुआ है- आधी रात के बाद पाई आजादी पर अफसोस सवेरा आज तक नहीं हुआ।

अंग्रेजी भाषा के एक छत्र विश्वव्यापी शासन ने भारत के अधिकांश नागरिकों-विशेषकर युवा पीढ़ी को मन आत्मा से मैकाले का भक्त बना दिया है। जननी भाषा संस्कृत, राष्ट्रभाषा आर्य भाषा हिन्दी अपने ही देश में सम्मान के लिए प्रश्न चिन्ह बन गई है। मातृभाषा, मातृ संस्कृति, मातृ मही के प्रति समर्पण की भावना विलुप्त होती जा रही है। संस्कार, संस्कृति की चर्चा-विद्वानों, सन्तों, महात्माओं के मुखारविन्द तक सीमित हो गई है। संस्कृत भाषा-पण्डितों की भाषा बन गई है- यह बात निश्चित है कि वेद पाठियों ने वेदों का सस्वर पाठ करके ४ अरब ३२ करोड़ की सृष्टि में १ अरब, ९७वें करोड़, २० लाख, ४९ हजार ११८ वर्ष तक वेदों की आठ विधियों से पाठकर वेदों की रक्षा की है। वेदों को प्रक्षिप्तिकरण (मिलावट) से बचाया है- इसलिए वेदपाठियों की जितनी प्रशंसा की जाय कम है। धन्यवाद के पात्र है परन्तु वेद मन्त्रों के मन्तव्य एवं अर्थ को नहीं जान पाए हैं- वेद मन्त्रों के विनियोग में समस्या उत्पन्न हो गई है जो आज प्रत्यक्ष रूप से दिखाई दे रही है- वेद पाठ, कर्मकाण्ड मात्र जीविकोपार्जन तक सीमित हो गया है।

वैदिक विद्वान-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक ने महत्वपूर्ण तथ्य की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। भले ही स्वच्छ प्रशासन, प्रबल पुरुषार्थ विश्व में सर्वोत्कृष्ट कम्प्यूटर, अन्तरमहाद्वीप मिसाइलें, अन्तरिक्ष विज्ञान, कृषि विज्ञान आदि में क्रान्तिकारी शिक्षा पद्धति को उच्चतम शिखर पर पहुंचा दे और आई.आई.टी., आई.आई.एम. व एम्स जैसे शिक्षण संस्थानों में विश्व के सर्वोत्कृष्ट स्थान दिलाने में भले ही सफल हो जाएं, अच्छी बात है- श्रेयस्कर बात है- परन्तु नैतिकता की दृष्टि से जब तक सदाचार, ईमानदारी प्रवृत्ति से राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रीय जागृति के पर्याप्त पौरुषार्थिक प्रयास नहीं होंगे तब तक भारत को जगद्गुरु आदर्श की स्थापना दिवास्वप्न होगी। **सच मानिए भारत भौतिक एवं वैज्ञानिक, तकनीकी दृष्टि से भले विश्व में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर लें, परन्तु उसकी सफलता शून्य होगी। राष्ट्रीय चरित्र के अभाव में।**

आज नैतिकता की हत्या कर दी गई है, उसकी लाश को दुःश्चरित्रता की खूँटी पर टांग दिया गया है- विभिन्न चैनलों पर जो संस्कृति विपरीत विकृतिजन्य हमले हो रहे हैं, वे ओसामा बिन लादेन जैसे आतंकवादियों के हमलों से भी ज्यादा खतरनाक है। जाती हुई सदियों के लगभग अंतिम दो दशकों से हमारा जितना मानसिक वैचारिक पतन हुआ है। वह शोचनीय एवं चिंतनीय है। आज कम्प्यूटर और इंटरनेट के जरिए अश्लीलता की छवियां देखने-खोजने में युवा पीढ़ी मशगूल है।

नारी के प्रति आज की दृष्टिकोण-बालिग-नाबालिगों को रौंदने वाले दहाईयों में पंचाइयों में है- दर्शक सैकड़ों में होते हैं- विचारक हजारों में, पाठक लाखों में परन्तु आश्चर्य गवाह एक भी नहीं। **भ्रूण हत्या घिनोना कृत्य, माँ ही बेटी की दुश्मन। लज्जा से मस्तक नत्। आज दुःशासन है, द्रौपदी है, लापता है तो श्रीकृष्ण है।**

राजनेता भ्रष्टाचार, दुराचार में शीर्षस्थ। धार्मिक विद्वान धार्मिक क्षेत्रों में अधिकांश धर्म और दर्शन में चमत्कार के दर्शन करा रहे हैं। शैक्षणिक क्षेत्र में शिक्षा पद्धति आंकड़ों के प्रदर्शन तक सीमित हो गई। शिक्षक गुरु का सम्मान मात्र औपचारिक ५ सितम्बर शिक्षक दिवस पर तथा गुरुपूर्णिमा तक मात्र अभिवादनीय नहीं अभिनंदनीय कहकर सम्मान किया जा रहा है।

उपर्युक्त जो भी उल्लेखित है- संक्षिप्त को ही दर्शाया है वैसे तो सारे कुएं में भांग पड़ी है, फिर भी आशा से विश्वास थमा है। अंधकार में भी कहीं न कहीं प्रकाश किरणें देर सवेर दिखाई पड़ती हैं- इसलिए उपनिषद् में वर्णित है।

ओ३म् असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योर्तिगमय'

अर्थात्- हम असत्य से सत्य की ओर चले, अंधकार से प्रकाश की ओर चलें। **आइये कुछ सोचे-विचारें-भारत विश्वगुरु के पद पर कैसे पुनः प्रतिष्ठित हो।**

भारत के यशस्वी प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भारत को विश्वगुरु पद पर पुनः प्रतिष्ठित कराने में अपनी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया है। शुभ एवं शिव संकल्प के क्रियान्वयन में भारत का हर नागरिक उनके साथ है। विश्वगुरु बनाना कठिन ही नहीं कठिनतर, कठिनतम कार्य है।

किसी ने का है- **'मुश्किलें आसान हो जाएगी दिल में ईमान की रोशनी चाहिए।'**

कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु भारत के विश्वगुरु बनाने के संबंध में

(१) वेदों के पठन-पाठन को, वैदिक ऋषियों की वैदिक मान्यताओं के आधार पर प्राथमिकता दे। वशिष्ठ, विश्वामित्र, वामदेव, गौतम, भारद्वाज, भृगु, अंगिरा, महर्षियों और याज्ञवल्क्य, जैमिनी, शौनक, यास्क आदि आचार्यों की परम्परा में सहस्त्रों वर्षों बाद शंकराचार्यजी के पश्चात् **महर्षि दयानन्द ने वेदत्रयी, ऋग्वेद, यजु, साम को अपनाया- प्रसंगानुकूल व प्रकरणानुकूल वेद भाष्य किया। वेद सब सत्य विधाओं की पुस्तक है, वेद को पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों श्रेष्ठ पुरुषों का परम धर्म बताया- क्रियात्मक चिंतन की ओर प्रेरित किया। वेदों की ओर लौट चलो उद्घोष किया।**

(२) **वेदानुसार-** ईश्वर एक है, धर्म एक है, ईश्वर सर्वव्यापक है, स्वयंभू है, कवि है। मनीषी है। ईश्वर जन्म नहीं लेता, नस, नाड़ियों के

बंधन में नहीं आता, उसकी कोई प्रतिमा नहीं होती- वह अवतार नहीं लेता, ईश्वर सृष्टि का रचयिता है, ऐसा ज्ञान जन-जन को देने पर ही अज्ञान समाप्त होगा। - यजुर्वेद, अध्याय, ४० मंत्र ८

हमारे देश का नाम आर्यावर्त-सांस्कृतिक नाम है। हम सब आर्य हैं-भगवान श्रीराम आर्य थे- योगीराज श्रीकृष्ण आर्य थे। जितने भी दिव्य महापुरुष हुए हैं और जो वर्तमान में विभूतियां हैं- वे आर्य हैं-श्रेष्ठ हैं। महाभारत में, रामायण में, आर्य, आर्या शब्द को ही दर्शाया गया है। वेद में कहा गया है-"**अहम् भूमिम उपददाम आर्याय**" मैंने यह भूमि श्रेष्ठ सदाचारी सन्तानों को ही दी है। इस भूमि पर श्रेष्ठ और सदाचारी सन्तानों का आधिपत्य होना चाहिए।

'ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
अपघनन्तोऽराव्णः।'' ऋग्वेद, ९/६३/५

हे सत्कर्मों में निपुण सन्तानों- परमेश्वर की प्रशंसा करते हुए पापियों का संहार करते हुए सम्पूर्ण संसार को आर्य बनाओ।

१. जीवन में १६ संस्कारों को महत्व दें- तदनुसार आचरण करें। सदैव ईश्वर के प्रमुख व निज नाम ओ३म् का स्मरण करें।

२. नारी जाति का सम्मान करें-'**मातृवत परदारेषु**' की भावना को जीवन में उतारें।

३. भारत की प्रतिष्ठा निर्भर है- **भारतस्य प्रतिष्ठ द्वै संस्कृतं, संस्कृतिस्तथा।** विधिवत अध्ययन, अध्यापन। आर्य भाषा राष्ट्रभाषा हिन्दी को प्राथमिकता। समस्त भारतीय भाषाओं के प्रति समभाव।

४. कन्याभ्रूण हत्या को कड़ाई से रोका जाए।

५. ब्रह्मनीति और राजनीति का सम्यकपूर्ण क्रियान्वयन-ब्रह्मनीति से अभिप्राय-यथा प्रजा तथा राजा। राजनीति से अभिप्राय-यथा राजा तथा प्रजा। प्रजा श्रेष्ठ होगी तो श्रेष्ठ राजा का चुनाव करेगी और राजा श्रेष्ठ होगा तो प्रजा राजा के आचरण को जीवन में अपनाएगी राष्ट्र का उत्कर्ष होगा। राजा कैसा होना चाहिए प्रमाण प्रस्तुत है। (ऋग्वेद, ६-६-१)

१. मूर्द्धानाम दिवे- ज्ञान के क्षेत्र में शिखर के समान।

२. अरतिम् पृथिव्या- आसक्ति रहित।

३. वैश्वानरम् - विश्व का हित करने वाले।

४. ऋते आजातम् - सदाचारी।

५. अग्निम् - तेजस्वी।

६. कवि- चिन्तक विचारक।

७. सम्राज-पक्षपात रहित।

८. अतिथि- अकस्मात अपने कार्य क्षेत्र के पहुंच जाना। हर्ष, विषाद, सुख, दुःख में समान भ्रमणशील। ज्ञानोपदेश करना।

ऐसे राजनेता जनता के हृदय सम्राट कहाते हैं।

शिक्षक कैसे हों- स्वाध्यायशील शोधकर्ता आदरणीय, श्रमशील, गतिशील, मृत्यु का भय नहीं, हर परिस्थिति को अनुकूल बनाने वाले, जरा रहित, ज्ञानी, ध्यानी, तपस्वी, निर्मोही, सदाचारी। ऐसे शिक्षक राष्ट्र के निर्माता सही रूप में (ऋग्वेद, १०/९४/११)

शतपथ ब्राह्मण में शिक्षा के तीन रूप- **वीतिहोत्र शिक्षा-**खाने कमाने के योग्य। **आर्चिष्मती शिक्षा-** विद्यार्थी के चरित्र का निर्माण करने वाली। **वैश्वानर शिक्षा-** चरित्रवान, संस्कारवान शिक्षा, ऐसी शिक्षा विश्व के प्रांगण में दी जाती है। आज भारत में वैश्वनार शिक्षा की आवश्यकता। नवोदय विद्यालयों में गुरुकुल पद्धति का समन्वय हो। बालकों और बालिकाओं के विद्यालय अलग-अलग हों। आधुनिक पठनीय विषयों को सम्मिलित किया जाए।

- सिनेमा, चलचित्र व विभिन्न चैनलों में छात्रों के लिए संस्कारजन्य प्रस्तुति दें। अश्लील विज्ञापनों पर रोक। गौ हत्या पर प्रतिबन्ध, गौशाला, गौ संरक्षण, गौ संवर्द्धन प्रक्रिया क्रियान्वयन।

-योगासन, प्राणायामादि की शिक्षा को प्रोत्साहन। योगासन प्राणायामादि से जीवन का व्यास बढ़ावें।

- जीवन में बच्चों को धर्म, ईश्वर के सम्बन्ध में सरल शब्दों में समझाईश।

-पाखण्ड, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता व अस्वस्थ पम्पराओं के संबंध में माता-पिता शिक्षकों द्वारा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के सन्दर्भ में जागृति हेतु विशेष प्रयास। युवा पीढ़ी में शराब पर प्रतिबंध/ आय का स्त्रोत नहीं हो।

-राष्ट्र के प्रति समर्पण भावना जागृत करना। बच्चों से लेकर प्रत्येक नागरिक में पैदा करना।

आज सबसे बड़ी समस्या धार्मिक एवं ऐतिहासिक ग्रन्थों में मिलावट हो गई है।

महाभारत के प्रमाणानुसार ग्रन्थ में आठ हजार आठ सौ श्लोकों से बढ़कर एक लाख श्लोक हो गए। अनेक साम्प्रदायिक व्यक्तियों ने स्वार्थ सिद्धि के लिए अनेक श्लोक बढ़ा दिए। स्वामी जगदीशचन्द्रजी वैदिक विद्वान् ने शुद्ध महाभारत प्रशिप्त मात्र छोड़कर प्रणयन किया। इसी प्रकार शुद्ध रामायण। शुद्ध गीता- 'वैदिक गीता' लिखी स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती। शुद्ध मनुस्मृति डॉ. सुरेन्द्र कुमार आचार्य(संस्कृत साहित्य) ने लिखी। कुल श्लोक २६८५ में से १४७१ प्रक्षिप्त १२१४ मूल इतनी मिलावट, अक्षम्य अपराध।

आज आवश्यकता है ऐसे विद्वानों की जो वैदिक मान्यताओं के आधार पर ग्रन्थों का प्रक्षिप्तीकरण मिलावट से बचावें। भारत में आर्य विद्वान इस ओर प्रयास कर रहे हैं। वैदिक संस्थाओं, अजमेर, उदयपुर, टंकारा, रोजड़(गुजरात) में इस ओर कार्य जारी है।

एतदर्थ- भारत, भारतीयता एवं मानवीयता को अपनाते हुए युवा पीढ़ी को उत्तम रूप से संस्कारित करें। १२ वर्ष में होने वाले सिंहस्थ के विशाल आयोजन में धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाएँ भारत विश्वगुरु कैसे बनें इस पर सकारात्मक भूमिका पर सोचें-विचारें तदनुसार कार्य को गति दें।

समय की प्रतिक्षा करें- एक समय आएगा सम्पूर्ण संसार पुनः भारत के समक्ष नतमस्तक होगा। मनु महाराज के शब्दों में-

एतद्देश प्रसूतस्य का सकाशादग्र जन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षरेन पृथिव्यां सर्वमानवाः।। •

फारूख अब्दुल्ला के मुँह में लगाम लगाना जरूरी

विश्वकर्मा कुल गौरव
– डॉ लक्ष्मीनिधि –
निधि विहार, १७२, न्यू बराद्वारी,
पो. साकची, जमशेदपुर (झारखण्ड)
चलभाष: ९९३४५२१९५४

शेख अब्दुल्ला और जिन्ना दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू रहे हैं। दोनों मुस्लिम और इस्लाम के नाम पर 'सत्ता' की राजनीति करते रहे। शेख अब्दुल्ला, कश्मीर के '**वजीरेआजम**' बनने का ख्वाब देखते रहे और कश्मीर को अपनी जमींदारी बनाकर रखना चाहते थे।

पं. जवाहरलाल नेहरू की गलत सोच और दिग्भ्रमित राजनीति के कारण कश्मीर का एक हिस्सा पाकिस्तान में चला गया और दूसरा हिस्सा हिन्दुस्तान के पास में है, जहां भारत का संविधान लागू है, मगर इस राज्य को विशेष दर्जा देकर बहुत बड़ी भूल की है उसी भूल का लाभ उठाकर वहां के कठमुल्ले इस राज्य को अपना अलग देश बनाना चाहते हैं। इस भूल के कारण स्थिति इतनी बुरी हो गई है कि यहां राष्ट्रीय झण्डा फहराना और राष्ट्रीय गीत गाना भी सम्भव नहीं है। वहां कुछ '**मुस्लिम**' नेता अपने को मुस्लिमों का सरगना मानकर खाते हिन्दुस्तान का और गाते पाकिस्तान की हैं।

कुछ दिन पूर्व फारूख अब्दुल्ला का बयान समाचार पत्रों में छपा था- जिसमें उन्होंने कहा था कि पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर पाकिस्तान का है उसे हिन्दुस्तान किसी कीमत पर उसे नहीं ले सकता। फारूख अब्दुल्ला भारत सरकार के केन्द्रीय मन्त्री रह चुके हैं और कश्मीर के मुख्यमन्त्री भी। उन्होंने दोनों अवसरों पर भारतीय संविधान की मर्यादा का पालन करने की कसम खाई थी, मगर आज वे 'पाकिस्तान' के भोंपू बन गए हैं। यदि फारुख को हिन्दुस्तान से अच्छा पाकिस्तान लगता है तो वह हिन्दुस्तान में क्यों हैं? एक साथ दो नाव पर पैर रखने के कारण ही वे कश्मीर में डूब गए। अपने भी गए, बेटा की कुर्सी भी गई और उनकी सरकार भी गई। यदि कश्मीर की जनता अब्दुल्ला परिवार को चाहती तो वे लोग कश्मीर में सरकार चलाते रहते! आखिर उन्हें कश्मीर के सिंहासन से नीचे क्यों उतार दिया गया?

शेख अब्दुल्ला कश्मीर के अलगाववादियों एवं आतंकवादियों से अलग नहीं है। वे वही भाषा का इस्तेमाल करते हैं जो वहां के अलगाव वादी करते हैं, आतंकवादी करते हैं। भारत सरकार ने अपने तोप का मुंह उन अलगाववादियों और आतंकवादियों की ओर तो कर रखा है और फारूख अब्दुल्ला को सिर पर बैठा रखा है, मगर वे हिन्दुस्तान की छाती पर बैठकर पाकिस्तान का राग अलापता है। संविधान एवं भारत की सुरक्षा कानून के जानकारों से राय ली जाए तो फारूख अब्दुल्ला के ऊपर देश-द्रोह का आरोप बनता है। इसके साथ भी वही व्यवहार होना चाहिए जो अलगगाववादियों एवं आतंकवादियों के साथ हो रहा है।

संविधान में बोलने की आजादी सभी को है, मगर संविधान के बाहर बोलने वालों पर वही कार्रवाई होनी चाहिए जो अलगाववादियों एवं आतंकवादियों के साथ होती है। फारूख अब्दुल्ला को भारत का नागरिक कहलाने का अब हक नहीं रहा। वे पाकिस्तान जाएं वहां आतंकी मसूद और आतंकी दाऊद से हाथ मिलायें, हमें एतराज नहीं होगा, मगर हिन्दुस्तान में रहकर पाकिस्तान की वकालत करने वालों के मुंह पर लगाम लगाना जरूरी है।●

शराबी की दशा

ऐ शराब तू इस जहां में कहां से आ गई
जो भी तुझसे मिला तू उसी को भा गई।
ना देखा कभी न सुनी कभी,
तेरी फितरत कहां से कहां आ गई।
हमने समझा कि तुम गम दूर करती है,
हमें क्या पता तू देह बर्बाद करती है।
तेरे नशे में हमने कितने कष्ट सहे,
अपने-अपने ही अजनबी-सी दिखाते रहे।
ना समझा सके हम क्या कहें और क्या करें,
क्योंकि हम खुद अपने को समझा न सके।
हमने थोड़ी देर बाद के बाद होश सम्भाला,
तो पाया सब परिवार वाले गमगीन थे,
पत्नी-बेटे, बेटी सब सहमें हुए थे।
बुरे-बुरे विचार अपने दिल में लिए हुए थे,
वो सोचते कि पापा कुछ गलत विचार न पाले।
और छोड़कर हमें मृत्यु को गले ना लगा लें,
शराबी अपने आपको महान समझता है।
औरों को बेवकूफ और अपने को भगवान समझता है,
उसके विचार में सब बेवकूफ और पागल हैं,
वो खुद पागल सा बेजान होता है।
अपने आपको समझदार समझने वाला शराबी,
शिक्षा देने वाले अच्छे आदमी को बेवकूफ समझता है।
शराबी शराब में अन्धा और बेगर्त होता है,
पाप को करने में अपनी शर्म न समझता है।
तभी बलात्कार, चोरी, डकैती नशे में होती है,
फिर होश में आने पर शराबी की आत्मा रोती है।

केशव देव भारद्वाज, अधिवक्ता
गीता कालोनी, पलवल (हरि.)
मो.- ९३५४८९९८८४

तीनों सार्वदेशिकों के प्रधान अपने वचनों का पालन नहीं कर रहे हैं

- खुशहालचन्द्र आर्य -
१८० महात्मा गान्धी रोड (दो तल्ला)
कोलकत्ता (पश्चिम बंगाल)
चलभाष - ०९८३०१६५७९४

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि तीनों सभाओं के प्रधान, राष्ट्रीय बुद्धिजीवी एवं आर्य विद्वान महासम्मेलन जो २,३,४ फरवरी २०१७ को हैदराबाद में सम्पन्न हुआ था, उसमें शामिल हुए थे। यानि उसमें पूज्य आर्यवेश जी, आदरणीय सुरेश जी अग्रवाल व आदरणीय मिठाईलाल जी शामिल हुए थे। साथ ही तीनों सार्वदेशिकों के मन्त्री भी इस महासम्मेलन में उपस्थित थे। यह महासम्मेलन आदरणीय विट्ठलराव जी आर्य के संचालन में हुआ और इसकी सफतला का श्रेय विट्टलराव जी के साथ-साथ पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी, पूज्य स्वामी आर्यवेश जी व पूज्य डॉ. सोमदेव जी शास्त्री को जाता है, जिन्होंने इस महासम्मेलन को सफल करने में विशेष रूप से योगदान दिया। इस महासम्मेलन में आर्य जगत् के अधिकतर बड़े-बड़े संन्यासी, विद्वान, उपदेशक, भजनोपदेशक व कर्मठ कार्यकर्ता थे। मुझे कोई बड़ा निर्णय होने की सम्भावना थी, इसलिए मैं भी इस महासम्मेलन में शामिल हुआ था। इस महासम्मेलन में आर्य समाज के हित के लिए कई निर्णय हुए। एक निर्णय जो तीनों सार्वदेशिकों के मिल कर एक स्वच्छ व साफ सार्वदेशिक बनाने का था, उसके लिए आर्य समाजों के सभी प्रतिष्ठित महानुभावों ने इन तीनों सार्वदेशिकों को प्रधानों से निवेदन किया कि आप तीनों मिलकर सच्चे, त्यागी, तपस्वी, विद्वान, योग्य तथा आर्य समाज के प्रति समर्पित आर्यजनों की एक आदर्श सार्वदेशिक बना लेवें ताकि आर्य समाज के कार्य मानव सेवा, परोपकारी व वेद प्रचार के सभी कार्य संगठित व सुचारू रूप से होने लगें, जिससे सरकार और जनता में हमारी खोई हुई छवि व प्रतिष्ठा पुनः स्थापित हो सके।

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि तीनों सार्वदेशिकों के प्रधान व मन्त्रियों ने मिलकर यह निर्णय किया कि जो अभी कोर्टों में केस व मुकदमें चल रहे हैं उनको उठाकर जल्दी से जल्दी यानि अधिक से अधिक दो महीनें में हम तीनों मिलकर एक सार्वदेशिक आर्य सभा जरूर-जरूर बना लेवेंगे और इस बात की मंच से भी घोषणा कर दी गई। पर दुःख की बात है कि उस महासम्मेलन को हुए आज करीब दस महीने हो गए। अभी तक एक सार्वदेशिक हो जाने की घोषणा तो दूर ज्ञात तो यह होता है कि अभी तक कोई कार्यवाही ही नहीं हो रही है।

अभी कुछ महीनों पहले आर्य समाज बड़ा बाजार से किसी कार्यक्रम में पूज्य स्वामी आर्यवेश जी आए थे। उनसे मेरा बहुत ही नजदीकी घरेलू सम्बन्ध है। इसलिए मैंने उनके पदार्पण से घर भी पवित्र करवाया था, तब मैंने स्वामी जी से पूछा कि एक सार्वदेशिक होने में कितनी प्रगति हुई है, तब उन्होंने कहा था कि मैं इस कार्य के लिए बहुत प्रयत्नशील हूं, मुझे आशा है कि हम बहुत जल्दी ही उस निर्णय पर पहुंच जाएंगे। परन्तु उन बातों को हुए भी ६-७ माह हो गए। ज्ञात होता है अभी तक तीनों प्रधानों ने कोई ठोस निर्णय तो लिया नहीं बल्कि इस दिशा में आगे बढ़ना ही नहीं चाहते। यह इन तीनों की महान् पद लोलुपता, स्वार्थ व वचनहीनता है जो किसी व्यक्ति में नहीं होनी चाहिए। खासकर आर्य समाजी और वह भी सबसे बड़े अधिकारियों में तो होना ही नहीं चाहिए।

मैं तीनों सार्वदेशिकों के प्रधानों व मन्त्रियों से करबद्ध निवेदन करता हूं कि वे यदि देव दयानन्द के सच्चे अनुयायी हैं, सच्चे समाजी हैं और सच्चे आर्य समाज के हितैषी हैं तो उनको अपनी पद लोलुपता व स्वार्थ छोड़कर शीघ्र से शीघ्र एक सार्वदेशिक बनाने का निर्णय लेकर सच्चे आर्य समाजी होनेका परिचय देना चाहिए और महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज १८७५ में मुम्बई में स्थापना करके जो "**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**" का स्वप्न देखा था उसे साकार करना चाहिए। •

अध्यापकों की आवश्यकता

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत (सम्बद्ध महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक हरियाणा) में संस्कृत-साहित्य, हिन्दी, सामाजिक विज्ञान, गणित आदि विषयों के अध्यापन हेतु अध्यापकों की आवश्यकता है। कृपया सेवानिवृत्त अध्यापक, महानुभाव ही सम्पर्क करें। आवास, भोजन, गोदुग्ध की निःशुल्क व्यवस्था के साथ-साथ समुचित मानदेय भी दिया जाएगा। सम्पर्क सूत्र- **स्वामीधर्मानन्द-** ८७६४२१८८८१, ९४१४५८९५१०, ८००५९४०९४३

आर्य जी ने किया नेत्रदान, चर्मदान व देहदान का शिवसंकल्प

प्रख्यात साहित्यकार, इतिहासकार, शिक्षाविद्-आर्य समाज कसरावद के प्रधान वैदिक संसार में प्रकाशित प्रेरणास्पद व्यक्तित्व, अमर बलिदानियों के जीवनवृत्त पर अपनी सशक्त लेखनी चलाने वाले रचनाकार श्री डोंगरलाल पुरुषार्थी निवासी- कसरावद जिला-खरगोन म.प्र.) ने गत दिनों जन्मना जातिवाचक उपनाम हटाकर पुरुषार्थी उपनाम अंगीकार किया था।

मानववाद के परोपकारी पथ पर चलते हुए आपने अमर बलिदानी सरदार भगतसिंह, राजगुरु तथा सुखदेव के बलिदान दिवस २३ दिसम्बर पर नेत्रदान, चर्मदान तथा देहदान का शिवसंकल्प धारण कर अमर बलिदानियों को अनूठी प्रेरणादायी श्रद्धांजलि अर्पित की है।

आप प्रधान अध्यापक पद से सेवानिवृत्त होकर आर्य समाज, सेवानिवृत्त कर्मियों के संगठन तथा अनेक सामाजिक संस्थाओं, कार्यों में सक्रिय सेवा देते रहते हैं। आप ६७ वर्ष की आयु में पूर्णरूपेण स्वस्थ हैं। आपका सम्पर्क क्रमांक ८९५९०५९०९९ है।

वैदिक संसार परिवार आपके इस मानवतावादी सराहनीय कदम की सराहना करता है तथा आपको साधुवाद देता है।

वैदिक संसार द्वारा सघन वेद प्रचार अभियान

देव यज्ञ के कुण्ड, पात्र, सामग्री, समिधा आदि साथ लेकर वेद प्रचार वाहन से दिनांक १० अप्रैल को मैं और मेरी पत्नी धर्मपत्नी तथा छोटी बहू व सुपौत्री कुमारी वैदिका के साथ इन्दौर से बड़वानी के लिए प्रस्थान किया। बड़वानी में व्यक्तिगत वार्ता में वैदिक सिद्धान्तों के उपदेश के साथ आगामी दिनों में दो दिवसीय आयोजन की रूपरेखा पर विचार- विमर्श किया।

दिनांक ११ को ब्रह्म मुहूर्त में जागरण पश्चात् नित्य कर्म से निवृत्त हो संध्योपासना, व्यायाम तथा देवयज्ञ सम्पन्न किया। परस्पर भेंटवार्ता तथा भोजन पश्चात् इन्दौर के लिए प्रस्थान किया । इन्दौर आकर संध्या उपासना, भोजन उपरान्त रात्रि लगभग १२:०० बजे चिचौली जिला बैतूल के लिए बस द्वारा प्रस्थान किया । दिनांक १२ को चिचौली पहुंचकर श्री सुरेश जी मालवीय को फोन लगाया उन्हें पहले बता दिया था कि शाम ६:०० बजे से प्रातः ८:०० बजे तक मौन रहता हूं अतः फोन लगाऊंगा तो समझ जाना कि चिचौली बस स्टैंड पहुंच गया हूं । फोन की घंटी बजने पर मालवीय जी समझ गए कि मैं पहुंच चुका हूं आप लेने आ गए । आपके निवास पर पहुंचकर नित्य कर्म से निवृत्त हो संध्योपासना, व्यायाम किया पश्चात् आपके सुपुत्र अमित कुमार मालवीय तथा पुत्रवधू डा.अनीता मालवीय- स्त्री रोग विशेषज्ञ व आप तथा आपकी धर्मपत्नी के यजमानत्व में देव यज्ञ किया प्रातः राश लेकर वैद्य श्री रमेश केशव देव जी आर्य के निवास पर पहुंचे उनसे आग्रह किया कि आर्यजनों से भेंट करवाओ और सदस्य बनवाओ । आपने सहर्ष स्वीकृति दी और भोजन पश्चात् चलना निश्चित हुआ । श्री सुरेश जी और वैद्य जी के सहयोग से दो त्रैवार्षिक तथा १३ सदस्य वार्षिक बने। वहां से बस द्वारा सारणी के लिए प्रस्थान किया। सारणी से इटारसी लौह पथ गामिनी द्वारा पहुंचा। इटारसी रेलवे स्टेशन पर इंजीनियर भगवान पटेल मोटरसाइकिल से लेने आ गए थे आपके साथ डोलरिया जिला होशंगाबाद गए। संध्योपासना पश्चात् भोजन कर विश्राम किया।

दिनांक १३ को नियमित दिनचर्या पश्चात् इंजीनियर भगवान पटेल के साथ देव यज्ञ किया। आप इंस्टिट्यूट फॉर कल्चर एण्ड चेंज स्कूल के डायरेक्टर हैं। आप अविवाहित उच्च शिक्षित युवा होने के उपरान्त भी धर्म-संस्कृति व राष्ट्र के प्रति आपकी अगाध निष्ठा है। आप अपने स्कूल में विविध सांस्कृतिक सामाजिक सरोकारों से युक्त गतिविधियां चलाते रहते हैं, आप अपने स्कूल में कन्याओं से मात्र आधा शुल्क लेते हैं। आपके द्वारा संचालित स्कूल हानि में चल रहा है किंतु उसकी तनिक परवाह नहीं करते हैं।

आपके साथ ऋषि दयानन्द भक्त श्री नरेन्द्रसिंह जी राजपूत के निवास पर पहुंचे। वहां भेंट-वार्ता उपरान्त भोजन ग्रहण करने पश्चात् श्री उमेश सिंह जी राजपूत ने मुझे होशंगाबाद रेलवे स्टेशन तक मोटरसाइकिल से पहुंचा दिया। वहां से भोपाल के लिए प्रस्थान किया। सायंकाल आर्य समाज पिपलानी के वार्षिकोत्सव में पहुंचा। आयोजन में अपनी व्यक्तिगत दिनचर्या ब्रह्म मुहूर्त में जागरण संध्योपासना व्यायाम, देवयज्ञ, संध्योपासना के परिपालन के साथ वैदिक विद्वानों के उपदेशों का अमृतपान किया। आयोजन समापन पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री प्रकाश जी आर्य के साथ रात्रि को इन्दौर लौट आए।

माह अप्रैल की पत्रिका के रंगीन पृष्ठ का कार्य समाप्त कर दिनांक १७ अप्रैल को मोहन बड़ोदिया, जिला- शाजापुर में आयोजित वैदिक सत्संग आयोजन हेतु वैदिक साहित्य तथा धर्म पत्नी को साथ लेकर वेद प्रचार वाहन से मोहन बड़ोदिया पहुंचा। २० को आयोजन समापन हुआ। साहित्य तथा सामान को इकट्ठा कर वेद प्रचार वाहन में रखते- रखते संध्योपासना का समय हो गया। अतः भोजन विश्राम स्थल सरस्वती शिशु मंदिर पर आकर संध्योपासना उपरान्त शयन किया। दिनांक २१ को नियमित दिनचर्या पश्चात् इन्दौर के लिए प्रस्थान किया। इन्दौर पहुंचकर देवयज्ञ किया। लगभग ४:०० बजे वैदिक साहित्य के साथ सायं ४ बजे परली बैजनाथ आयोजन को निमित्त बना महाराष्ट्र भ्रमण के लिए प्रस्थान को उद्यत था कि श्री ज्ञान कुमार जी आर्य लातूर का चलभाष पर सन्देश आ गया कि आयोजन का स्वरूप वृहद रूप में ना करते हुए लघु रूप में कर दिया गया है। आपका संदेश प्राप्त होने पर जाने पर विचार त्याग दिया।और वेद प्रचार वाहन को आर्यसमाज दयानन्द गंज में खड़ा कर दिया। सायंकाल पुनः विचार बदला की वैदिक साहित्य न ले जाते हुए महाराष्ट्र भ्रमण कर लिया जावे और परली बैजनाथ के आयोजन में उपस्थिति भी दे दी जावे।

दिनांक २२ अप्रैल को आर्य समाज दयानन्द गंज के साप्ताहिक सत्संग में उपस्थित हुआ। समापन पश्चात् वेद प्रचार वाहन को घर लाया तथा साहित्य को रिक्त किया और लगभग प्रातः १२:०० बजे के लगभग अपनी धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गा शर्मा को साथ ले महाराष्ट्र भ्रमण का मानस बना वेद प्रचार वाहन के द्वारा इन्दौर से प्रस्थान किया।

भानजी कुमारी स्तुति को अपने घर सेंधवा जाना था अतः वह भी साथ हो गई उसे उसके घर छोड़ा। फिर श्री विश्वेश्वर जी शर्मा के घर पर विश्वेश्वर जी और श्री प्रद्युम्न जी रतावजिया से सेंधवा में वैदिक धर्म प्रचार के लघु कार्यक्रम हेतु विचार विमर्श कर लगभग ५:३० पर भुसावल के लिए प्रस्थान किया। ९.३० रात्रि को श्री गोपाल जी जांगिड भुसावल के निवास पर पहुंचे। संध्या-उपासना उपरान्त भोजन -शयन किया।

दिनांक २३ को प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में जागकर नित्य कर्म से निवृत्त होकर ध्यान उपासना व्यायाम किया पश्चात श्री गोपाल जी जांगिड, आपकी पुत्रवधू तथा श्री मदनलाल जी जांगिड के साथ वृहद यज्ञ किया। देवयज्ञ और वैदिक सिद्धान्तों पर विस्तार से प्रकाश डाला और देव यज्ञ करने तथा वैदिक सिद्धान्तों को जीवन में आत्मसात करने की प्रेरणा दी।श्री मदनलाल जी जांगिड के यहां भोजन करने पश्चात् जलगांव के लिए प्रस्थान किया।जलगांव में श्री जगदीश जी शर्मा के निवास पर पहुंचे, उन्हें वैदिक संसार का आजीवन सदस्य बनाया। श्री जगदीश जी को साथ लेकर चार-पांच परिचितों से भेंट करने गए। श्री घनश्याम जी शर्मा तथा श्री राजेश जी शर्मा को आजीवन सदस्य बनाया। जलगांव से बुलढ़ाणा के लिए लगभग ५:०० बजे प्रस्थान किया। लगभग रात्रि ८:०० बजे बुलढ़ाणा श्री मदन लाल जी जांगिड के निवास पर पहुंचे संध्या उपासना पश्चात् भोजन किया। दिनांक २४ को ब्रह्म मुहूर्त में जागकर नित्य कर्म से निवृत्त हो संध्या उपासना, व्यायाम किया। पश्चात् श्री मदनलाल जी तथा आपके परिजनों के साथ वृहद देवयज्ञ कर देवयज्ञ तथा वैदिक सिद्धान्तों की महिमा पर प्रकाश डालते हुए मनुष्य जीवन में इसकी महत्ता की ओर ध्यान दिलाते हुए इस पर ध्यान देने की प्रेरणा दी। भोजन पश्चात लगभग १२:०० बजे माजलगांव, जिला-बीड़ के लिए प्रस्थान किया। लगभग ५:४५ को श्री सत्यप्रेम जी जांगिड़ माजलगांव जो मेरे साढू है के निवास पर पहुंचे। सामान्य

कुशल-क्षेम वार्ता पश्चात् ध्यान उपासना करने के बाद भोजन-शयन किया। दिनांक २५ को ब्रह्म मुहूर्त में जागकर नित्यकर्म से निवृत्त हो ध्यान, उपासना, व्यायाम उपरान्त श्री सत्यप्रेम जी के मुख्य यजमानत्व में वृहद देवयज्ञ किया।

भोजन पश्चात् ऋषि दयानन्द भक्त तथा वैदिक सिद्धान्तनिष्ठ श्री अनन्त जी रूद्रवार से उनके निवास पर भेंट करने गए, उन्हें वैदिक संसार का त्रैवार्षिक सदस्य बनाया। विश्वकर्मा मंदिर माजलगांव के अध्यक्ष श्री चान्दमल जी जांगिड़ से उनके निवास पर भेंट करने गए। अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली की वर्तमान राजनीति और दशा-दिशा पर वार्ताएं हुई, आपका ध्यान समाज के सर्वांगीण विकास हेतु एकमात्र पथ वैदिक सिद्धान्तों की ओर दिलवाया तथा महासभा के इतिहास से अवगत कराते हुए उन्हें बताया कि महासभा की स्थापना का मूल उद्देश्य शिल्पी वर्ग को वैदिक सिद्धान्त का सच्चा ब्राह्मण बनाना था आपसे वैदिक संसार का सदस्य बनने का आग्रह किया आपने बाद में राशि भेजने का आश्वासन दिया। पश्चात सब सत्य प्रेम जी के निवास पर लौटकर मेरी धर्मपत्नी मेरी साली तथा बालक हर्ष हम सभी ने मेरे साढू परभणी निवासी श्री दानाराम जी जांगिड के यहां के लिए प्रस्थान किया। लगभग ८:०० परभणी पहुंचे। संध्या उपासना पश्चात् भोजन-शयन किया।

दिनांक २६ को ब्रह्म मुहूर्त में जागकर नित्यकर्म से निवृत्त हो संध्या उपासना, व्यायाम किया। श्री दानाराम जी के मुख्य यजमानत्व में देवयज्ञ किया तथा देवयज्ञ, वैदिक सिद्धान्तों के विषयक प्रेरणा प्रदान कर उनसे आर्य समाज की गतिविधियों में भाग लेने का अनुरोध किया। पश्चात् जलपान लेकर ऋषि दयानन्द के सिपाही श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल से भेंट करने उनके निवास पर गया। वहां पर ऋषि भक्त डॉ. साहब से भी भेंट हुई तथा वार्ता हुई उन्हें श्री दानाराम जी को साथ जोड़ने का अनुरोध किया। वहां से लौटकर माजलगांव के लिए प्रस्थान किया। माजलगांव पहुंचकर पुनः रूद्रवार जी से भेंट करने गया। पश्चात् संध्या उपासना तथा भोजन-शयन किया।

दिनांक २७ को ब्रह्म मुहूर्त में निद्रा त्याग नित्य कर्म से निवृत्त होकर संध्या-उपासना व्यायाम किया। देव यज्ञ किया आज का यज्ञ और प्रेरणा का केंद्र विशेष रूप से परिवार के बालक हर्ष और कुमारी सोनू रहे। भोजन पश्चात् लगभग ३:०० बजे परली बैजनाथ के लिए प्रस्थान किया। सायंकाल का लगभग ६:०० बजे परली वैजनाथ के समीपस्थ गुरुकुल पहुंचे।ध्यान उपासना तथा भोजन-शयन किया। दिनांक २८ को ब्रह्म मुहूर्त में निद्रा त्याग नित्य कर्म से निवृत्त हो ध्यान-उपासना, व्यायाम देव यज्ञ किया पश्चात गुरुकुल में आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द जन्म शताब्दी समारोह में भाग लिया।भोजनोपरांत श्री नवरत्न जी जांगिड से भेंट करने आप के निवास पर गया। बरसों बाद मिले थे किन्तु संक्षिप्त वार्ता हुई उन्हें साथ लेकर उनके छोटे भाई श्री राजेंद्र जी जांगिड (पप्पू जी) तथा श्री लक्ष्मण जी जांगिड से भेंट की। आप लोगों को वैदिक संसार का आजीवन सदस्य बनाया। समयाभाव के कारण निश्चय किया कि माजलगांव लौटने से पूर्व नवरत्न जी के निवास पर पारिवारिक सत्संग करेंगे।श्री नवरत्न जी को साथ लेकर पुनः गुरुकुल में सायंकालीन सत्र में उपस्थित हुआ। वहां से निवृत होकर हम सभी लोग नवरत्न जी के निवास पर आ गए नवरत्न जी को परली बैजनाथ में रहते अनेक वर्ष हो गए और अनेक आर्य समाजियों से उनका घनिष्ठ सम्पर्क है किन्तु उनके गुरुकुल पहुंचने का यह प्रथम अवसर था। उनके सुपुत्र गजानन्द से भी वार्ता होने पर ज्ञात हुआ कि वह भी अपने मित्रों के साथ सेवा के उद्देश्य से प्रथम बार ही गुरुकुल गया था।

श्री नवरतन जी के यहां पर अनेक पारिवारिक सदस्य उपस्थित थे, उन्हें विस्तार से मनुष्य जीवन की महत्ता, उसका कार्य तथा मनुष्य जीवन में वैदिक धर्म की उपयोगिता तथा वर्तमान में धर्म के स्वरूप पर उपदेश दिया तथा उन्हें देवयज्ञ करने और प्रति सप्ताह आर्य समाज के सत्संग में जाने और गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने की प्रेरणा देने पश्चात् माजलगांव के लिए प्रस्थान किया। माजलगांव लौटकर ध्यान-उपासना पश्चात् भोजन-शयन किया। दिनांक २९ को ब्रह्म मुहूर्त में निद्रा को विदा कर नित्यकर्म उपरान्त ध्यान उपासना, देवयज्ञ किया और लगभग ८:०० बजे औरंगाबाद होते हुए इन्दौर के लिए प्रस्थान किया। औरंगाबाद में भी रमेशचन्द्र जी खरनालिया के निवास पर पहुंचे वहां भोजन आदि से निवृत हो प्रस्थान किया। धुलिया-सेन्धवा अल्प समय रुकते हुए लगभग रात्रि ११:३० बजे इन्दौर निवास पर पहुंचे। संध्या, भोजन-शयन किया।

दिनांक ३० को ब्रह्म मुहूर्त में जागरण नित्य कर्म कर ध्यान-उपासना, व्यायाम, देवयज्ञ पश्चात कचबैडी, जिला- हरदा निवासी वरिष्ठ समाजसेवी तथा घनिष्ठ मित्र श्री नारायण जी विश्वकर्मा के इन्दौर स्थित नवनिर्मित गृह प्रवेश एवं सुपुत्र जन्म उत्सव आयोजन में राजस्थान से पधारे श्री नन्दलाल जी जांगिड़ के साथ पहुंचे। वहां पर उपस्थितजनों से वैदिक धर्म विषयक वार्ता की। ईश्वर जीवात्मा और प्रकृति तथा प्रारम्भिक शिक्षा पुस्तकें तथा वैदिक संसार की प्रतियां दी। शाम को परिवारजनों और कुछ अतिथियों के साथ कॉलोनी के गार्डन की हरी-हरी ठंडी-ठंडी मुलायम घास पर गोल घेरा बनाकर ब्रह्मयज्ञ के मंत्रों का पाठ किया तथा उपस्थितों को परमात्मा को प्रत्येक क्षण स्मरण रखने और उसके प्रति कृतज्ञता भाव बनाए रखने का उपदेश किया।

दिनांक १ मई को नियमित दिनचर्या उपरांत वैदिक संसार प्रेषित करने सम्बन्धी कार्य किया। लगभग १२:०० बजे बेरछा निवासी पंडित आर्य मुनिजी भजनोपदेशक पूर्व निर्धारित योजना अनुसार पधार गए । उन्हें रेलवे स्टेशन से लिया तथा नियमित दिनचर्या संध्योपासना भोजन आदि से निवृत हो पारिवारिक एवं पत्रिका के कार्यों से निवृत्त हो रात्रि लगभग १०:०० बजे बड़वानी के लिए प्रस्थान किया। लगभग २ बजे बड़वानी पहुंचकर शयन किया।

नित्य कर्म से निवृत्त हो दिनांक २ को ब्रह्म मुहूर्त में निद्रा त्याग ईश्वर उपासना की पश्चात् पूर्व निर्धारित दो दिवसीय कार्यक्रमानुसार प्रातः ६ से ९ तक व्यायाम तथा देवयज्ञ प्रशिक्षण तथा भजन-उपदेश के माध्यम से उपस्थितों को प्रेरणा प्रदान की। सायंकाल कानड़ निवासी युवा भजनोपदेशक तथा आर्यवीर श्री संजय जी आर्य भी आ पहुंचे। सायंकाल ४ से ६ बजे तक भजन-उपदेश का आयोजन सम्पन्न हुआ।

श्री दिनेशचन्द्र जी शर्मा के यहां उनके सुपुत्र श्री अनिल शर्मा के आग्रह पर अतिथियों का भोजन सम्पन्न हुआ। दिनांक ३ को नियमित दिनचर्या उपरांत पूर्व अनुसार प्रातः ६ से ९ तक व्यायाम, देवयज्ञ प्रशिक्षण भजन,उपदेश एवं सायंकाल ४ से ६ तक भजन-उपदेश का सफलतापूर्वक प्रभावी रूप से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। दो दिवसीय उपरोक्त आयोजन श्री कैलाशचन्द्र जी शर्मा, मेरी भांजी श्रीमती निर्मला शर्मा के पतिदेव के निवास पर आयोजित किया गया। आपके सुपुत्र डॉक्टर दीपक शर्मा जो स्वाध्याय शील है जिनका झुकाव वैदिक धर्म सिद्धान्तों की ओर हो गया है के द्वारा आयोजन की व्यवस्था में निष्ठापूर्वक सहयोग किया गया। मेरे साले श्री जगदीश शर्मा, श्री दिनेश जी शर्मा, श्री कैलाश जी शर्मा के समस्त परिवारजन तथा मेरी साली श्रीमती बबीता शर्मा, श्रीमती नर्मदा शर्मा, श्री हीरालाल यादव एवं युवा वर्ग से प्रवीण वरडे, रामनिवास, राम

विनायक, रवीन्द्र सोलंकी, नितिन रावत, विष्णु धनगर, अरविन्द सुंगरा, दुर्गा, अभिषेक, श्रीवास आदि उपस्थित रहे। आयोजन के समापन उपरान्त संध्योपासना भोजन आदि से निवृत हो लगभग रात्रि ८ बजे खरगोन के लिए प्रस्थान किया। लगभग १०:३० बजे श्री मदनलाल जी जांगिड़ के निवास खरगोन पहुंचकर मन्त्रों का पाठ कर शयन किया।

दिनांक ४ को ब्रह्म मुहूर्त में जागकर नित्य कर्म से निवृत्त हो संध्या उपासना उपरान्त पूर्व निर्धारित योजना अनुसार खंडवा रोड स्थित बालकृष्ण किराना के स्वामी श्री राजेन्द्र जी महाजन के निवास जहां पर विशाल हालनुमा स्थान पर आयोजन आयोजित किया जाना था पर प्रातः ६ बजे मदनलाल जी के परिवार के साथ पहुंचे। व्यायाम प्रशिक्षण पश्चात् श्री मदनलाल जी जांगिड के मुख्य यजमानत्व में देव यज्ञ किया। पंडित आर्य मुनि जी तथा संजय जी आर्य के भजन हुए। उपदेश का दायित्व निर्वहन मेरे द्वारा किया गया। ९ बजे सत्र समापन पश्चात् भोजन आवास व्यवस्था श्री मदनलाल के निवास पर पहुंचे। सायंकाल ४:०० से ६ तक पुनः भजन उपदेश हुए। रात्रि को मदनलाल जी के निवास पर हिंग्लाज नगर के रहवासियों के मध्य ८:३० से १०:३० तक भजन उपदेश हुए। इसी प्रकार दो द्विवसीय आयोजन श्री मदनलाल के सुपुत्र श्री आनन्दीलाल जांगिड के सराहनीय सहयोग से संपन्न हुआ। पंडित आर्यमुनि जी की प्रेरणा से मदनलाल जी ने यज्ञ करने का व्रत धारण किया। सुखदेव शर्मा ने अपने दैनिक यज्ञ का कुण्ड, सुर्वा और १ किलो सामग्री को आदर्श सत्संग गुटका के साथ भेंट किया।

दिनांक ६ को प्रातः नियमित दिनचर्या उपरांत लगभग ७:०० बजे इन्दौर के लिए प्रस्थान किया। मार्ग के मध्य मानस बदला और पहुंच गए आर्य समाज धार के साप्ताहिक सत्संग में वहां पर यज्ञ पश्चात् समाज मंत्री महेश जी आर्य के आग्रह पर पंडित आर्य मुनि जी के साथ संजय जी आर्य के भजन के साथ संक्षिप्त उपदेश मेरा भी हुआ। आर्य समाज धार के कर्णधार ठाकुर लाखन सिंह जी आर्य ने आभार माना। आत्मीय स्नेह तथा दक्षिणा के साथ सम्मान किया।

आर्य समाज धार से प्रस्थान कर मेरे ज्येष्ठ सुपुत्र नीलेश शर्मा की ससुराल पहुंचे वहां मेरे समधी श्री राजेन्द्र जी शर्मा को स्वास्थ्य की समस्या होने से उनका कुशल क्षेम जाना। पश्चात् सुपुत्र के विवाह वर्षगांठ होने तथा बहू-बच्चों के पीहर में होने से वृद्ध देवयज्ञ समस्त परिवारजनों के साथ कर भजन उपदेश किया भोजन आदि से निवृत हो संजय जी आर्य धार में अपने किसी मित्र से भेंट करने रुक गए, हम लोग लौट आए। दिनांक ७ को आर्य मुनि जी बेरछा लौट गए।

इस प्रकार परमपिता परमात्मा की महती कृपा से लगभग २६०० किलोमीटर की यात्रा वेद प्रचार वाहन से तथा ७०० किलोमीटर की यात्रा बस, रेल, मोटरसाइकिल, कार आदि से निर्विघ्न रूप से वैदिक संसार पथिक की वेदपथ यात्रा ५०% से अधिक ऐसे स्थानों पर जहां आर्य समाज नहीं है अथवा उन लोगों तक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती का संदेश वेदों की ओर लौटो पहुंचाया। जिन तक आर्य समाज अथवा वेदों का अमृत नहीं पहुंच पाया संपूर्ण यात्रा एवं उपरोक्त वृतान्त लौकेषणा तथा वितैषणा से ऊपर उठकर मात्र और मात्र ऋषि ऋण से उऋण होने के लिए की गई तथा लिखा गया है। वृतान्त लिखने का उद्देश्य यही है कि इससे अन्यों को प्रेरणा प्राप्त हो और दानी महानुभावों को अवगत हो कि उनका धन तथा वेद प्रचार वाहन का सदुपयोग वैदिक धर्म प्रचार के कार्यों में ही हो रहा है अन्यत्र नहीं । ●

दूषित परम्पराएं

आग लगे उन नियमों को,
जिसने उपजाए दुःख।
रुढ़ रुढ़ि परम्पराओं ने,
छीन लिए सब सुख।।

परम्पराओं की आड़ में,
शोषण हुआ है खूब।
निकली बात इन्सानियत की,
तो गई सब को चुभ।।

जीवन में छाया अंधियारा,
दूषित परम्पराओं ने घेरा।
आशाओं के दामन पर,
घोर अन्धविश्वास का डेरा।।

एक नियम इन्सानियत का,
बाकी सब जंजाल।
नियमों पर सोचेंगे बाद में,
एक हो जाए फिलहाल।।

बटा-बटा है इन्सान,
लुटा-पीटा है इन्सान।
परम्पराओं की खातिर,
कटा-कटा है इन्सान।।

वसुधैव कुटुम्बकं

जांगिड कुलगौरव
प्रकाशचन्द्र पिड़वा
राजस्थान-पाली
चलभाष-९८२९०३२५२९

राम मन्दिर में वेदों का डंका बजाया आचार्य जी ने

अध्यात्म पथ के यशस्वी सम्पादक एवं अन्तरराष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विकासपुरी, नई दिल्ली के राम मन्दिर में रामनवमी के पावन पर्व के अवसर पर विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन प्रेरक और आदर्श था। वे वेदप्रेमी, यज्ञप्रेमी धर्म पुरुष थे। धर्म की समस्त विशेषताएं उनके चरित्र में थी। वे मर्यादाओं के पालक, रक्षक और संचालक थे। इन्हीं गुणों के कारण वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये। आचार्य श्री ने कहा कि राम की पितृभक्ति का अनुकरण आज प्रत्येक युवक के लिए परमावश्यक है। श्री राम कहते हैं-

' अहं हि वचनाद्राज्ञः पतेयं अपि पावके।
भक्षेयम् विषं तीक्ष्णं मज्जेयं अपि चार्णवे।।

अर्थात्- मैं पिता की आज्ञा से जलती आग में कूद सकता हूं, तीव्र विष का पान कर सकता हूं तथा समुद्र में छलांग लगा सकता हूं। राम सीता से कहते हैं- माता-पिता की सेवा करने वाले मनुष्य के लिए स्वर्ग, धन-धान्य, पुत्र और सुख कोई वस्तु दुर्लभ नहीं।

....

श्रृंगार नगर में १०१ कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न

नव संवत्सर के उपलक्ष्य में चैत्र शुक्ला प्रतिपदा, वैक्रमाबाद २०७५, रविवार १८ मार्च २०१८ को आर्य समाज श्रृंगार नगर, लखनऊ द्वारा

निकटवर्ती पार्क में १०१ कुण्डीय यज्ञ किया गया। आचार्य रूपचन्द्र 'दीपक' सामूहिक यज्ञ के संचालक और पं. गिरजेश कुमार सह-संचालक रहे। प्रत्येक वर्ष की भाँति दो आर्य महिलाओं और दो पुरुषों को सम्मानित किया गया। (१) स्वामी वीरेन्द्र परिवाज्रक (डालीगंज), (२) श्री अमृत प्रकाश (राय बरेली रोड), (३) श्रीमती उषा गुप्ता (सदर), (४) श्रीमती करुणा मोहनी (लालबाग), महात्मा प्रेम मुनि जी ने आर्य पुरुषों और महापौर श्रीमती संयुक्ता भाटिया ने आर्य महिलाओं को शाल ओढ़ाकर माल्यार्पण किया। तदन्तर जल-पान कराकर कार्यक्रम सम्पन्न किया गया।

....

संगीतमय वेद कथा का आयोजन सम्पन्न

आर्य समाज मोहन बड़ोदिया, जिला-शाजापुर (म.प्र.) के तत्वावधान में तथा वेद प्रचार समिति मोहन बड़ोदिया के संयोजन व श्री गोकुल जी आर्य के विशेष प्रयासों और श्री गोपाल जी सोनी के द्वारा अपने सुपुत्र के विवाह अवसर पर वैदिक सत्संग के दृढ़ निश्चयानुसार वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार से विहिन आगर-सारंगपुर मुख्य मार्ग पर स्थित तहसील मुख्यालय मोहन बड़ोदिया में दिनांक १६ से २० अप्रैल २०१८ तक चतुर्वेद पारायण यज्ञ पं. काशीराम जी अनल के ब्रह्मत्व में तथा वेद मन्त्र पाठ पतंजलि योग पीठ हरिद्वार के योगाचार्य मोहन आर्य तथा संजय आर्य द्वारा किया गया। संगीतमयी वेद कथा का पंच दिवसीय रसपान आर्य जगत् की प्रख्यात भजनोपदेशिका कु. अंजलि आर्या करनाल (हरियाणा) द्वारा करवाया गया। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक विनोद आर्य के द्वारा भी भजनों की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन श्री दरबारसिंह आर्य कानड़ द्वारा किया गया। वैदिक संसार द्वारा वैदिक साहित्य की विक्रयार्थ प्रदर्शनी लगाकर साहित्यिक सेवा की गई।

....

५६वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में स्थित भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लि. के क्षेत्र में वर्ष १९६२ में स्थापित आर्य समाज पिपलानी का ५६वां वार्षिकोत्सव दिनांक १३ से १५ अप्रैल तक उल्लास पूर्वक मनाया गया।

प्रात:काल एवं सायंकाल दोनों समय प्रतिदिन संस्था पुरोहित पं. विकासदेव जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ सम्पन्न किया गया। प्रथम दिवस को सायंकाल का सत्र राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, द्वितीय दिवस युवा सम्मेलन तथा समापन सत्र वेद सम्मेलन विषय पर केन्द्रित होकर तत्सम्बन्धि भजन-प्रवचन-व्याख्यान स्वामी ऋतस्पति जी परिव्राजक- आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद, आचार्य महावीर जी मुमुक्षु- मुरादाबाद (उ.प्र.), आचार्य योगेन्द्र जी याज्ञिक होशंगाबाद (म.प्र.), श्री वेदप्रकाश जी शर्मा- पूर्व पुलिस महानिरीक्षक-विदिशा, पं. भानुप्रकाश जी शास्त्री-बरेली (उ.प्र.), पं. कमलकिशोर जी शास्त्री श्री प्रकाश जी आर्य, महामन्त्री-मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल, श्री विनोद जी आर्य के हुए।

गरिमामयी उपस्थिति डॉ. पुष्पांजलि शर्मा, प्रभारी म.प्र. पतंजलि योग समिति, श्री दलवीर सिंह जी राघव पूर्व प्रधान म.भा.आ.प्र. सभा, श्री विजय जी अग्रवाल, धर्मेन्द्र जी कौशल जिला संयोजक भाजपा, इंजी. अनिसपालसिंह जी, आचार्य जीवन शास्त्री जी- गुरुकुल बैरसिया, श्री राधेश्याम जी बियाणी-महू, श्री पी.एस. यादव जी-मण्डीदीप, श्री प्रेमनारायण पाटीदार- देवास, श्री सुखदेव शर्मा, प्रकाशक वैदिक संसार इन्दौर, श्री चन्द्रहास जी शुक्ल प्रधान आर्य समाज महावीर नगर की रही।

इस अवसर पर एक माह की अवधि के पूर्ण आवासीय नि:शुल्क नशामुक्ति एवं पुनर्वास शिविरों के स्थान-स्थान पर सफल आयोजनों के माध्यम से नशामुक्ति अभियान के प्रणेता एवं कर्ता-धर्ता श्री वेदप्रकाश जी शर्मा, पूर्व आई.जी. महोदय द्वारा लिखित तथा मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा-भोपाल द्वारा प्रकाशित पुस्तक **'योग से नशामुक्ति'** के द्वितीय संस्करण का विमोचन किया गया।

मंच संचालन का गरिमामयी निर्वहन संस्था मन्त्री अतुल जी वर्मा द्वारा किया गया। समस्त उपस्थित श्रद्धालुओं के लिए प्रात:राश, भोजन एवं बाहर से आने वाले अतिथियों के आवास की सुन्दर व्यवस्था आर्य समाज की ओर से की गई। आर्य समाज महावीर नगर द्वारा वैदिक साहित्य की विक्रयार्थ प्रदर्शनी लगाई जाकर अर्द्धमूल्य पर वैदिक साहित्य विक्रय किया गया।

....

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जन्म शताब्दी समारोह सम्पन्न

दिनांक २८,२९ अप्रैल २०१८ को महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, गुरुजी के शिष्यों एवं आर्य समाज परली बैजनाथ के संयुक्त तत्वावधान में महाराष्ट्र में वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार को अपना जीवन समर्पित करने वाले, अखण्ड ब्रह्मचारी, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, हिन्दी सत्याग्रह के सिपाही, हैदराबाद आन्दोलन के सेनानी, परली-बैजनाथ से तीन किलोमीटर पर विशाल गुरुकुल की स्थापना एवं संचालन के माध्यम से सैकड़ों वैदिक धर्म के निष्ठावान सिपाही तैयार करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (पूज्य हरिशचन्द्र गुरुजी) जो 'गुरुजी' के नाम से प्रख्यात हैं कि १०० वर्ष आयु पूर्ण होने पर शताब्दी समारोह हर्षोल्लास पूर्वक गुरुकुल के सभागार में मनाया गया। समारोह के प्रारम्भ में गुरुकुल की विशाल यज्ञशाला में आचार्य प्रियदत्त जी दिल्ली के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ किया गया। मुख्य यजमान के रूप में वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा ने सपत्नीक तथा अन्य आर्यजनों ने अपनी आहुतियां प्रदान की। आचार्य नन्दकिशोर जी होशंगाबाद की गरिमामयी उपस्थिति रही। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक श्री प्रतापसिंह जी चव्हाण ने अपने सुमधुर भजन सुनाए। देवयज्ञ पश्चात् प्रथम सत्र **'जातिप्रथा निर्मूलन'** विषय पर ब्र. नन्दकिशोर जी आचार्य की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। आचार्य प्रियदत्तजी, आचार्य वीरेन्द्र जी, पं. प्रतापसिंह जी चौहाण, श्री विजयराव जी आर्य तथा सुखदेव शर्मा ने उपरोक्त विषय पर अपने विचार रखे। उग्रसेन जी राठौर मंचासीन थे। मंच संचालन श्री लक्ष्मण जी आर्य गुरुजी ने किया।

द्वितीय सत्र गुरुजी के **'शिष्यों का व्रत सम्मेलन'** के रूप में स्वामीजी महाराज की उपस्थिति में आयोजित किया गया। आचार्य प्रियदत्त जी, पं. सुधाकर शास्त्री-पूना, आर्य समाज परली के प्रधान जुगलकिशोर जी लोहिया, पूज्य विद्यामुनि जी, श्री गुणवन्त राव जी पाटिल, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री राजेन्द्र जी दिवे, पूर्व प्राध्यापक श्री ओमप्रकाश जी, श्री अर्जुनराव जी सोमोषी, पं. अविनाश जी शास्त्री, सहित अनेक शिष्यों ने अपने संस्मरण सुनाए तथा व्रत संकल्प व्यक्त किया। संचालक अरुण जी चव्हाण थे, आभार डॉ. नयन कुमार जी सम्पादक

वैदिक गर्जना ने प्रकट किया।

दिनांक २९ को वैदिक विचार प्रसार सम्मेलन एवं वैदिक ग्रन्थ एवं गौरव विशेषांक का विमोचन कर स्वामीजी का गौरव समारोह रूप में आयोजन का समापन हुआ।

....

श्रीमती संध्या लोखंडे का सम्मान

लातूर (महाराष्ट्र) आर्य जगत् तथा हिन्दी, मराठी भाषी के प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे और पत्नी सौ. संध्या लोखण्डे का महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित मुम्बई काकड़वाडी (गिरगांव) में दिनांक १८ मार्च २०१८ (युगादि पर्व) को सपत्नीक सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम में मेघालय के राज्यपाल गंगाप्रसाद आर्य जी उपस्थिति थे। १४४ वर्ष पूर्व १८७५ ई. में इसी दिन स्वामीजी ने गिरगांव काकड़वाड़ी में आर्य समाज की स्थापना की थी। स्वातंत्र्य पूर्व से ही समाज सुधारक एवं वैदिक विद्वानों को इस समाज ने सम्मानित किया है। इस आर्य समाज के भवन निर्माण में जनाब अल्लारखिया रहमतुल्ला सोनावाला जो एक हीरे जवाहरात के प्रसिद्ध व्यापारी थे, ५०००/- रु. का सात्विक दान देकर आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के प्रति कृतज्ञता प्रकट की थी। यह दान आज के मूल्य में लगभग १५ लाख रुपए होगा।

डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे जी ने महाराष्ट्र, कर्नाटक और आन्ध्र में लगभग ५०० ग्रामों में वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार किया है। लेखन के द्वारा समाज का प्रबोधन करते हुए उन्होंने अब तक २१ पुस्तकें लिखी हैं। इन्हीं कार्यों के दृष्टि रखते हुए उन्हें आर्य समाज मुम्बई द्वारा **''आर्य वैदिक विद्वान सम्मान''** प्रदान किया गया।

इस कार्यक्रम में मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के सुयोग्य प्रधान श्री मिठाईलाल सिंह अध्यक्ष के रूप में विद्यवान थे। डॉ. लोखण्डे जी के साथ आर्य प्र.नि. सभा के महामंत्री श्री अरुण अब्रोलजी तथा आचार्य बृहस्पति जी उड़ीसा का भी सम्मान किया गया। कार्यक्रम में आर्य समाज के प्रधान श्री देशबन्धु शर्मा, मन्त्री श्री विजय गौतमजी, संयोजक श्री देवदत्त शर्मा, पं. सोमदेव शास्त्री, श्री प्रभाकर गुप्त तथा श्रीमती डॉ. अनिता शास्त्री आदि विद्वान पदाधिकारी उपस्थित थे।

....

अग्निहोत्र महोत्सव के साथ शिविर सम्पन्न

वानप्रस्थ साधक आश्रम में २५ मार्च २०१८ से आरम्भ हुआ क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर १ अप्रैल २०१८ को अग्निहोत्र महोत्सव के साथ समाप्त हुआ। १२ घंटे चलने वाले अग्निहोत्र को २ वर्ष पूर्ण होने पर इस समापन समारोह के अवसर पर शिविर के प्रशिक्षकों के साथ आर्यवन के प्रधान श्री मनसुख भाई वेलाणी, आर्ष कन्या गुरुकुल की आचार्या शीतल जी, मुकेश जी आर्य, सत्यनारायण जुहिवाला जी, स्वामी ध्रुव देव जी, श्रीमती मंजु जी मुंजाल, माता जया बेन पोरिया तथा माता राज मल्होत्रा उपस्थित थे। **स्मृति शेष आचार्य ज्ञानेश्वर जी आर्य के प्रकल्पों को सभी ने स्मरण किया तथा उनके संकल्पों को पूर्ण करने के लिए अपनी ओर से पूरा प्रयास तथा सहयोग करने का वचन दिया।** आश्रम के प्रबंधक न्यासी आचार्य सत्यजित जी ने आगामी शिविरों, कक्षाओं तथा योजनाओं की जानकारी दी। पूज्य आचार्य ज्ञानेश्वरजी की भौतिक उपस्थिति के बिना इस प्रथम शिविर में पूर्व की भांति शिविरार्थियों ने अपने अनुभव सुनाते हुए आचार्य जी की प्रेरणा को स्मरण किया तथा उनके द्वारा स्थापित व्यवस्थाएं, प्राकृतिक वातावरण, सेवा भावना आदि की सराहना करते हुए दुर्गुणों को छोड़ने और सद्गुणों को अपनाने का संकल्प लिया। सभी शिविरार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक जी का उपदेश भी इस शिविर में लगभग चार मास के अंतराल के बाद सुनने का सभी को सौभाग्य प्राप्त हुआ।

....

वैदिक सत्संग व वार्षिकोत्सव सम्पन्न

ग्राम खाटसूर तहसील पोलायकलां, जिला-शाजापुर में दिनांक १४ से १८ अप्रैल २०१८ तक वैदिक सत्संग, प्रवचन एवं हवन का कार्यक्रम संगीतमय सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में सर्वश्री वेदों के विद्वान पं. श्री शिवपाल जी शास्त्री एटा उत्तरप्रदेश, श्रीमती सावित्रीदेवी आर्या भजनोपदेशिका दिल्ली तथा आर्यमुनि जी बेरछा (श्री हीरालाल जी पूर्वनाम) के भजनों उपदेश के गरिमामयी उपस्थिति में यह वैदिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में आर्य समाज खाटसूर, खामखेड़ा, करजू, हरनावदा, कुरावर तथा बेरछा से बड़ी संख्या में वेदप्रेमी श्रोतागण उपस्थित हुए तथा आर्य समाज खाटसूर के प्रधान श्री सीताराम जी आर्य, श्री धरमसिंह जी आर्य, श्री देवकीनन्द जी आर्य, श्री ओमप्रकाश जी आर्य एवं श्री परमानन्द जी आर्य तथा श्रद्धेय ब्रह्मानन्द जी की उपस्थिति में वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

....

स्वस्तियाग एवं वैदिक सत्संग सम्पन्न

राजौरी गार्डन नई दिल्ली में सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में स्वस्तियाग का आयोजन किया गया। इस यज्ञ के मुख्य यजमान धर्मनिष्ठ श्रीमती सुरेखा चोपड़ा जी एवं आर्य समाज नारायणा विहार, नई दिल्ली के प्रधान श्री दर्शनलाल कत्याल जी थे। इस अवसर पर आचार्य श्री ने श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि यज्ञ समस्त भुवनों की, समस्त सत्ता की, समस्त जगत् की नाभि है। यज्ञ की शक्तियां अनन्त हैं। यह दीर्घायुष्य शतायुष्य प्रदान करने वाला है।

....

११०० कुण्डीय यज्ञ में आचार्य जी सम्मानित

दुनिया के सबसे प्रदूषित शहर दिल्ली की वायु पर्यावरण शुद्धि एवं भारतीय नववर्ष के उपलक्ष्य में ५ हजार वर्षों के इतिहास में पहली बार जीव रक्षणि प्रीत फाउंडेशन एवं पतंजलि युवा भारत दिल्ली के तत्वावधान में रोहिणी दिल्ली में ११०० कुण्डीय विराट यज्ञ का आयोजन धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस शुभावसर पर अन्तरराष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को पीतवस्त्र एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस समारोह के मुख्यवक्ता दिल्ली सरकार के पूर्व मन्त्री डॉ. योगानन्द शास्त्री जी थे। आचार्यासूर्या देवी जी के ब्रह्मत्व एवं आर्य तपस्वी सुखदेव जी एवं अनेक गणमान्य विद्वानों, समाजसेवियों के पावन सानिध्य में यह ऐतिहासिक समारोह सोल्लास सम्पन्न हुआ। ●

वैदिक संसार को आप महानुभावों का आर्थिक सहयोग (दान)

गतांक से आगे- दिनांक २१ दिसंबर २०१७ से २१ मई २०१८ तक

मध्यप्रदेश में सर्वाधिक वैदिक संसार मन्दसौर जिले में प्रेषित किया जाता है, जिसका श्रेय बरखेड़ा पंथ के श्री बंशीलाल जी आर्य को तथा इनके सहयोगी के रूप में श्री नानालाल जी शर्मा देहरी (दलौदा) को जाता है। आप दोनों के द्वारा जो सदस्य बनाए गए उसमें नारायणगढ़ के सदस्य नगण्य थे, जबकि नारायणगढ़ आर्य समाज का गढ़ है। परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से इस कमी को पूरा करते हुए नारायणगढ़ निवासी आर्य श्री मोहनलाल जी दशोरा ने नारायणगढ़ के अनेक परिवारों में वैदिक संसार पहुंचाने का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। आप तीनों भाइयों के सराहनीय सहयोग से मन्दसौर जिला मध्यप्रदेश ही नहीं अपितु सम्पूर्ण देश में वैदिक संसार का सर्वाधिक स्वाध्याय करने वाले प्रथम जिले सहारनपुर जहां लगभग १४६ सदस्य हैं के समकक्ष लगभग १४० पाठक सदस्यों का दूसरा क्रम का जिला बन गया है। आप भाइयों जैसी जागृति अन्य आर्यों में भी आ जावे तो **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** की राह आसान हो जावे। प्रस्तुत है श्री मोहनलाल जी का संक्षिप्त जीवन परिचय-

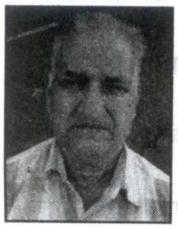

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि आर्य श्री मोहनलालजी दशोरा सुपुत्र स्व. श्री कचरूमलजी दशोरा का जन्म १५ दिसम्बर १९४० को नारायणगढ़ जिला-मन्दसौर में सामान्य कृषक परिवार में हुआ। आप आठ भाई-बहन हैं। आपने बी.ए. साहित्य रत्न से किया, पश्चात् आपने म.प्र. शासन के वित्त विभाग में १९६४ से २००० तक सेवाएं दी।आप तीनों भाइयों की गृहस्थी पृथक-पृथक सुव्यवस्थित होकर आप भाइयों में मृदु व्यवहार स्थापित होकर आप अलग रहते हुए भी साथ-साथ हैं। आपने १९६२ में गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया। आपके परिवार में आपकी धर्म पत्नी श्रीमती सजनबाई, दो सुपुत्र, दो सुपुत्री, दो पौत्र, दो पौत्री तथा ६ नाति-दोहिते होकर भरापूरा उच्च शिक्षित व्यसन रहित, सुसंस्कारित परिवार है। आपके परिवार में कृषि वैज्ञानिक, वरिष्ठ अधिवक्ता, बैंककर्मी, अध्यापक होकर एक आदर्श आर्य परिवार है। आपकी बहु श्रीमती विद्या दशोरा न.पा. मन्दसौर में पार्षद पद पर सेवा दे रही हैं। आप इसका श्रेय माता-पिता के संस्कार और आर्य समाज को देते हैं।

१९३३ में महर्षि दयानन्द सरस्वती की अर्द्ध शताब्दी अजमेर में मनाई गई थी वहां से आपके पिताजी सत्यार्थ प्रकाश लाए थे। जिसने आपके परिवार में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया। शासकीय सेवा में रहते हुए भी आपने भ्रष्टाचार से दूरी बनाए रखी। आप ईश्वर भक्त वैदिक सिद्धान्त निष्ठ, बुद्धिजीवी लेखक हैं, स्वाध्याय-लेखन, आपके जीवन के अभिन्न अंग है। आपने अनेक कविता, लेख आदि लिखे हैं। समय-समय पर आपकी रचनाएं वैदिक संसार तथा अन्य समाचार पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। अभी तक आपके द्वारा रचयित **'ईश्वर चालिसा', 'जीवन सुधा' तथा 'अनुभव के बिखरे मोती'** नामक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आपके परिवार में समय-समय पर वैदिक सोलह संस्कारों का सम्पादन होता रहता है। आपके परिवार के आध्यात्मिक चिकित्सक आर्य समाज पिपलिया मण्डी के स्तम्भ, सादगी, सौम्यता की प्रतिमूर्ति पं. सत्येन्द्र जी आर्य हैं। ७८ वर्ष की आयु में आपको अपने जीवन तथा परिवार में किसी घटना-दुर्घटना, गम्भीर रोग, वाद-विवाद का सामना नहीं करना पड़ा। यह सब आप पर प्रभु कृपा और अपने जीवन में शुभ कर्मों तथा सन्तान को दिए गए सुसंस्कारों का प्रतिफल है। वैदिक संसार परिवार भी आपके स्वस्थ दीर्घायुष्य जीवन के साथ आपके परिवार के उज्जवल भविष्य की कामना करता है। आपका सम्पर्क चलभाष- ९५७५७९८४१२ है। आपके द्वारा बनाए गए वार्षिक सदस्य निम्नानुसार हैं-

मध्यप्रदेश, जिला- मन्दसौरः श्री मथुरालाल मांगीलाल जी भगत-नारायणगढ़, श्री मोहनसिंह जी पंवार- पंवार सदन नारायणगढ़, श्री अशोक कुमार हुक्मीचन्द जी बोराना-नारायणगढ़, श्री रामचन्द्र देवीलाल जी पाटीदार, नारायणगढ़, श्री बाबूभाई जी बड़ोदिया-निकिता शूज स्टोर्स नारायणगढ़, श्री राजेन्द्र प्रसाद बसन्तीलाल जी टेलर- मल्हारगढ़, श्री शिवनारायण रतनलालजी कामरिया- मेलखेड़ा, श्री विनोद कन्हैयालाल जी इलोरिया-नारायणगढ़, डॉ. मुकेश जी पाटीदार- नारायणगढ़, श्री भगतराम रामगोपाल जी पाटीदार-नारायणगढ़, श्री भागीरथ प्रभुलाल जी इलोरिया-नारायणगढ़, श्री वीरेन्द्र तुलसीरामजी चौधरी- नारायणगढ़, श्री रमेशचन्द्र कन्हैयालाल जी पेन्टर-नारायणगढ़, श्री विनोद कुमार लक्ष्मीनारायण जी सोनी- नारायणगढ़, श्री शिवनारायण जी पाटीदार-नारायणगढ़, श्री ओमप्रकाश मोतीराम जी आर्य- नारायणगढ़, श्री पुरुषोत्तम रतनलाल जी रूपरा- नारायणगढ़, आर्य श्री मोहनलाल कचरूमल जी दशोरा-नारायणगढ़, श्री भगवतीलाल जी चौहान 'श्याम जी'-नारायणगढ़, श्री रामचन्द्र जी कुमावत-नारायणगढ़, श्री बालकृष्ण जी मूंदडा-नारायणगढ़, श्री जगदीश मोहनलाल जी काले-नारायणगढ़, श्री रमेशचन्द्र लक्ष्मीनारायण जी लक्षकार-नारायणगढ़, श्री ओमप्रकाश इन्द्रदेव जी आर्य-नारायणगढ़, श्री राजेश गोरधन लाल जी आर्य-नारायणगढ़, श्री कन्हैयालाल जी कापड़िया पूर्व अध्यक्ष न.पा.-नारायणगढ़, श्री हेमन्त भवानीशंकर जी कलवाड़िया-नारायणगढ़, श्री गोपाल मोहनलाल जी बोराना-नारायणगढ़, श्री मदनलाल राधाकृष्ण जी पाटीदार (मेल)-नारायणगढ़, श्री फतेसिंह स्वरूपसिंह जी चौहान-नारायणगढ़, श्री कमलेश अम्बालाल जी हियार- नारायणगढ़, डॉ. मदनलाल जी शर्मा-नारायणगढ़, श्री माणकलाल जी सोनी-नारायणगढ़, श्री रामचन्द्र भंवरलाल जी पथिक-नारायणगढ़, श्री जगदीश मोड़ीराम जी मेल-नारायणगढ़, श्री ओमप्रकाश रामनारायण जी चौधरी-नारायणगढ़, श्री राधेलाल मांगीलाल जी कापड़िया-नारायणगढ़, श्री बंशीलाल जी बोराना-नारायणगढ़, श्री राजेश शंकरलाल जी राठौर 'प्राचार्य'- नारायणगढ़, श्री विजय भार्णज-नारायणगढ़, श्री समरथमल रामचन्द्र जी राठौर- मल्हारगढ़।

जिला-नीमचः- श्रीमती विद्या हितेश जी कानूर-नीमच, श्रीमती आरती महेश जी राठौर-नीमच, श्री शैलेन्द्र गोपालकृष्ण जी बोहरा-जावद, श्री रामचन्द्र दौलतराम जी राजौरा-जीरन, डॉ. राजेश जी पाटीदार वेटेनरी सर्जन-मनासा, श्रीमती सरस्वथी राजोरा-नीमच, श्री लक्ष्मीनारायण-हीरालाल जी अजमेरा-धनेरिया कला,

राजस्थान, जिला- चित्तौड़गढ़ः श्री विजयदेव कन्हैयालाल जी बातरा- साबा।

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि सेवानिवृत्त शिक्षक श्री

हीरालालजी शर्मा सुपुत्र श्री चुन्नीलाल जी शर्मा मूलतः छोटी सादड़ी, जिला- प्रतापगढ़ के निवासी हैं तथा वर्तमान में अधिकांश समय उदयपुर में निवास करते हैं। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती मीरा शर्मा है, आपके दो सुपुत्र डॉ. मनोज शर्मा, प्रोफेसर एग्रीकल्चर कालेज कोटा, श्री प्रमोद शर्मा विश्वकर्मा मेडिकल स्टोर उदयपुर है तथा सुपुत्री श्रीमती अर्चना शर्मा जयपुर वर्तमान में अहमदाबाद निवासी हैं। आप वैदिक धर्म के समर्पित निष्ठावान सिपाही हैं। आपने वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार की दृष्टि से अपनी सेवा निवृत्ति अवसर पर डॉ. सोमदेव जी शास्त्री मुम्बई के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ का वृहद आयोजन आयोजित किया था। आपने गत दिनों अप्रैल २०१७ में क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर रोजड़ में आपनी धर्मपत्नी के साथ भाग लिया था। आपका शासन (गौत्र) आसलिया है।

आपका वैदिक संसार के प्रति आत्मिक स्नेह है आप अपने सामाजिक सम्बन्धियों-परिचितों के यहां जब भी किसी आयोजन में कहीं जाते हैं तो अपने सम्पर्क आने वालों को वैदिक संसार बुलवाने व उसके स्वाध्याय की प्रेरणा देते हैं तथा अनेक परिचित सदस्यों का अधिकारपूर्वक वैदिक संसार के सदस्य बनाकर सहयोग करते हैं। वैदिक संसार परिवार आपका हार्दिक व्यक्त करता है तथा आपके स्वस्थ दीर्घायुष्य जीवन की कामना करता है। आपका सम्पर्क क्रमांक- ९४१३०४५८३३ है। आपकी प्रेरणा से बने वार्षिक सदस्य निम्नानुसार हैं-

राजस्थान, जिला-अजमेरः श्री दशरथ कुमार देवीलाल शर्मा- किशनगढ़।

जिला-उदयपुरः श्री बोथलाल भैरूलाल जी शर्मा-भुवाणा, डॉ. प्रेमचन्द मांगीलाल जी गुप्त- हिरणमगरी- उदयपुर, (त्रैवार्षिक)।

जिला-प्रतापगढ़ः श्री राधेश्याम गौतमलाल जी आसलिया- छोटी सादड़ी, श्री अभिषेक महेश जी राजोतिया- छोटी सादड़ी (चतुवर्षिय), श्री दीपक कुमार पूरणमल जी शर्मा- शर्मा इलेक्ट्रिक्ल्स छोटी सादड़ी, (त्रैवार्षिक), श्री भूरालाल रामेश्वर जी जणवा-गोठडा, श्री भोपाराज अमृतलाल जी सुथार- छोटी सादड़ी (त्रैवार्षिक), श्री छगनलालजी शर्मा सेवानिवृत्त शिक्षक- रम्भावली (अम्बावली) (त्रैवार्षिक), श्री कन्हैयालाल जी कारपेन्टर सेवानिवृत्त अध्यापक-छोटी सादड़ी, श्री मोहनलाल जी सुथार- छोटी सादड़ी।

मध्यप्रदेश, जिला- नीमचः श्री जगदीश हरिराम जी सुतार- नीमच, (द्विवार्षिक), श्री विनोद हरिराम जी शर्मा- नीमच, श्री शंकरलाल राधाकिशन जी शर्मा-नीमच, श्री कैलाशचन्द्र बालमुकुन्द जी शर्मा-जूना बघाना, नीमच।

अन्य महानुभावों से प्राप्त विविध सहयोग

आजीवन

मध्यप्रदेश, जिला-भोपालः श्री रामकिशोर रामराव जी कासदे- भोपाल।

जिला-धारः श्री प्रधान/ मन्त्री जी आर्य समाज-धार।

पंजाब, जिला-लुधियानाः महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल-शास्त्री नगर लुधियाना।

महाराष्ट्र, जिला-जलगांवः श्री जगदीश किशनलालजी शर्मा-महाराष्ट्र, श्री घनश्याम मोहनलाल जी शर्मा- जलगांव, श्री राजेश दुर्गालालजी शर्मा- जलगांव।

जिला-बीड़ः श्री गजानन्द नवरतन जी जांगिड- परली बैजनाथ, श्री राजेन्द्र किशनलाल जी शर्मा- परली बैजनाथ, श्री लक्ष्मण भंवरलाल जी शर्मा- शमी कोल डिपो टोंकवाड़ी (परली बैजनाथ)।

त्रैवार्षिक

महाराष्ट्र, जिला-बीड़ः श्री अनन्त दामोदर जी रुद्रवार-माजलगांव।

उत्तर प्रदेश- जिला- इलाहाबादः श्री चन्द्रमोहन विष्णुप्रसाद जी शर्मा- इलाहाबाद।

हिमाचल प्रदेश , जिला-कांगडाः श्री सी.पी. महाजन जी सुपुत्र श्री मिल्खीराम जी महाजन-जसूर।

हरियाणा, जिला-सोनीपतः श्री सूबेदार करतारसिंह प्रभुराम जी आर्य-गोझाना।

पश्चिम बंगाल, जिला- कोलकाताः श्री प्रभात रंजन जी शर्मा, सुपुत्र डॉ. जे.आर. शर्मा जी- सेकण्ड इन कमाण्ड आफीसर बी.एस.एफ.- कोलकाता।

उत्तराखण्ड, जिला- नैनीतालः श्री सुनीत कुमार उपासना केन्द्र- डहरा।

गुजरात, जिला- जामनगरः श्री प्रधान/मन्त्रीजी आर्य समाज- जामनगर।

राजस्थान, जिला-सिरोहीः श्री ताराचन्द हजारीराम जी डेरोलिया- आबू रोड, श्री मोहनलाल रूपाराम जी शर्मा- आबू रोड़।

जिला-अजमेरः श्री देवमुनि जी-अजमेर।

जिला- राजसमन्दः श्री भैरूसिंह जी चौहान- बगड़।

मध्यप्रदेश, जिला-इन्दौरः श्री अजय राधेश्याम जी गोयल-कोदरिया (महू), श्री आदित्य विष्णु प्रकाश जी आमेरिया-इन्दौर ०७।

जिला-शाजापुरः श्री जितेन्द्र रमणलालजी सोनी- मोहनबड़ोदिया।

जिला-रायसेनः श्री नरेन्द्र देवीरामजी मैथिल-मण्डीदीप।

जिला-बैतूलः श्री दलपतसिंह मोहनसिंह जी जगेत- चिचौली, श्री रितेश राकेश जी मालवीय-चिचौली।

वार्षिक

मध्यप्रदेश, जिला-धारः श्रीमती विद्यारानी राठौड़-धार।

जिला- शाजापुरः महर्षि दयानन्द हाई स्कूल (गुरुकुल)- चोमा (कानड़), श्री राधेश्याम रामगोपाल जी आर्य-करजू, श्री पवन मोहनलाल जी चौधरी-मोहन बड़ोदिया, सुश्री हेमलता शिवदयाल जी सोनी-मोहन बड़ोदिया।

जिला-आगरः महर्षि दयानन्द ज्ञान मन्दिर-कानड़।

जिला-रायसेनः श्री ओमप्रकाश जी मलिक- सुल्तानपुर।

जिला-इन्दौरः श्री सुमित सुरेन्द्र जी दुबे- रेसकोर्स रोड, इन्दौर-०१, श्री अशोक मेवारामजी वर्मा- द्वारकापुरी इन्दौर-०७, श्री रामप्रसाद रामसिंह जी आर्य- गरौंडा (कलारिया), श्री देवनारायण सिद्धनाथ जी सोनी- इन्दौर-१६, श्री हरिशंकर रामपदारथ जी मौर्य-कोदरिया।

शेष आगामी अंक में...

आर्य जगत् की सम्पन्न विविध गतिविधियों की चित्रावली...

आर्य गुरूकुल परली बैजनाथ के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी का शताब्दी समारोह मनाया गया।

देवयज्ञ के ब्रह्मा श्री प्रशान्त जी शास्त्री रहे

जाति प्रथा उन्मूलन विषय पर आयोजित सत्र में मन्चस्थ विद्वान

स्वामी जी के शिष्यों का सम्मेलन तथा वृत संकल्प

शताब्दी समारोह में उपस्थितजन उपदेश श्रवण करते हुए

आर्य समाज काकड़वाड़ी (मुम्बई) द्वारा संध्या लोखण्डे (लातूर) का सम्मान

लखनऊ के श्रृंगार नगर में

१०१ कुण्डीय यज्ञ

डॉ. रूपचन्द दीपक के संचालन में आर्य समाज श्रृंगार नगर लखनऊ द्वारा १०१ कुण्डीय यज्ञ का वृहद आयोजन भव्यतापूर्ण सम्पन्न हुआ।

संगीतमयी भगवत वेद कथा का आयोजन मोहन बडोदिया, जिला–शाजापुर (म.प्र.) में सम्पन्न

वैदिक संसार के संरक्षक सदस्य बनकर आर्थिक सहयोग कर पूण्यार्जन कीजिए

वैदिक संसार के निर्बाध गति से प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग करने निमित्त एकमुश्त २५ हजार रुपए प्रदान करें अथवा प्रतिवर्ष ५१०० रुपए नकद देने या अन्यों को सदस्य बनाकर प्रतिवर्ष ५१०० रुपए के सहयोग का व्रत (संकल्प) धारण कर वैदिक संसार के संरक्षक सदस्य बनकर पुण्यार्जन कीजिए। - **सम्पादक**

वैदिक संसार के सम्माननीय संरक्षक महानुभाव

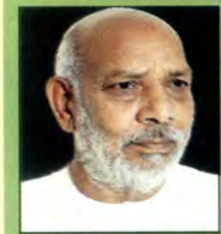

ठा. विक्रमसिंह जी आर्य
अध्यक्ष
राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली

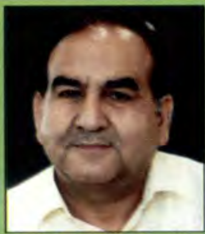

श्री नेमीचन्द जी शर्मा
भामाशाह-राज सरकार
गान्धीधाम (गुजरात)

श्री पूनाराम जी बरनेला
पंच.विश्वकर्मा चेरिटेबल ट्रस्ट
जोधपुर (राजस्थान)

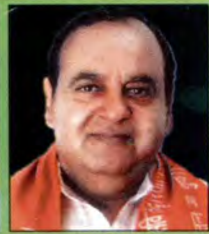

श्री रामफलसिंह जी आर्य
प्रा. वरिष्ठ उपप्रधान
सुन्दर नगर (हिमाचल प्रदेश)

अधि.रतनलाल जी राजौरा
उपमन्त्री-आर्य समाज
निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

आ. आनन्द जी पुरुषार्थी
अ. वैदिक प्रवक्ता
होशंगाबाद (म.प्र.)

श्री वेदप्रकाश जी आर्य
आई.ओ.सी.एल.
सवाई माधोपुर (राज.)

श्री लेखराज जी शर्मा
टी.पी.टी. कॉन्ट्रेक्टर
भरतपुर (राज.)

श्री सुनील जी शर्मा
जा.ब्रा. प्रदेशाध्यक्ष
पौण्डा (गोवा)

श्री नानूराम जी जांगिड
जा.ब्रा. जिलाध्यक्ष
धूलिया (महाराष्ट्र)

श्रीमती सुमित्रा जी शर्मा
योग प्रशिक्षिका
अहमदाबाद (गुजरात)

सुश्री अंजलि आर्या
वैदिक भजनोपदेशिका
घरौंडा, (हरियाणा)

श्री सांवरमल जी शर्मा
वास्को डी गामा, गोवा

श्री आदित्यप्रकाश जी गुप्त
खेड़ा अफगान (उ.प्र.)

आचार्य सर्वेश जी
गुरुकुल केहलारी, म.प्र.

श्री रमेशचन्द्र जी दीक्षित
गाधी, बागपत, उ.प्र.

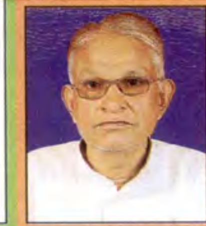

श्री मनीरामजी चौहान
बाड़ी, जिला-रायसेन म.प्र.

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि, आपका जीवन परिचय तथा बनाये गए सदस्यों का विवरण पढ़े आगामी अंक में...

डॉ. अशोक जी आर्य
सहारंनपुर (उ.प्र.)

प्रेरणास्पद गरिमामयी वैदिक विवाह संस्कार सम्पन्न

हिन्दू महासभा के जुझारू कार्यकर्ता, मध्यभारत में जनसंघ के संस्थापक सदस्य, मध्य भारतीय क्षेत्र में ऋषि दयानन्द के वैदिक अभियान के पुरोधा, श्रद्धानन्द बाल अनाथालय इन्दौर के संस्थापक तथा निरन्तर ४० वर्ष तक अध्यक्ष के पद पर सेवा देकर निराश्रितों के आश्रयदाता तथा इन्दौर शहर में आर्य समाज, राजनीति तथा न्यायालयीन क्षेत्र में विशिष्ट ख्याति प्राप्त स्व. किशोरीलाल जी गोयल के सुपौत्र तथा वर्तमान में श्रद्धानन्द बाल आश्रम इन्दौर एवं नगर आर्य समाज इन्दौर के अध्यक्ष श्री विजय कुमार जी गोयल के सुपुत्र चि. मुकुल का विवाह संस्कार सौ. का. संजना सुपुत्री श्री संजय जी बंसल निवासी इन्दौर के संग पूर्ण वैदिक विधान से मूर्धन्य वैदिक विद्वान, दर्शन शास्त्रों के मर्मज्ञ आचार्य प्रभामित्र जी के पौरोहित्य में दिनांक ८ मई २०१८ को सम्पन्न हुआ। उल्लेखनीय है कि दोनों परिवार वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत हैं। वधु संजना की माताजी भरतपुर (राज.) के प्रतिष्ठित श्री सत्येन्द्र जी आर्य की सुपुत्री हैं।निर्वाणा रिसोर्ट् , एम.आर.-१० इन्दौर पर सम्पन्न विवाह संस्कार तथा आशीर्वाद समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री प्रकाश जी आर्य एवं आर्य जगत् की तथा शहर की गणमान्य अनेक विभूतियों ने उपस्थित होकर वर-वधु को शुभ आशीष प्रदान किया। **वैदिक संसार परिवार** नवदम्पत्ति के सुख-शान्तिमय उज्जवल भविष्य की कामनाएँ व्यक्त करता है।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा 'जांगिड'-इन्दौर, इन्दौर ग्राफिक्स-२४ कुंवर मण्डली खजुरी बाजार से मुद्रित,१२/३, संविद नगर-इन्दौर-४५२०१८ से प्रकाशित
संपादक - गजेश शास्त्री, एम.पी.एच.आई.एन.- २०१२/४५०६६,डाक पंजीयन-एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७